बीबी ने इन्तकाल किया, अब मैं तनहा हूं एक लड़की है वह गर्लस हाई स्कूल में तालीम पा रही है।

मिसेज़ स्टील — फिर क्या है — खूब गुज़रेगी जो मिल बैठेंगें दिवाने दो — मेरा शौहर भी फौज में कप्तान था, बर्म्हा की लड़ाई में मारा गया, मैं भी बेवा हूं, मिस्टर ऐटकिन्स ! आप को शराब से शौक है ?।

मिस्टर ऐटकिन्स — मुझे इनकार नहीं।

उस वक्त ह्विसकी मँगाई गई, एक पेग तो बाहर वालिद बुजुर्गवार के लिये भेजा गया बाकी दोनों ने नोश-जां फर्माई।

मिसेज़ स्टील — डियर ऐटकिन्स ! मैं तुम्हें देख कर अज़हद खुश हुई।

मिस्टर ऐटकिन्स — अलाहाज़ा, मुझे भी बेहद खुशी है कि ऐसी दिल-फरेब लेडी मुझे आका मिली।

मिसेज़ स्टील — प्यारे ! मुझे आका न कहो, बखुदा मुझे रंज होता है। यह सा मिल मैंने खुद नहीं खरीदी एक बेवकूफ़ हिन्दुस्तानी नवाबज़ादा है उसको खब्त हुआ है उसीने मुझे भेजा है।

मिस्टर ऐटकिन्स — आप उसकी नौकर हैं ?।

मिसेज़ स्टील — "नहीं मैं उसकी दोस्त हूं, वैसीही जैसा काले बेवकूफ़ हिन्दुस्तानियों से दोस्ती की जाती है, हा हा हा हा हा"। मिसेज़ स्टील, को खौफ था कि ऐटकिन्स आगरे में जाकर अमीरहसन से असली कीमत न बतला दे इस वजह से वोह बार २ चाहती थी कि ऐटकिन्स बेतकल्लुफ हो जाये और किसी तरह वोह भी राज़ में शरीक हो जाय।

मिसेज़ स्टील ने खुद भी शराब पी थी मगर इतनी नहीं कि बेहोश हो जाती मगर ऐटकिन्स ने किसी कदर ज्यादा पी ली थी, इस वजह से वोह अच्छीतरह मज़े में था। गो बेहोश या अज़खुद रफता वोह भी न था। मिसेज़ स्टील ने बातों २ में ऐटकिन्स को गोद में अपने को देदिया, ऐटकिन्स ने अच्छी तरह गले लगाया और मुँह चूमा।

मिसेज़ स्टील — 'प्यारे ऐटकिन्स ! थोड़ीही देरमें तुमने मुझपर क्या जादू करदिया ! मैं हज़ार जान से आशिक होगई' यह कहकर मिसेज़ स्टील ने भी अपने यूरेशियन् दोस्त का बोसा लिया।

ऐटकिन्स — ऐ प्यारी तुमने चन्दही

मिन्ट में मेरे साथ क्या सहर कर दिया, मैं तुम्हारी मोहब्बत से दीवाना हो रहा हूं।

मिसेज़ स्टील — प्यारे अब हम तुम एक हैं, गो इस वक़्त नहीं मगर बहुत जल्द वह वक़्त आयेगा कि मैं मिसेज़ ऐटकिन्स कहलाऊंगी। हाय कितना प्यारा नाम है, ऐटकिन्स : मगर एक मेरी दर्खास्त है आगरे में खबरदार उस काले हिन्दुस्तानी से मिल कर असली कीमत न बतलाना बल्कि अगर तुमसे दर्याफ्त किया जाये तो सैंतीस हज़ार कीमत बतला देना।

ऐटकिन्स — सैंतीस हज़ार बहुत ज़्यादा है कोई यकीन न करेगा। आरे की कलें अब आम तौर पर हर जगह फरोख्त होती हैं आगरे में सदहा आदमी कीमत से आगाह होंगे।

मिसेज़ स्टील—मुझे तमाम दुनिया के मुहासबे से मतलब नहीं, मिस्टर अमीरहसन को न मालूम होना चाहिये और मैं उनसे जो कह दूंगी उन्हें यकीन आ जायेगा, इसलिये मेरे प्यारे ऐटकिन्स मेरा यह राज़ अफ़सां न करना, देखो इसमें तुम्हाराही फायदा है, मेरे पास अगर दस पांच हज़ार रहेंगे वोह तुम्हारेही काम आवेंगे, इसके इलावा अगर तुम मेरे खिलाफ कहोगे भी तो वोह हर्गिज़ यकीन न करेंगे।

ऐटकिन्स — मैं हर्गिज़ न कहूंगा मुझे क्या मतलब।

मिसेज़ स्टील—मैंने एक बूढ़े जेंटिलमैन को दो सौ रुपये पर तुम्हारे मिलने से पेश्तर मनेजर मुकर्रर कर लिया है तुमको कुछ नागावार तो न होगा ?।

ऐटकिन्स — बेशक मुझे किसी की मातहती करना सख्त नागवार होगा और खास कर उस हालत में जब बूढ़े मियां कुछ काम भी नहीं जान्ते। बेहतर है कि उन्हें मेरा असिस्टेण्ट मुकर्रर कर दो मैं काम भी सिखा लूंगा।

मिसेज़ स्टील — बहुत मुनासिब आप को मैं दो सौ रुपये दिलवाऊंगी और मिस्टर बर्सफोर्ड को डेढ़ सौ। अब आप खुश हुये !।

ऐटकिन्स—बहुत२ शुक्रिया ऐ मेरी प्यारी डार्लिंग।

मिसेज़ स्टील—एक इल्तिजा और है हमारी तुम्हारी मोहब्बत का अभी इज़हार आगरे में न हो वर्ना अमीर हसन कहेगा कि मैंने अपने आशिक के नौकर रखने को यह बखेड़ा फैलाया

चन्द महीने के बाद जब हम तुम एक हो जायेंगी, उस वक़्त सब मुँह देख कर रह जावेंगी।

ऐटकिंस — मैं तुम्हारी सब बातें बदिलो जान क़ुबूल करता हूं।

नाज़रीन् चन्द मिनिट के लिये मिसेज़ होल और उनके नये आशिक को तनहा छोड़ दीजिये, चलिये ज़रा हिदायतरसूल से मुलाकात कर देखें वह क्या कर रहे हैं और कहां हैं।

हिदायतरसूल मिसेज़ होल से पांच सौ रुपै लेकर रुखसत हुआ, सब से पहले शहर में इधर उधर घूमता फिरता बाज़ार में एक मामूली तवायफ मुसम्मात कुन्दन से मिला और एकही रोज़ में वह गहरी रस्म पैदा कर ली कि कुंदन हिदायतरसूल पर दिल व जान से शैदा हो गई।

हिदायतरसूल - जान कुन्दा! चलो कलकत्ते में तुम्हारे साथ निकाह कर लूंगा, मैं लखनउ का शाहज़ादा हूं, पांच हज़ार रुपया वसीका है अल्ला का दिया सब कुछ है सिर्फ एक प्यारी परीज़ाद छैल छबीली की कमी थी वह खुदा ने आज देदी।

कुन्दन— नवाबसाहब! हम गरीब आदमी किस लायक हैं मगर लौंडी को उज्र न होगा।

हिदायतरसूल — प्यारी तुम्हारे लिये उमदा२ ज़ेवरात खरीदूंगा खुदा की कसम तुम को सोने चांदी से लाद दूंगा।

हिदायतरसूल ने कुन्दन को खूब शराब पिलाई और खुद भी पी, हर तरह उस को सब्ज़बाग़ दिखा कर अपना दिलदादह बना लिया और उस बेवकूफ को पूरा यकीन हो गया कि कलकत्ते पहुँचते ही हिदायतरसूल उस से शादी कर लेगा।

हिदायतरसूल कुन्दन को पटने में छोड़ कर खुद कलकत्ते में आया एक आलीशान सजा सजाया मकान दो सौ रुपये किराये पर ठहराया, भिश्ती मेहतर दर्बान ग़र्ज़ जुमला लिवाज़मात अमीरी दम की दम में मुहैया कर लिया।

एक शख्स—क्यों मियां साहब कौन आने वाला है? जिसके लिये यह सब सामान हो रहे हैं।

हिदायतरसूल— नवाब कुदसिया बेगम साहबा, शाह अवध की भांजी।

तमाम महल्ले में बल्कि तमाम

शहर में यह खबर मशहूर थी कि कुद्सिया बेगमसाहबा लखनऊ से तशरीफ लानेवाली हैं, एक बजे शब को जो रेल हवड़ा स्टेशन पर पहुँचती है उस वक्त बेगम साहबा की आमद थी।

हिदायतरसूल औव्वल दर्जे की गाड़ी में बीबी कुन्दन को सवार करा के कलकत्ते लाया। रेल से उतर कर पालकी में सवार हुईं और उस मकान में दाखिल हुईं जो बेगमसाहबा के लिये लियागया था। सुबह को हिदायतरसूल ने दस रुपये के पैसे खैरात किये जिससे और भी फकीरों और मुफलिसों का मजमा दर्वाजे पर हो गया, महल्ले के चौकीदार और पुलिस के हेड कान्स्टिबिल को भी बेगम साहबा की तरफ से पचीस रुपये इस वास्ते भेज दिये गये कि दो कान्स्टिबिल हर वक्त मौजूद रहें जिस्में ज्यादा भीड़ भाड़ न होने पाये और जब सवारी निकले उस वक्त भी साथ रहें। हिदायतरसूल ने अपने को दारोगा ज़ाहिर किया, दस बजे दिन को निहायत नफीस किराये की पालकी में सवार हो कर बेगमसाहबा जवाहरात खरीदने निकलीं, वर्दियां पहने हुये बहुत से मुलाज़िम हमराह थे दो कान्स्टिबिल भी अर्दली में थे और बराबर दुअन्नियां चवन्नियां और पैसे लुट रहे थे।

सब से पहिले सवारी पिस्तनजी ऐण्ड को० की दूकान पर पहुँची, यह दूकान कलकत्ते में जवाहिरात की तिजारत के लिये निहायत नामवर और मशहूर थी, हक यह है कि हैमिलटेन या कूक ऐण्ड केलवी के बाद इसी का नम्बर था। पिस्तन् जी पारसी दूकान का मनेजर धूमधाम की सवारी देखकर अज़हद मसरूर हुआ।

हिदायतरसूल — क्या आप इस दूकान के मनेजर हैं ? ।

पिस्तन जी — यस सर।

हिदायतरसूल — हुज़ूर बेगमसाहबा ज़वाहिरात मुलाहिज़ा फर्माना चाहती हैं आप के यहां आले किस्म की हीरे की अँगूठियां और दीगर किस्म के जेवरात जड़ाऊ मौजूद हैं ? ।

पिस्तन् जी— हज़ारहा किस्म के।

बरामदे में पालकी धरी गई और पिस्तन जी ने जेवरात ला ला कर दिखाना शुरू किया, बहुतसी चीज़ें नापसन्द हुईं सिर्फ चार अँगूठियां जिनकी कीमत पांच २ हज़ार रुपया थी और

दो जोड़ चूड़ियां जिनपर हीरे जड़ेहुए थे और जिनकी कीमत मजमूए चालीस हज़ार थी पसन्द हुईं, इतने में बेगम साहबा ने अन्दर से पानी माँगा।

हिदायतरसूल – मैनेजरसाहब, मेहर्बानी फ़र्मा कर थोड़ा पानी मँगवाइये, हुजूर बेगम साहबा दाम इकबालहा प्यासी हैं।

पिस्तनजी — सोडा, लेमोनेड या जिनजर जिस किस्म का इर्शाद हो पानी मौजूद है।

बेगम साहबा — (पर्दे से) सिर्फ सादा पानी चाहिये।

पिस्तन जी ने गिलास में पानी मँगवा कर पेश किया।

बेगमसाहबा — यह पानी बिलकुल खराब है, सख्त बदबू आती है दारोगासाहब बुझा हुआ पानी जो कोठी में है जाकर लेआइये, कोठी यहां से बहुत दूर तो नहीं।

हिदायतरसूल — हुजूर दूर तो है मगर मैं किराये की गाड़ी कर लूंगा, और अभी पानी ले आऊंगा, सुराही अगर पालकी में हो तो इनायत फर्मायें।

बेगमसाहबा ने अन्दर से एक सुराही दी जिसको ले कर हिदायतरसूल पानी लेने रवाना हुये।

हिदायतरसूल — (मनेजर से) मनेजर साहब आप भी खड़े रहिये शायद बेगमसाहबा को किसी और चीज़ की ज़रूरत हो, मैं अभी हाज़िर होता हूं।

मनेजर — आप शौक से तशरीफ़ ले जायें हम सब बेगमसाहबा की खिदमत को तैयार हैं।

हिदायतरसूल एक किरायेकी गाड़ी में सवार होकर पहिले थोड़ी दूर आये।

हिदायतरसूल — कोचवान, ज़रा गाड़ी रोकना, मुझे एक ज़रूरी बात याद आई, यह खत लो और अलीपुर में जा कर नवाब मुस्तफा खां साहब को दो वहां जिस से दर्याफ्त करोगे मालूम होजायगा, जवाब लेकर मटिया बुर्ज में आना। हम अभी वहीं जायँगे यह बीस रुपये तुम्हारी मजदूरी के हैं।

गाड़ीवाला—बहुत खूब हुजूर।

गाड़ीवाला तो उधर रवाना हुआ और इधर हमारे दोस्त ने दूसरी गाड़ी की। स्टेशनपर दाखिल हुये, फौरन् मेल ट्रेन का टिकट लिया, और रेलमें सवार होकर चल दिये; छ बजते२ रेल पटने

पहुँची। स्टेशन पर हस्व वादा मिसेज़ स्टील मौजूद थीं वहांसे दोनों हज़रात रवाना आगरे हुये।

मिसेज़ स्टील — कहो क्या कर लाये ?।

हिदायतरसूल—बल्ला ! तुमसे अच्छा रहा, अगर खुदा बेड़ा पार करदे। मुझे डर है कि कहीं मेरी गिरफ्तारी का तार न आता हो, बारे पटना गुज़र गया अब कुछ खौफ नहीं, स्टेशन पर भी पटने में मुझे किसी ने नहीं देखा क्योंकि मैं कस्दन् गाड़ी में अपने को छिपाये रहा।

मिसेज़ स्टील — दिखाओ तो क्या उड़ा लाये मैं भी तो देखूं !

हिदायतरसूल — साठ हज़ार रुपये ! मगर उसमें सिर्फ एक जोड़ चूड़ियां तुम्हें दूंगा अंगूठियां न दूंगा।

हिदायतरसूल ने सुराही खोली और उसमें से सब चीज़ें निकालकर मिसेज़ स्टील को दिखाईं।

मेमसाहब ने दोनों जोड़ चूड़ियां और चारो अगूठियां देखीं बजहद पसन्द कीं और बहुत तारीफ की।

मिसेज़ स्टील — हिदायतरसूल ! यह तुम्हारे किस काम की हैं मुझसे दो चार हजार रुपये ले लो और ये अंगूठियां और चूड़ियां मुझे दे दो।

हिदायतरसूल— नौ नकद न तेरह उधार' अच्छा पांच हज़ार लाओ। इस हाथ देओ उस हाथ लेओ।

मिसेज़ स्टील ने अपना फौलादी बक्स खोल कर पांच नोट हज़ार २ रुपये के हिदायतरसूल को दिये और चूड़ियां और अंगूठियां अपने कब्ज़े में कीं।

बाब चौदहवां

कुदसिया बेगम

घण्टा गुजरा, दो घण्टे गुजरे, बेगम साहबा सख्त प्यासी हैं, पानी मांग रही हैं खफा हो रही हैं, और दारोगासाहब नदारत; ग्यारह बजे, बारह बजे, एक बजे, दो बजे, और दारोगा साहब कहीं नहीं दिखाई देते।

मनेजर — (कान्हिबिलों से) क्यों भाई सिपाहियो ! दारोगा साहब कहां चले गये, बेगमसाहबा बेचारी प्यास से हैरान हैं तुम लोग भी परेशान हो, मेरा भी काम बन्द है।

कान्हे बिल— मकान इतनी दूर नहीं जो चार घण्टे लगजाते और पैदल

भी नहीं गये, भाड़ीपर गये हैं। इतनी देर मुमकिन न थी, मालूम नहीं दारोग़ासाहब पर क्या आफत पड़ी।

मनेजर — आप लोगों में अगर कोई मकान जानता हो तो जाइये और दारोग़ासाहब को बुला लाइये।

कान्हिबिल — मुझे कौन ऐसी ग़र्ज़ पड़ी है जो चार मील दौड़ा जाऊं दारोग़ा जी आतेही होंगे, मर न जायेंगे आप क्यों घबराये जाते है।

मनेजर— मुझे तर्स आता है कि चार घण्टे से इस पालकी में बेगम साहबा कैद हैं। बड़ा ग़ाफिल और निमकहराम दारोगा है।

एक — बेगमोंके नौकर ऐसेही होते हैं।

दूसरा — देखते ही बेगमसाहब की बदौलत दारोग़ा जी के क्या ठाठ हैं। ख़ुद नवाबज़ादा मालूम देता है।

मनेजर — आख़िर यह बेगमसाहबा कौन हैं, और कब से शहर में तशरीफ लाई हैं?।

एक — कल रात को लखनऊ से तशरीफ लाई हैं बड़े सामान हैं कम से कम दो तीन सौ रुपये सुबह से ख़ैरात कर चुकीं, रास्ते भर पैसे दुअन्नी, चवन्नी और रुपये लुटाती हुई आई, बड़ी भागवान हैं।

दूसरा — शाह अवध की भांजी हैं यहां से मटियाबुर्ज तशरीफ़ ले जावेंगी।

मनेजर — अगर शाह अवध की भांजी हैं तो वहां क्यों नहीं ठहरीं? ताज्जुब है कि मामूं का घर छोड़ कर अलग किराये का मकान लिया!

कान्हिबिल — वाह मनेजरसाहब आप की भी खूब बातें है, मामूं के घर न ठहरने से रिश्तेदारी में फ़र्क नहीं आता।

मनेजर — भाइयो, यह क्या इसरार है, चार बजने को पन्द्रह मिनिट बाकी है, करीब २ पांच घण्टे होने को आये और दारोग़ा नहीं आया, अब उसका इन्तज़ार फ़ज़ूल है, बेगमसाहबा से कहा जाय कि मेरे माल की कीमत दिलवायें और पालकी यहां से रवाना हो।

कान्हिबिल — बेगमसाहबा से कौन कह सक्ता है? सिवा दारोगा के और कोई सर्कार से बात चीत नहीं कर सकता।

मनेजर — यहां इतने आदमी इ-

मराह हैं इनमें कोई भी बेगम साहब तक नहीं जा सकता ?।

कान्हिबिल — यहां इस वक़्त जितने आदमी हैं सब कलकत्ते के रहने वाले हैं और कलही नौकर हुये हैं कोई कदीम मुलाज़िम नहीं है।

मनेजर — यह और भी गज़ब की बात है, कान्हिबल ! मुझे कुछ दाल में काला मालूम होता है, बेगमसाहबा से कहिये कि मेरा माल वापस कर दें या रुपये दे दें।

कान्हिबिल — कहे कौन ? हमारी मजाल है कि पालकी के नज़दीक जायँ।

मनेजर — मैं खुद जाता हूं।

मनेजर पालकी के पास खड़ा हुआ।

मनेजर —'हजूर बेगमसाहब बहुत देरी हुआ, और अब तक दारोग़ा नहीं आया, अब हुजूर क्या हुकुम देती हैं कँहार भी परेशान हैं और हुजूर के हमराही भी घबड़ा रहे है' पालकी में से कोई जवाब न मिला।

मनेजर —'जनाब बेगमसाहबा कुछ मुंह से इर्शाद फर्माइये हम लोग हुजूर के फर्माबरदार हैं कोई गैर नहीं आखिर कब तक हुजूर पालकी में बैठी रहेंगी, बड़ी देर से सर्कार भी तकलीफ उठा रही हैं, जैसा हुकुम दीजिये तामील किया जाय'। फिर कुछ जवाब न मिला।

मनेजर — क्यों भाइयो क्या माजरा है ? मुझे खुद बखुद दहशत हो रही है पालकी में से कुछ जवाब नहीं मिलता। आया पालकी में कोई दर हकीकत सवार है या यह भी बनावट है।

कान्हिबिल — आप इतना क्यों परेशान होते हैं, बनावट की आपने एकही कही, हमारे सामने सर्कार आलिया इसमें सवार हुईं और अबतक इसमें तशरीफ-फर्मा हैं।

मनेजर — मगर अन्दर से कोई आवाज़ नहीं आती।

कान्हिबिल – आपने क्या बाल धूप में सुफेद किये? कहीं बेगमात और शाहज़ादियां ग़ैर मर्दों से इस तरह बात चीत किया करती हैं? हमने तो ग़द्र में यहां तक देखा कि बेगमें मरते मरते मर गईं और मुँह से न बोलीं। शरीफ़ और रज़ोल की मनेजरसाहब यही पहिचान है, आलीखान्दान का क्या कहना।

मनेजर—मुझको किसी के खान्दान या शराफ़त् से कुछ मतलब नहीं, मेरा साठ हज़ार का माल पालकी में गया है, मुझे खबर नहीं कि उसका क्या होने वाला है। मेरी किसी बातका जवाब बेगमसाहबा नहीं देतीं, आखिर मैं कब तक दूकान का कारबार बन्द कर के इस तरह चौकीदारों के मुआफिक बैठा रहूँ।

मनेजर —(फिर पालकी के करीब जा कर) जनाब बेगमसाहब, खुदा के लिये कुछ मुँह से हां नहीं फर्माइये, मुझे सख्त तरद्दुद हो रहा है, आप का नौकर मालूम नहीं कहां मर रहा। अच्छा आप मुँह से न बोलें, मेरा माल तो पालकी में से निकाल कर बाहर दे दें, फिर भी कुछ जवाब न मिला।

मनेजर — अब तो मुझे शुबहा होता है कि इस पालकी में कोई नहीं। कहारो तुम पालकी उठाओ, देखो ख़ाली है या इसमें कोई सवार है, यह मुझ से पांच रुपये लो जो मैं हुकुम देता हूँ तामील करो।

कान्स्टिबिल — मनेजर साहब यह किस क़द्र गुस्ताख़ी और बेअदबी की बात है कहीं इस तरह शहज़ादियों की पालकी का इम्तिहान किया जाता है, मैं आप को यकीन दिलाता हूँ कि बेगमसाहबा इसमें तशरीफ़ रखती हैं अभी २ मैंने खांसी की आवाज़ सुनी है।

मनेजर— जनाब बेगमसाहब कुछ तो फर्माइये मेरा माल आप क्यों बाहर नहीं फेंक देतीं।

अन्दर से सिर्फ खांसी की आवाज़ आई।

मनेजर—शुक्र खुदा का सद हज़ार शुकर खुदा का, बेशक पालकी में बेगम साहबा मौजूद हैं मेरा यह शुबहा कि पालकी ख़ाली है ग़लत निकला मगर देखो छः बजने को आये और अभी तक वह कमबख्त दारोग़ा न आया आख़िर क्या होगा। कान्स्टिबिल साहब मुझ से बीस रुपये लीजिये और फ़ौरन् जा कर दारोग़ा की तलाश कीजिये।

एक कान्स्टिबिल ने बीस रुपये जेब में रक्खे और दारोग़ा की तलाश में निकला सब से पहिले मकान पर गया वहां कोई न मिला सिर्फ़ एक नया बावर्ची बैठा हुआ बाहर खाना पका रहा था और इस बात पर वह भी ताज्जुब कर रहा था कि बेगम साहब

क्यों वापस नहीं आई।

कान्स्टिबिल - क्यों मियां बावर्ची यहां दारोग़ा साहब तो नहीं आये?।

बावर्ची — वह तो बेगम साहब की सवारी के साथ जब से गये फिर नहीं लौटे मैं यहीं मौजूद रहा बेगम साहब शायद मटियाबुर्ज चली गई।

कान्स्टिबिल — बेगमसाहब तो पारसी सौदागर की दूकान पर दारोग़ा के इन्तज़ार में बैठी हैं, दारोग़ा का पता नहीं।

लब्बू खां कान्स्टिबिल वहां से सीधा गाड़ी पर सवार होकर मटियाबुर्ज गया और बखूबी दर्याफ्त किया, वहां सबने बिलकुल लाइल्मी ज़ाहिर की कोई कुदसियाबेगम का नाम भी वहां नहीं जानता था।

लब्बू खां—(यह कहकर) हो नहो इसमें कुछ दालमें काला है, और दारोग़ा हरामज़ादे ने हम सब के चूना लगा दिया वहां से वापस हो कर फ़ौरन् पारसी की दूकान पर पहुंचा, आठ बजने में दस मिनट बाकी थे और पालकी व हमराहियान सब बदस्तूर उसी हालत में मौजूद थे।

लब्बू खां— कहिये मैनेजर साहब कुछ पता मिला?।

मनेजर—कुछ नहीं, सिवा इसके कि बेगमसाहब ने तुम्हारे पीछे तीन मर्तबा और खांसा और एक मर्तबा पालकी के नीचे से किसी कद्र पानी बहा।

लब्बू खां—मैं सब ढूंढ़ आया कहीं पता नहीं लगता मैं मटियाबुर्ज भी हो आया और नवाब ग़ज़फ़रउद्दौला बहादुर से खुद मिलकर दर्याफ्त किया उन्हों ने साफ जवाब दिया कि शाह अवध की भांजी का नाम कुदसिया बेगम नहीं है और न लखनऊ से कोई रिश्तेदार बादशाह सलामत का इन दिनों आने वाला था। मनेजर साहब अब तो मुझे भी शक होता है कि कहीं इसमें चकमा न हो।

मनेजर — हाय २ मैं लुटगया, अरे मैं कहीं का न रहा अरे एक ऐसा ही वाकया इस शहर में और हो चुका था, हाय उसने भी मुझे होशियार न किया, अफसोस मैं तबाह होगया! हाय मैं तबाह होगया!।

कान्स्टिबिल ने कहा आप रोयें चिल्लायें नहीं, देखिये अब मैं सब हालत दर्याफ्त करने की कोशिश करता हूं। (पालकी के करीब जाकर पूछा) बेगम

साहब साफ़ मुंह से बोलिये कि आप कौन हैं और आपका नौकर कहां गया ? अगर आप जवाब न देंगी तो इसी वक्त पालकी पुलिस के थाने पर जायगी और आप को बड़ी बेइज़्ज़ती होगी ।

मनेजर — भाई तुमसे दारोगा के हाल से कुछ मतलब नहीं बेगमसाहब से कहो कि हमारा माल दे दें ।

कान्स्टिबिल — बेगमसाहब आपने जो माल लिया है वह दे दीजिये, इसी में खैर है, वर्ना आप की पालकी थाने को लिये जाता हूँ । इसका भी कुछ जवाब न मिला, पन्द्रह मिनट और इन्तज़ार कर के पालकी मयबेगमसाहबा थाने में पहुंचाई गई पहिले जब सवारी दूकान पर आईथी शायकीन, फुकरा और वर्दी पहने हुये चपरासी और कान्स्टिबिल हमराहथे अबएक पारसी को रोने की सदा साथ में इज़ाफा हो गई। थाने पर पहुँच कर कुल किस्सा इन्सपेक्टर से बयान किया गया वह भी सुन कर मुतअज्जिब हुआ और उसने भी हज़ार तरह बेगमसाहब के बुलाने की कोशिश की लेकिन कुफ्ल दहन किसी तरह न खुला ।

इन्सपेक्टर ने धमकाया कि बेगम हो या शाहज़ादी हो जो कोई इस पालकी में हो अगर फौरन् साफ २ जवाब न देगा हम अभी पालकी का पट खोले देते हैं और फिर आबरू का बचना मुश्किल होगा । उस पर भी कुछ जवाब न मिला, आखिरकार इन्सपेक्टर सब-इन्सपेक्टर व जुम्ला मुलाज़िमान पुलिस थाना-मज़कूर ने जमा हो कर मशवरह किया और सब की सलाह से फौरन् एक सवार डिस्ट्रिक्ट सुपेरिन्टेन्डेन्ट साहब पुलिस की खिदमत में भेजा गया कि ऐसे मामले में क्या किया जाय । वहां से हुक्म आया कि किसी औरत के ज़रिये से पालकी की तलाशी कराई जाय । चुनान्चे एक औरत बुलाई गई और उसने पट खोल कर देखा ।

औरत — हां पालकी में एक नौजवान खूबसूरत औरत सवार है अच्छे कपड़े पहिने है और जेवर भी चांदी के उमदा किस्म के पहिने हुये है ।

मनेजर — और मेरी हीरे की अँगूठियाँ और चूड़ियां भी पहिने है ? ।

औरत — वह तो मुझे नहीं दिखाई देती ।

मनेजर — हाय२ मैं लुट गया ! लुट

गया ! तबाह हो गया ! ! !

इन्सपेक्टर — क्या मर्द आदमी औरतों की तरह रो रहे हो ! रोने से क्या होता है पहिले सब हाल दर्याफ्त कर लेने दो।

औरत — बीबी मुंह से बोलो, जे़वर क्या हुआ ? ।

बेगम — दारोग़ा साहब जानें।

औरत — तुम कौन हो ?।

बेगम — कसीदा बेगम।

इन्सपेक्टर— झूठी है बदज़ात ! बेगमात की ज़बान कहीं छिपी रहती है साफ २ पूछो यह औरत कौन है।

औरत — बीबी साफ साफ बतला दो तुम कौन हो और तुम्हारा क्या नाम है और कहां से आई हो ?।

औरत — कसीदाबेगम नाम है लखनऊ से आई हूँ, और कुछ नहीं जानती।

औरत — तुम्हारे बाप का क्या नाम है ? ।

बेगम — घसीटे।

इन्सपेक्टर — हा हा हा हा यह देखिये सब पर्दा खुल गया, नवाबों के नाम ऐसेही होते हैं। हरामज़ादी, निकल पालकी में से बदज़ात ! घसीटे की बच्ची हरामज़ादी।

बेगम — आप मुझको क्यों गाली देते हैं मेरा क्या कसूर, दरोग़ा जाने।

इन्सपेक्टर ने चार पांच थपेड़ बेगम साहब के रसीद किये। मार के आगे भूत भागता है कुल बेगमी का नशा उतर गया और बेगमसाहब ने साफ २ बतला दिया कि एक शख्स ने न मालूम उसको इस तरह फँसा कर पालकी में बैठा दिया था और उसको भी धोखा देकर चल दिया। पुलीस ने हज़ार तहकीकात की और तमाम इश्तिहार भेजे गये जा बजा तार दिये गये कुछ पता न लगा। गरीब पारसी रो पीट कर बैठ रहा, बेचारी कुन्दन चन्दे हवालात में रही आखिर को वह भी छोड़ दी गई, शाहज़ादे को याद कर आप भी कभी २ रो देती थी।

बाब पन्द्रहवां।

कार बूज़नम् नेस्त बुवारी ।।

मिसेज़ छील मय हमराहियान बखैर बखूबी आगरा पहुँची इलाहाबाद से मिस्टर अमीरहसन को तार दे दियाथा चुनान्चे वक्त मौऊदना पर हमारे दोस्त रेल घर मौजूद थे निहायत जोश व

ख़रीद से आशिक व माशूक मिले मिष्टर अमीरहसन भी अपनी माशूका के साथ मिसेज़ होल के बँगले पर गये. वहां मिष्टर बेर्सफोर्ड व मिष्टर ऐटकिन्स जो ऐक रोज़ पेशतर पहुँच गये थे मिले।

मिसेज़ होल — मिष्टर हसन ! मैं आप को इन दोनों जेन्टिलमैनों से इण्ट्रोडूस करती हूँ। मिष्टर ऐटकिन्स मनेजर हैं और मिष्टर बेर्सफर्ड असिष्टेण्ट मनेजर हैं, मिष्टर ऐटकिन्स की मैं बड़ी शुक्रगुज़ार हूं इनकी खास कोशिश और मेहनत से कल ऐसी सस्ती मिल गई और ऐसी उमदा।

अमीरहसन — मैं भी आपका शुक्रिया अदा करता हूं कल और सामान सब कितनी कीमत में आये ?।

मिसेज़ होल — सिर्फ चौंतीस हज़ार चार सौ तिर्पन पन्द्रह आना नौ पाई को। वाकई कल बहुत सस्ती मिल गई। मिष्टर अमीरहसन ! तुम बहुत खुशनसीब हो।

अमीरहसन — यह सब आप की इनायत व कोशिश का नतीजा है वाकइ मैं बहुत अहसानमन्द हूं।

मिसेज़ होल — मिष्टर अमीरहसन मैं तुम से कहना भूल गई थी, जिस रोज़ कलकत्ते पहुँची उस रोज़ मेरी सालगिरह (Birth-day) थी, आह हा मुझे चौबीस बर्स दुनियां में आये होगये देखो पापा ने मेरे लिये ये अँगूठियां और चूड़ियां हीरे की तोहफा भेजी हैं साठ हज़ार की बिलायत की खरीद है।

मिष्टर अमीरहसन—वाकई निहायत उम्दा हैं मैंने अपनी उम्रमें ऐसे अच्छे ज़ेवरात नहीं देखे थे।

मिसेज़ होल — हां मैं तुमसे तुम्हारे मनेजरों के हालात बतलाना भूली जाती हूं। मिष्टर बेर्सफर्ड बहुत खान्दानी जेन्टिलमैन हैं, पहिले नील और चाह के कारखानों में मनेजर रह चुके हैं बहुत तजरबेकार शख़्स है मैं ने उनको असिष्टेन्ट मनेजर मुकर्रर किया है कि निगरानी इमारत और खरीद फरोख्त का काम सब उनके जिम्मे रहेगा सिर्फ एक सौ पचास रुपे माहवार उनकी तनखाह है। मिष्टर ऐटकिन्स बहुत ज़हीन और खुशमिज़ाज जेन्टिलमैन हैं कई जगह सा मिल (Saw Mill) के मनेजर रह चुके हैं और ऐसे कारखानों के मुताल्लिक बहुत कामिल तजरबा रखते हैं। टामस ऐण्ड

को० ने उनकी ख़ास तौर पर सिपारिश की है हमारा कारख़ाना अभी ऐसे लायक तजरुबाकार मनेजर की तनखाह बर्दाश्त नहीं कर सकता था इस वजह से पहिले मुझे बहुत पसोपेश रहा मैं खूब जानती थी कि अगर उन्हें मुकर्रर नहीं करती तो इञ्जन चल नहीं सकता और अगर मुकर्रर करती हूं तो शायद इब्तदाअन् तनखाहका भार न उठ सके मगर फिर मैंने ग़ौर किया और यह समझा कि जितना ही गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा मैंने उन्हें मुकर्रर कर लिया, बड़ी मुश्किल से २००) तनख़ाह करार पाई।

अमीरहसन — और इन दोनों साहबों के कयाम का क्या इन्तज़ाम होगा ?

मिसेज़ होल — यह मसला नाज़ुक है, मकान में शिर्कत मुझे भी पसन्द नहीं आती, बकौल शख़से कि -

आकलाने गुहर सुफ्तह अन्द
खाना जुदा गोर जुदा गुफ्ता अन्द ॥

लेकिन इन लोगों को औव्वल तो कोई मकान मिल नहीं सकता दूसरे काम के पास इन लोगों का कयाम ज़रूरी है, बिलफैल मेरे बँगले में पांच कमरे खाली हैं मैं एक २ कमरा दोनों साहबों को दे दूंगी, खाना मेरे साथ खायेंगे कोई तकलीफ न होगी।

अमीरहसन — बहुत अच्छा।

सपुर्दम् ब तो मायये खेश रा।
तु दानो हिसाबे कमो बेश रा॥

यह चन्द रोज़ सब लोगों को मेहनत व तकलीफ के थे. रेल से कलें उतरवा कर बँगले तक लाई गईं और वहां उनके दुरुस्त करने और बकायदा काम फैलाने का इन्तज़ाम करना पड़ा। सिवा मि॰ र ऐटकिन्स के कोई ज़रा भी वाकिफकार न था उसी ने शहर के दस पन्द्रह होशियार मैमार और मिस्तरी नौकर रक्खे उनको बखूबी बतलाया और हज़ार दिक्कत व खराबी से दो महीने में कल तैयार हुई और काम करने लायक होगई। इस दर्मियान् में म्यूनिसिपालिटी से इजाज़त हासिल न करने का मिसेज़ होल पर मुकद्दमा कायम हुआ। उस मुकद्दमे में भी मिसेज़ होल ने आनरेरी मजिस्टरेटों के इजलास में आकर अपनी मिलकियत कबूल की और जुर्म से भी इकबाल किया।

आनरेरी मजिस्टरेटों ने अगर्चे

चन्द मर्तबा दर्याफ्त किया कि इससे अमीरहसन का क्या वास्ता है मिसेज स्टील ने यही जवाब दिया कि यों तो बवज: दोस्तो के जो माल मेरा है उनका है और उनका है सो मेरा, मगर यह कल मेरेही नाम है और मैं ही उसकी प्रोप्राइटर हूं। आनरेरी मैजिस्ट्रेटों ने मेम साहब पर पचास रुपया जुर्माना किया जिसको देकर मेम साहब बहुत ही खुश २ अमीरहसन के पास गईं।

मिसेज स्टील—मिस्टर हसन! आवो आज मैंने बड़ा तमाशा देखा, ऐसे २ बड़ी २ मोंछ लम्बी दाढ़ीवाले मुसलमान और बड़े तोंदवाले हिंदू बैठे इजलास कर रहे थे एक यूरोपियन भी था मिस्टर जान। लेकिन कायदा और कानून से शायद उन्हे भी ज्यादा वाकफियत नही है वाकई बड़ा तमाशा था मेरे नज़दीक पचास रुपये का टिकेट ऐसे थियेटर के लिये गिरां नहीं है।

अमीरहसन—क्या कह रही हो मेरी समझ में नहीं आता।

मिसेज़ स्टील — हा हा हा हा तुमने सुना नहीं मेरे उपर शेरखां कोतवाल की साज़िश से एक मुक़ मा कायम कियागया था कि मैंने बगैर इजाज़त म्यूनिसिप्यालिटी के अपनी कल कायम की। मैं तलब होकर बेंच में गई मैंने एक भी वकील मुख्तार नहीं किया और जाकर सीधे २ इलफाज़ में इकबाल जुर्म करदिया। आनरेरी मैजिस्ट्रेटों को मेरे इकबाल पर बड़ी चख पड़ी।

एक – हजूर मेमसाहब आपका का मालूम रहा कि आपन घर मां आरा चलाउब जुलुम है —

दूसरा— अस कानून कहूं नाही देखा। आपन घर आपन आरा पूंछो मियून्सप्ली ससुर का कौन इजारा—

तीसरा मुसल्मान मियून्सप्ली के कवायद से बेशक बर खिलाफ हुआ मगर मेम साहबने इकबाल कर दिया इसलिये कोई सख्ती की एहतियाज नहीं।

चौथा मुसल्मान — और यह कल है किस की ?

मिसेज़स्टील। आप को इससे क्या तालुक ? मेरीहै और मैं इकबाल करती हूं।

पहला मुसल्मान - मैंने तो सुना सैयद अमीरहसन साहब की है –

मिसेज़स्टील — 'शनीदा के बुवद मानिन्द दीदह' ?

पहला मुसल्मान— मिमसाहब आप अपने को नाहक मुजरिम बना रही हो। मुझे खूब मालूम है यह कल सैयद अमीरहसन साहब की है।

सिरिश्तेदार—हजूर मैंने भी सुना है भाई भाइयों में लड़ाई झगड़ा करा के मिमसाहब ने रुपये वसूल किये और कल खरीद लाईं।

मिसेज़ स्टील— मैं अदालत से मुलतजी हूं कि ऐसी वाहियात बातों से माफ रक्खी जाऊं।

मिस्टर जान— बेशक हम सब वाहयात बातों से क्या वास्ता। मिसेज़ स्टील ने जुर्म कबूल कर लिया अब सजा तजबीज़ होनी चाहिये।

पहला हिंदू— पांच रुपया जुर्माना।

दूसरा हिंदू— हमको इत्तफ़ाक है।

तीसरा मुसलमान— दोसौ रुपया जुर्माना.।

चौथा मुसलमान— बेशक इस से कम सज़ा देना वाहियात है।

सिरिश्तेदार – हुजूर लोगों में इख्तलाफ़ है इस वास्ते मिस्ल बड़े साहब के पास भेजनी होगी बेहतर है इत्तफ़ाक राय से सजा कीजिये, इत्तफ़ाक अजब चीज़ है।

मिस्टर जान— साहबो! मेरी राय में भी इख्तलाफ करना ऐसी छोटी बात में निहायत नामुनासिब है, आप लोग हमारे ऊपर छोड़ दीजिये, हम मुनासिब सज़ा तजवीज़ कर देगा।

सब लोग— बहुत बेहतर।

मिस्टर जान ने पहले मेरी तर्फ देखा मुसकराये और फिर आंखें नीची कर लीं मैं घबराई कि बुड्ढा जान कहीं जेलखाने न भेजदे मुझे उस वक्त तक यहभी नहीं मालूम था कि एन्तहा सज़ा सिर्फ दो सौ रुपया जुर्माना था।

मिस्टर जान – मिसेज़ स्टील आपने बग़ैर इजाज़त म्यूनिसिपेलिटी के कल कायम की, जिस्तरह एक अच्छे और नेक बाशिन्दे शहर को चाहिये आपने जुर्म से इकबाल कर दिया और इस वजह से आप के कसूर का बोझ बहुत घट गया मेरे मोअज्जिज साथियों में तादाद सज़ा की निस्बत इख्तलाफ़ है लेकिन मैं खुश हूं कि सबने यह मामला मेरे ऊपर डाल दिया। मेरी राय में आप के ऊपर पचास रुपया जुर्माना होना चाहिये और अब आप को बजा-

क्ता दर्खास्त दे कर इजाजत हासिल कर लेनी चाहिये — मैंने थांङ्क यू कह कर पचास रुपये का नोट मेज़ पर रख दिया । कहो कैसी रही ! ।

अमीरहसन — खैर जो कुछ हुआ अच्छा हुआ, लेकिन इसमें क्या मसलहत थी कि तुमने मेरा नाम नहीं बतलाया ! ।

मिसेज़ हील — एक नहीं सदहा मसलहतें थीं ।

औव्वल तो तुम्हारे कर्ज़खाह डिग्री हासिल करके कल कुर्क कराते अब ऐसा नहीं कर सकते । दूसरे तुम्हारे ऊपर जुर्माना होता, मैं कैसे गवारा कर सकती, क्योंकि तुम्हें बहुत कुछ सर्कारी इज्ज़तों की उमेद है अगर एक दफा सज़ायाब होजाते तो फिर नौकरी मिलना मुश्किल थी ।

अमीरहसन — ऐ फ़िरिश्ते खसलत लेडी, मैं किस तरह तुम्हारा शुक्रिया अदा करूं तुम्हारे एहसानात रोज़ बरोज़ बढ़ते जाते हैं, ऐ काश मैं किसी लायक होता ।

मिसेज़ हील — घबराओ नहीं खुदा चाहेगा तो जल्द तुम इस काबिल हो जाओगे कि मेरे एहसानात् का बदला दे सको । अमीरहसन ! मैं तुमसे कुछ नहीं चाहती सिर्फ तुम्हारी उल्फत और मोहब्बत चाहती हूं ।

दूसरे रोज़ मिस्टर ऐटकिन्स ने हस्ब ज़ाब्ता अदालत में दर्खास्त दे कर इजाज़त हासिल कर ली अब जहां तक तामीर और आलात का ताल्लुक था विकटोरिया सा मिल तैयार थी । यह मैं कहना भूल गया था कि मिसेज़ हील ने इस कल का नाम विकटोरिया सा मिल रक्खा था । सब कुछ तैयार था लेकिन मुलाज़िमीन् व मनेजर आसाढ़ के से दर्ज़ी हाथ पर हाथ धरे बैठे थे कोई काम न था ।

ऐटकिन्स — मिसेज़ हील ! आपने लकड़ी का क्या इन्तज़ाम किया ? आरा तैयार है लेकिन लकड़ी नहीं ।

मिसेज़ हील — ओ डियर मी ! बेशक इसका ख्याल ही न था न यहां से कोई जंगल करीब है और न बाग़ात काबिल फरोख्त् हैं बहरहाल कोई फिक्र करनी चाहिये ।

मिस्टर बेसफोर्ड — यह सख्त् ग़लती हुई कल कायम करने से पहिले यह देख लेना था कि लकड़ी की कमी न पड़ेगी ।

मिष्टर ऐटकिन्स और मिसेज़ ह्वील तमाम शहर में लकड़ी तलाश करते फिरे जाबजा थोड़ी बहुत मिली मगर ऊँट के मुंह का ज़ीरा, भला इतनी बड़ी कल के लिये शहर की ढूंढ़ी हुई लकड़ी कहां तक किफ़ायत कर सकती थी।

अलगर्ज़ वह कल जैसी बनी थी वैसीही खड़ी रही, न उसमें कुछ काम हुआ और न एक पैसे का फायदा।

अमीरहसन — मिसेज़ ह्वील! कल से कुछ फायदा नज़र नहीं आता क्योंकि मैं सुनता हूं कि लकड़ी नहीं मिलती।

मिसेज़ ह्वील — हां बिलफ़ेल नुकसान है सबब यह है कि कोतवाल ने तुम्हारी अदावत से हर जगह मुमानियत कर दी है कोई अपना बाग़ फरोख्त् करने पर रज़ामन्द नहीं होता और जंगल यहां करीब नहीं है।

अमीरहसन — खेरीगढ़ और तराई में जंगल बहुत है वहां से क्यों नहीं लकड़ी मँगाई जाती?।

मिसेज़ ह्वील — हां जंगल से दुनिया खाली नहीं। मगर दमड़ी की बुलबुल टका खुशकाई की मसल होगी किस्सा मुख्तसर दो तीन महीने इन्तज़ार कर के मिसेज़ ह्वील ने मिष्टर ऐटकिन्स और तमाम मुलाज़मों को ब इस्तसनाये मिष्टर बेसफर्ड को जवाब दे दिया।

मिष्टर ऐटकिन्स इस फिकर में थे कि मिसेज़ ह्वील कहीं तनहा मिलें और कलकत्तेवाले वादे को पूरा करायें लेकिन मेम साहब उनसे भी ज्यादा चालांक थीं अपने बाप को सिखा दिया था कि एक मिनिट भी ऐटकिन्स को तनहा न छोड़ना वह साये की तरह साथ रहता था। एक दिन बारे ऐटकिन्स ने मौका पाया।

ऐटकिन्स —

वह जो हम से तुम से करार था
तुम्हे याद हो कि न याद हो। हमें
याद है सब ज़रा २ तुम्हे याद हो
कि न याद हो॥

मिसेज़ ह्वील — देखिये मिष्टर ऐटकिन्स इस कल की बदौलत मैं ने अपना हज़ारहा रुपया नुकसान किया अपनी दूकान भी इसीके नज़र कर दी अब आप बेहतर है तशरीफ़ ले जायें, अगर मैं कभी इस काबिल हुई कि अपना वादा पूरा कर सकूं तो

बड़े शौक से पूरा करूंगी ।

ऐटकिन्स — मेरे ख्याल में तुम अब भी मुफलिस नहीं हो अभी तो कल वाली कीमत का रुपया तुम्हारे पास बचा हुआ है ।

मिसेज़ ह्वील—वही सब रुपया तामीरात वग़ैरह में सर्फ हुआ उसी में से आप लोगों को तनख्वाहें मिलीं बेहतर है 'इस बारे में आप मुझसे गुफ्तगू न फर्मायें, मैं आप को यकीन दिलाती हूं कि हमेशा आप की सच्ची दोस्त रहूंगी। बेचारा ऐटकिन्स अपना सा मुंहँ लेके दूसरे दिन आगरे से रुख़सत हुआ ।

बाब सोलहवां ।

अमीरहसन की बरबादी ।
और
नज़ीरहसन की हमदर्दी ॥

नाज़रीन् जब से यह किस्सा आग़ाज़ हुआ दुनिया पांच छ महीना और पुरानी हो गई इस दर्मियान में हमारे दोस्त सैयद अमीरहसन साहब के हालात में बहुत कुछ तग़ैय्युर आगया, जो कुछ बाप की कमाई का रुपया मिला था जिसतरह सर्फ हुआ नाज़रीन बखूबी आगाह हो चुके हैं अब कर्ज़दारों के तकाज़े के अलावा रोज़मर्रा के इख़राजात भी फैशन् के मुताबिक चलना दुश्वार थे यह सच है कि फर्नीचर बर्तन छुरी कांटे और दीगर लवाज़मात - जेन्टिलमैनी ह्वेल ऐन्ड को के ख़रीदारी की बदौलत सब मौजूद थे मगर फिर भी ज़र अलहसलाम के बग़ैर कुछ काम न चल सकता था, नौकरों की तनख़ाहें मकान का किराया, बनिये का बिल कोठीवाले का बिल और सब से बढ़ कर ह्वेल ऐन्ड को के बिल ने हमारे दोस्त को बलबला कर रक्खा था ।

मिसेज़ ह्वील ने दो तीन मर्तबा कर के तीन सौ रुपया मसारफ़ रोज़मर्रा के लिये भेजा मगर बकौल शख़्से 'ओस चाटे कहीं प्यास बुझ सकती थी' ह्वेल ऐन्ड को ने भी नालिश कर दी जिसमें एकतर्फा डिगरी अदालत से हो गई बाकी कर्ज़दारों ने भी नालिश की धमकी दी, राजा साहब के मुख़तार ने भी मकान खाली करने का बाज़ाब्ता रजिस्टरीशुदह नोटिस भेज दिया इधर ह्वेल ऐन्ड को ने डिगरी जारी करा दी और कुल सामान फैशन् घोड़ा

गाड़ी कांटे वर्तन अलगर्ज़ जुमला आसासुल्बैत व दस्तसनाय पश्चिमके कपड़े कुर्क हो गये अब बेचारे सख्त परेशान थे। जो कुछ रुपया था सा मिल (Saw Mill) की नज़र हो गया टका पास नहीं, भाई मां जोरू सब से लड़ाई। मिसेज़मील भी हिसाब किताब के तज़किरे पर बेमज़ा हो जाती हैं आखिर बेचारा करे तो क्या करे, हिदायतरसूल और इनायतअली की आमदरफ्त भी ब-मुकाबले पेश्तर के अब बहुत कम हो गई, सिर्फ दो वक्त खाने के वक्त तो अभी दोनों बुजुर्ग बख्याल वजह आजाते थे लेकिन इधर डिनर खतम हुआ और दोनों साहब ग़ायब ।

एक रोज़ अमीरहसन इसी रंज में बैठे हुये थे कि सैयद नज़ीरहसन और शेर खां कोतवाल दिखाई दिये ।

बेयरा — हजूर के भाई साहब और कोतवाल साहब तशरीफ़ लाये हैं ।

अमीरहसन — कह दो हमको फुर्सत नहीं हम इन दोनों शख्सों से मिलना नहीं चाहते ।

नज़ीरहसन — उन्हें फुर्सत हो या न हो मैं बग़ैर मिले नहीं लौट सकता।

शेर खां — उनका जी चाहे हम लोगों पर फौजदारी में मदाखिलत बेजा का मुकद्दमा दायर करें हम लोग बग़ैर मिले नहीं जा सकते। यह कह कर दोनों मुलाकाती अन्दर कमरे में घुस गये ।

अमीरहसन — आप लोग इस तरह गाहक चले आये देखिये मैं सिर्फ ड्रेसिंग गाउन पहने बैठा हूं मुलाकात की पोशाक में नहीं हूं आप अगर इजाज़त दीजिये तो मैं कपड़ा पहन कर हाज़िर होता हूं।

नज़ीरहसन — अमीरहसन तुम लाख बनो, हज़ार फैशनएबुल नहीं आनरेबुल हो जाओ लेकिन याद करो तुम कौन हो, वही हो जो मां के पेट में नौ महीने एक साथ तुम हम रहे थे। अब्बाजान के मरते दम तक एक मिनिट हम तुम जुदा नहीं हुये, आखिर इन कमबख्त चन्द महीनों ने तुम्हारे दिल को क्या कर दिया है एक बारगी कायापलट हो गई तुमने मेरा कौन कसूर देखा जो मुझ से इसतरह नाराज़ हो गये हो मेरी कौन खता साबित की जो मुझ से ज़माने की तरह फिर गये ?।

अमीरहसन — आप माफ़ करें मैं बग़ैर कपड़ा पहिने आप से बातचीत नहीं कर सकता ।

शेरख़ां — अच्छा साहब आप कपड़े पहन आइये जब तो बातचीत कीजियेगा । यह याद रखिये कि बगैर मुलाकात किये हम लोग नहीं जा सकते और गुसलख़ाने की राह से भागना चाहेंगे तो यह भी मुमकिन नहीं मैं पुलिस का आदमी हूं उधर मेरे मुख़बिर बैठे हुये हैं ।

अमीरहसन ने ड्रेसिङ्ग रूम में जा कर ख़त बनवाया गुसल किया कपड़े पहिने और करीब एक घण्टे के बाद बरआमद हुये ।

अमीरहसन—आप लोग मेहर्बानी करके ड्राइङ्ग रूम में तशरीफ ले चलिये, यह जगह मुलाकात की नहीं, मेरे सोने का कमरा है ।

शेरख़ां — बहुत बेहतर ।

दोनों मुलाकाती और अमीरहसन गोल कमरे में तशरीफ ले गये ।

नज़ीरहसन — अमीरहसन ! अब भी तुम्हारे होश दुरुस्त हुये या नहीं जिस तरह तुमने अपना रुपया बर्बाद किया अंगरेज़ी फ़ैशन् में गिरफ्तार हो कर ख़राब किया मुझ से या किसी से इस शहर में पोशीदा नहीं ख़ुदा के लिये अब भी सँभलो और अपने को सम्भालो ।

अमीरहसन— अङ्गरेज़ी फैशन् पर तुम्हारा एतराज़ महज़ बेजा है देखो यह मुहज़्ज़ब लिबास है और मुहज़्ज़ब कौम का लिबास है ।

नज़ीरहसन—यह मैं कब कहताहूँ कि अङ्गरेजी लिबास बुरा है मगर भाई यह तो समझो किस क़द्र गरां मिलता है कपड़े के अलावा उस के लवाज़मात मार डालते हैं कोट हो तो वेसकोट भी लाज़मी है । शर्ट के साथ नेकटाई भी हो कपड़ा भी विलायती दूकान का सिला हुआ हो और फिर तुर्रा यह कि बात २ के लिये लिबास जुदागानह, सोने का अलग, खाने का अलग, बैठने का अलग, नाच का अलग अब तक किसी शख्स के पास सदहा किस्म के जोड़े फैशन् के मुताबिक मौजूद न हों अङ्गरेज़ी वज़ह अख्तयार करना मेरे नज़दीक ख़िलाफ़ मसलहत है । अमीर हसन देखो, मैं अपने को या तुम्हें उस ज़ैल में नहीं दाख़िल करता लेकिन वह शख्स जिसकी आमदनी क-

म से कम हजार रुपये माहवार की न हो उसका अङ्गरेजी फैशन् अख्तियार करना सिर्फ उसके लिये नहीं बलकि उसके खान्दान और उसकी औलाद सब के लिये मुज़िर है। अङ्गरेजी फैशन् के लिये यह भी ज़रूर है कि बँगला हो, आरास्ता हो, फर्निचर उमदा हो, नौकर चाकर बहुत ज्यादा हों हर शै बा कायदा हो इसके लिये ज़र कसीर की ज़रूरत है। देखो जब से तुम मुझसे अलग हुये मेरे पास सिर्फ एक बावर्ची और दो खिदमतगार हैं। बाहर वाले कमरे में चार तख्त बिछे हुये हैं जिन पर दरी बिछी है और एक नफीस चांदनी आठवें दिन बदल दी जाती है मैं आराम से बसर कर रहा हूं तुमने हजारहा रुपये का सामान ह्वेल के यहां से खरीदा, यह बँगला लिया, उस को सजा हज़ार हा रुपया बर्बाद किया आखिर इसका क्या नतीजा हुआ?।

अमीरहसन — तुम नतीजा क्या जानो, अगर किसी जलसे में तुम्हारे जाने का इत्तफाक हो तो तुम नीमवहशी समझे जाओगे और मैं मुहज्ज़ब ख्याल किया जाऊंगा।

नज़ीरहसन — यह सच है और मैं तसलीम करता हूं लेकिन जब तक इस हालत में न हो कि अच्छी तरह जलसों में शरीक हो सके उसको जलसों की शिर्कत की हवसही फज़ूल है, मैं किसी तरह अङ्गरेजी फैशन् का मुखालिफ नहीं हूँ लेकिन यह ज़रूर है कि हिन्दुस्तानी मुसल्मानों के लिये मैं उसको निहायत मुज़िर समझता हूँ वह बेचारे जो पहिले साल में चार जोड़ा अँगरखा पायजामा बना कर शरीफाना तौर पर बसर करते थे अब कोट पतलून की बदौलत उससे चौगुना रुपया भी खर्च करने पर शरीफाना तौर पर नहीं रहसकते। अगर किसी शख्स ने फर्ज़ करो छींट का कोट पतलून बना लिया या मामूली किस्म के नैनसुख का कोट बनवाया तो क्या वह तुम्हारी मुहज्ज़ब सुसाइटी में मुहज्ज़ब समझा जा सकता है? क्या वह फैशनेबुल दुनियां में हँसा न जायगा? ऐसी हालत में तुम्हीं बतलाओ कि उसको अपनी वजह में रह कर हँसी और तमसखुर से बचना चाहिये या अङ्गरेजी वजह अख्तियार कर के बेवकूफ बनना चाहिये।

अमीरहसन — अगर अङ्गरेजी वजह मुनासिबहाल न होती तो आनरेबुल सैयद साहब उसको क्यों पसन्द करते ?।

नज़ीरहसन— दुनियामें आनरेबुल सैयद की कोशिशों का मुझसे ज्यादा कोई मोतकिद नहीं और जिसकदर इज़्ज़त और ताज़ीम मेरे दिलमें सैय्यद साहब की है शायद दुनियामें किसी के दिल में नहीं लेकिन मेरी क़त्तई राय है किअंगरेज़ी लिबास अंगरेज़ी फैशनउन्हीं के लिये ज़ेबा है जो उसको अख्तियार कर सके हैं और जिन के पास काफ़ी दौलत है ग़रीब या मुतवस्सित दर्जे के मुसल्मानों के लिये हर्गिज़२ यह वज़ह मुनासिब नहीं।

अमीरहसन — आपने कम खर्च और ज्यादा खर्च की इतनी मुझ से बहस की, भला यह तो फ़र्माइये कि कौन कपड़े ज्यादा चलते हैं अंगरेज़ी या हिन्दुस्तानी?—हिन्दुस्तानी बारीक कपड़े चार शोब में काम के नहीं रहते और अंगरेजी कपड़े एकमर्तबा बनवालीजिये बरसों काम देते हैं, आखिर में सखी सूम दोनों बराबर हैं।

नज़ीरहसन— भाई यह तुम्हारी ग़लती है, औव्वल यह कि जिस क़ीमत में एक उमदा जोड़ा अंगरेज़ी कपड़ेका तैयार होता है उसमें कमसे कम पचीस जोड़े हिन्दुस्तानी मुतवस्सित दर्जे के पहिननेवाले आदमी के लायक बन सकते हैं दूसरे अंगरेज़ी फैशन में सिर्फ़ लिबास ही का खर्च नहीं बल्कि उसके लवाज़मात मार डालते है।

अमीरहसन — आपकी नसीहत अब मुझ पर कारगर नहीं हो सकती मैंने जो रंग अख्तियार कर लिया वह ज़िन्दगी भर के लिये है।

नज़ीरहसन— खैर तुम्हारी खुशी अब यह बतलाइये कि आप के क्या इरादे हैं?। मैं सुनता हूं कि कुल रुपया तुमने बर्बाद कर दिया, डिगरियां जारी हैं, असबाब कुर्क है, आखिर यह सब कब तक?और इसका नतीजा तुम ने क्या सोचा है?।

अमीरहसन—बेशक इत्तफ़ाक वक्त से और मेरी बदनसीबी से सा-मिल में घाटा पड़ा और उमेद के खिलाफ़ उस में कुछ न नफ़ा हुआ अब मेरा इरादा नौकरी के लिये बाहर कहीं जाने का है, बेशक मैं पचीस हज़ार रुपे का क़र्ज़दार हो गया हूं लेकिन नौकर होतेही

अब अदा हो जायगा कुछ अन्देशे का मुकाम नहीं आप मेरे लिये परेशान न हों, मेरा खुदा मेरे साथ है।

नज़ीरहसन — तुम्हारी यह तनज़ यह तकरीर मेरे दिल पर नश्तर का काम देती है, अमीरहसन फिर याद करो कि हम कौन हैं और तुम कौन हो। आखिर तुमने मुझसे किसबात पर लड़ाई ठानी? पहलेमेरा कसूर साबित कर दो फिर जो चाहे सज़ा दो,यह लो मैं तुम्हारे हाथ जोड़ताहूं अगर मैंने कोई वाकई ख़ता भी की है तो उसका माफ़ करना कुछ दुश्वार नहीं, अम्मां-जान रोती हैं और रोते २ अन्धी हो गई हैं तुम्हारे देखने को तरस्ती हैं क्या अब तुम्हारे दिल में मां का भी खलक नहीं रहा, अमीरहसन ! अब भी सँभलो और अपनेको सँभालो मुझ पर नहीं अपनी बेबस बीबी और मोहब्बती मां पर रहम करो।

अमीरहसन — भाई अब इस्से गुफ़्तगू करना ला-हासिल है मैं किसी तरह न तुम से मिल सकताहूं और न उस घर में चल सकता हूं, जिस में से एक मर्तबा मैं अपनी खुशीसे चलाआया।

शेर खां— भैया मां का बड़ा दर्जा होता है।

अमीरहसन — कोतवाल साहब आप बीच में न बोलिये मैं आपकी हरकात से बख़ूबी वाकिफ हूं, आपने मेरी बदी में कोई तसा नहीं लगा रक्खा। मिसेज़[illegible] पर मुकद्दमा कायम कराया तमाम शहर में लकड़ीवालों को मुमानियत कर दी कि मेरे पुतली-घर में लकड़ी न फरोख्त करें; खैर जो कुछ आप ने किया अच्छा किया मुझको कुछ शिकवा भी नहीं मेरी रोज़ी आप के हाथ मे नहीं।

शेरखां—तोबा ! तोबा ! यह इत्तिहाम ! यह इलज़ाम भला मैं काहे को तुम्हारी दुश्मनीकरता मैं क्यों उस कहब: पर मुकद्दमा कायम कराता अमीरहसन अब भी सम्हलो, खुदा जाने इन पाजियों ने तुम पर क्या जादू कर दिया है ज़रा आखें खोल कर देखो कि तुम्हारा कुल रुपया बर्बाद कर दिया, कल भी अपने नाम लिखवा ली और उस पर भी तुम नहीं समझे !।

अमीरहसन — मैं बेवकूफ या दूध पीता बच्चा नहीं हूं अपना नफ़ा नुकसान बख़ूबी समझता हूं, अगर मेरे नाम कल होती तो मेरे फर्नीचर और

गाड़ी की तरह वह भी कुर्क हो गई होती।

नज़ीरहसन — अमीरहसन तुम्हारे से आदमी के लिये ये ख्यालात निहायत शर्मनाक हैं, जिसका कर्ज़ा है उसको ईमानदारी से कबूल करो और जब खुदा तुम्हें इस लायक करे तो अदा कर दो, उसके मारने के लिये यह सब फिकरे एक भलेआदमीकेलिये निहायत नाज़ेबा हैं। हिदायतरसूलया मिसेज़फील जो चाहें करें उनके हालात और उनके चालचलन से कुछ बहस नहीं. मगर सैयद काज़िमहुसैन खां बहादुर मर्हूम की औलाद से ऐसे वाकात निहायत तअ़ज्जुब-खेज़ और रंजदेह हैं।

अमीरहसन — हां मज़े में सब रुपया लिये बैठे हो अबही यह ख्यालात सूझते हैं, मेरी ऐसी हालत में होते तब मालूम होता।

नज़ीरहसन — क्या मैंने तुमसे एक पैसा ज़्यादा पाया! क्या मैंने एक कौड़ी भी तुमसे छिपा डाली! फिर मैं किस बात से बमुकाबले तुम्हारे मज़े में रहा! अब्बाजानका फातहा दरूद सब मेरे सिर पड़ा कुल इखराजात खानादारी मेरी गर्दन पर पड़े मज़े में तुम रहे कि मैं? तुम अपना रुपया लेकर अलग होगये। बेशक तुमसे चलते नहीं बना, वरना चालीस हज़ार रुपया इस ज़माने में कम नहीं होता।

अमीरहसन — हां मगर तुम्हारी तरह टके गज़ की चाल मैं भी चलता तो मेरे पासभी आज रुपये खर्च न होते लेकिन यहमुझसे नहीं होसकता,अगर खुदा ने मेरे मुकद्दर में जीना लिखा है तो मैं जेन्टिलमेन होकर जीऊंगा और फेशनेबुल दुनिया में मीमवहशी न कहलाऊंगा अगर यह मेरे मुकद्दर में नहीं है तो मैं शौक से मर जाने को तैयार हूं।

नज़ीरहसन — अच्छा अब आप मेरी राय में फौरन् इटावा जाइये मिस्टर मावेल से मिलकर नौकरी की फिकर कीजिये।मुझको मावेल साहब लिखे थे और तुम्हारा हाल दर्याफ्त करते थे मुझे उमेद है कि वह तुम्हारी मदद करेंगे। यह लो चार हज़ार के नोट हैं तुम्हारी कम से कम आठ महीने की उमेदगारी के लिये काफी हैं बशर्ते कि यह भी मिसकहरामों के हाथ न पड़ जांय।

अमीरहसन— नज़ीरहसन! अगर

तुम मुझे अपनी अमीरी दिखलाया चाहते हो और इस ज़रिये से मुझे अपना ताबे करना मंज़ूर हो तो मैं तुमसे इस वक़ कहे देता हूँ कि यह ग़ैर मुमकिन है, मैं शहर में भीख मांगूगा, रोटियों के लिये खैरातखाने में रहूंगा मगर तुम्हारी अशर्फियों पर और तुम्हारी दौलत पर निगाह उठाकर न देखूंगा, बस अब मेहरबानी कर के रुख़सत हूजिये और मेरा वक़ ज़ाया न कीजिये, वह देखिये मिसेज़ह्वील आ रही हैं।

शेरखां और नजीरहसन वहां से बकमाल अफ़सोसके रुख़सत हुये और मिसेज़ह्वील ड्राइङ्गरूम में रौनक अफ़रोज़ हो गईं।

मिसेज़ह्वील — क्या तुम्हारे भाई से और तुमसे आमदरफ्त शुरू हो गई, व कब से ?।

अमीरहसन — आजही पहिले पहल आये थे और मुझे चार हज़ार रुपये देते थे कि मैं इटावे जा कर नौकरी की फिक्र करूं लेकिन मैं ने उन के खैरात लेने से इनकार कर दिया और जब तक दम में दम है उनकी दौलत की तरफ़ निगाह उठा कर न देखूंगा।

मिसेज़ह्वील — मेरी राय में तुमने यह ग़लती की, रुपया जहां से मिले और जिसतरह मिले छोड़ना न चाहिये और वह तुम्हारे भाई का माल था आखिर अब तुम अनक़रीब इटावा जाने वाले भी हो बग़ैर रुपया के क्यों कर काम चलेगा तुम्हारे ऊपर डिगरियां भी जारी हैं और सब माल असबाब इस बँगले का कुर्क है, राजा साहब ने भी मकान छोड़ने का नोटिस देदिया है, इधर मिस्टर बेरेसफोर्ड भी अपनी तनखाह के मुतकाज़ी हैं, मिस्टर ऐटकिन्स को तो मैंने खुदा २ कर के रुख़सत किया और अपने पास से उनकी तनखाह देदी अब बग़ैर रुपै के कैसे काम चल सकता है मेरी राय में तुम को चार हज़ार नज़ीरहसन से मँगवा लेना चाहिये।

अमीरहसन — खुदा के लिये तुम मुझे ऐसी सलाह न दो, मुझे यह उमेद थी के तुम मेरी मुसीबत सुनकर हमदर्दी करोगी और मुझे दो चार हज़ार रुपै की फिकर कर दोगी जिस्में मैं इटावा जा कर नौकरी की फिक्र करूं। मिसेज़ह्वील दुनिया हमेशा एकतरह

नहीं रहती और न हमेशा किसी की मुफ़लिसी या किसी का माल एक तरह क़ायम रहता है ख़ुदा चाहेगा तो बहुत जल्द मैं नौकर हो जाऊंगा और फिर यह मुसीबतें नाम को भी बाक़ी न रहेंगी।

मिसेज़ स्टील — जब तुम नौकर होगे, क्या मैं कहीं चली जाऊंगी अपना वादा याद रखना, मेरे तुम्हारे शादी का उस वक़्त इक़रार है ख़ुदा तुम्हें अभी इस लायक कर दे कि आनरेबुल मिस्टर जसटिस अमीरअली की बीवी एक तरफ़ वाइसराय की डिनरपार्टी में बैठी हों और आनरेबुल मिस्टर जसटिस अमीरहसन की लेडी दूसरे तरफ़ जलवः अफ़गन हो—ओ अमीरहसन! क्या यह गैरमुमकिन है कि तुम एक दिन हाईकोर्ट के जज हो जाओ, क्या यह गैरमुमकिन है कि एक रोज़ तुम वाइसराय के कौन्सिल के मेम्बर हो जाओ?।

अमीरहसन — आज से छ: महीना पेश्तर मेरी हाईकोर्ट की जजी मुमकिन थी, याने मैं उसी रुपये से जो सा मिल (Saw-Mill) में बर्बाद हुआ विलायत चला जाता और बैरिस्टर हो जाता और फिर एक रोज़ हाईकोर्ट की जजी का उम्मेदवार होता लेकिन अब नामुमकिन है, मुझे वकालत पसन्द नहीं और हाईकोर्ट की जजी सिवा वकीलों के दूसरे को नहीं मिल सकती।

मिसेज़ स्टील — फिर तुम किस नौकरी के उम्मेदवार हो?।

अमीरहसन— मुझे अगर तहसीलदारी या डिप्टीकलेक्टरी मिल जाय तो मैं अपने को निहायत ख़ुशनसीब समझूंगा। मिसेज़ स्टील अगर तुम मेरी मदद कर सको तो दो हज़ार रुपया मुझे कहीं से क़र्ज़ ला दो ताकि मैं फ़ौरन् इटावा रवाना हो जाऊं, अब यहां वक़्त ख़राब करना बेसूद है।

मिसेज़ स्टील— अच्छा मैं तुम्हें दो हज़ार रुपया कहीं से ला दूंगी मगर तुम अपना हिसाब मुझसे समझ लो शायद तुम्हें यह शक होगा कि मैंने तुम्हारा खा लिया सो उसका यह हाल है कि हज़ार पन्द्रह सौ के क़रीब मेरा तुम्हारे ज़िम्मे फ़ाज़िल हो चुका है, लेकिन मुझे इसकी कुछ परवा नहीं मेरा माल तुम्हारा ही है, अफ़सोस इन दिनों पापा ने विलायत से रुपया नहीं

भेजा वर्ना मुझे इस क़दर दिक़्क़त न होती।

अमीरहसन—प्यारी मिसेज़ स्टील ख़ुदा के लिये तुम यह न समझो कि मुझ को तुम्हारी तरफ़ से कोई इश्तबाह है भला जो लेडी अपना वक़्त ज़ायः करके और अपना काम छोड़कर मेरी भलाई के लिये इस दर्जे कोशिश करे वह मेरा रुपया क्यों लेने लगी? मैं तुमसे सिर्फ़ दोस्ताना मदद चाहता हूं तुम मुझे क़र्ज़ दो और मेरे पास कोई जायदाद नहीं रही, एक विकटोरिया सामिल है वह रेहन करने को तय्यार हूं।

मिसेज़ स्टील— मगर वह भी तुम्हारे नाम नहीं, बहरहाल मैं उसको रेहन कर के जिस क़दर रुपया मिलेगा ला दूंगी।

मिसेज़ स्टील वहां से घर गईं और थोड़ी देर के बाद इस चिट्ठी के साथ नोट पांच सौ रुपये का भेजा,

"डीयर मिस्टर हसन, मैंने हर जगह कोशिश की मगर कोई कामयाबी न हुई. बिलआख़िर अपना ज़ेवर रेहन कर के पांचसौ रुपये का नोट भेजती हूं, तुम फ़ौरन् इटावे चले जाओ और अगर फ़जूलख़र्ची न करोगे तो यह रुपया तुम्हारे पांच महीने के लिये काफ़ी है, सिर्फ़ एक ख़िदमतगार साथ ले जाओ और ज़्यादा नौकरों की सफ़र में ज़रूरत नहीं होती, तुम कल सवेरे की गाड़ी में यहां से चले जाओ, मैं स्टेशन पर तुम्हें ख़ुदा हाफ़िज़ कहने आऊंगी, अगर वहां तुम्हें और रुपये की ज़रूरत हो मुझे इत्तला देना मैं हर तरह तुम्हारी ख़ैरख़्वाह और वफ़ादार हूं।

तुम्हारी दिली दोस्त।

एलिस स्टील॥

बाब सत्तरहवां।

अमीरहसन की उम्मेदवारी।

मिस्टर अमीरहसन ने उन पांच सौ रुपयों को जो मिसेज़ स्टील ने भेजे पांच लाख समझे और सच्चे दिल से अपनी मेहरबान लेडी के शुकरगुज़ार थे। हिदायतरसूल और इनायतअली भी मौजूद थे जब मिसेज़ स्टील का मुर्सिला नोट पहुंचा।

अमीरहसन— हिदायतरसूल! मैं कल सवेरे इटावे जाऊंगा अब मेरा यहां रहना बेकार है।

हिदायतरसूल — मैं भी हुज़ूर के साथ चलूंगा, इतने बड़े शहर में हुज़ूर

समझा न तशरीफ़ ले जायँ।

अमीरहसन — मैं समझता हूँ अभी तुम्हारा साथ जाना फ़ज़ूल है, जब मेरी वहां कोइ शकल निकल ले उस वक़्त मैं खुद बुलवा लूंगा, इनायतअली को भी अब अपने वतन जल्द जाना चाहिये।

हिदायतरसूल — खैर जो मर्जी हो "राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा हो" मगर इस मकान में जो कुछ असबाव है इसका कुछ इन्तज़ाम करते जायँ क्योंकि मकान भी कल से खाली हो जाना चाहिये।

अमीरहसन — मेरे कुल कपड़े और ज़रूरी बरतन और ख़िदमतगार व बेरा मेरे साथ जाएंगे, गाड़ी घोड़ा और फर्निचर सब कुर्क़ है नाज़िर की इनायत से मैं उसको इस्तैमाल करता था और अब वह जाने और उसका काम, अभी उन्हे लिख देता हूं कि असबाव की हिफाज़त का बंदोबस्त करें।

हिदायतरसूल — यह असबाव इस क़ाबिल नहीं है कि हुज़ूर इसको नीलाम हो जाने दें ऐसा असबाव फिर न मिलेगा और जब इटावा में मकान की आरास्तगी का इरादा होगा उस वक़्त पछताइयेगा।

अमीरहसन — हां यह मैं ख़ुद भी समझता हूं लेकिन मेरी हालत से तुम बख़ूबी आगाह हो मेरे पास अब रूपया कहां है कि जो ट्रेल ऐन्ड को की डिगरी अदा कर के यह असबाब वागुज़ाश्त कर लूं।

अमीरहसन ने उस वक़्त नाज़िर दीवानी को एक ख़त लिख दिया कि वह अब मकान छोड़ते हैं असबाव के ज़िम्मेदार नहीं हो सकते, रातही को अमीरहसन ने अपना असबाव जो कुर्क़ी में शामिल न था बांधाबूंध और सुबह तड़के रवाना स्टेशन हुये।

मिसेज़ हील रेलघर पर मौजूद थीं और बहुत ही खंदा पेशानी से मिस्टर अमीरहसन से मिलीं।

मिसेज़ हील — मिस्टर अमीरहसन मैं तुम्हारी मुस्तैदी से बहुत ख़ुश हुई मुस्तैदी और वक़्त की पाबंदी कामयाबी की अव्वल दलील है, ख़ुदा चाहेगा तुम बहुत जल्द अपने मक़सद में कामयाब होगी।

अमीरहसन — मैं आप का निहायत एहसानमन्द, जाता हूं ख़ुदा वह वक़्त लाये जब मेरी मुहब्बत का इनाम

मुझे हासिल होसके । मिसेज़ हील, ग़ालिबन् तुम जानती हो वह कौन इनाम है ।

मिसेज़ हील—ख़ुदा वह वक़्त जल्द लाये आमीन !

अलग़र्ज़ मिस्टर अमीरहसन ने सेकेन्ड क्लास का टिकिट लिया और बहुत ही दिली जोश व ख़रोश से मिसेज़ हील को गुडबाई कहकर रेल पर सवार हुये, चन्द घंटों में इटावा पहुंचे, पहले इरादा किया कि तह-सीलदार साहब के यहां (जो उनके वालिदे मर्हूम के दिली दोस्त थे) मेह-मान हों लेकिन फिर ख़ुदा जाने क्या समझ कर डांक बँगले का क़याम मु-नासिब समझा दूसरे दिन आठ बजे मिस्टर मावेल से मिलने गये , मिस्टर-मावेल निहायत इनायत से पेश आये ।

मिस्टर मावेल—सैयद साहब आप-ने मुझसे मिलने में बहुत देर की मैं समझता था कि आप दोनों भाई फौ-रन् मेरे पास आयेंगे लेकिन मुझे पीछे को मालूम होगया कि आप के दूसरे भाई नौकरी के मुतलाशी नहीं हैं वह वकालत के इम्तिहान की तैयारि-यां कर रहे हैं ।

अमीरहसन— हां वह वालिद मर्हूम के क़दम बक़दम हैं , मेरे और उनके मिज़ाजों में और आदात में ज़-मीनो आसमान का फ़र्क़ है ।

मिस्टर मावेल— मैंने सुना था कि आप के और उनके कुछ नफ़ाक़ हो गया है क्या यह सच है ?।

अमीरहसन — नफ़ाक़ तो कुछ नहीं अलबत्ता मैं उनसे अलाहदा हो गया और अपना हिस्सा तक़सीम कर लिया ।

मिस्टर मावेल—आप यह बतलाइये कि आप मुझसे क्या मदद चाहते हैं मैं अपने दोस्त के लड़के के वास्ते जो कुछ मेरे इमकान में है करने को तैया र हूं ।

अमीरहसन—मैं ने एक सा- मिल क़ायम की थी, बदनसीबी से वह बिल-कुल चल न सकी और करीब क़रीब कुल रुपया जो मुझे मेरे वालिद के हि-स्से में मिला था ज़ाया गया, अब मेरे पास कुछ नहीं है आप जो कुछ मेरे लिये कर सकिये कीजिये, मैं हर तरह आपके इर्शाद की तामील को तैयार हूं ।

मिस्टर मावेल—मुझे यह सुनकर

निहायत अफ़सोस हुआ, मेरे अख्तियार में ख़ास कोई नौकरी नहीं है जो मैं आपको दे सकूं या जो आपके लायक़ हो, आप कम से कम कौन नोकरी मंजूर करने का क़स्द रखते हैं ।

अमीरहसन—मैं इस बारे में कोई ख़ास राय नहीं देने का जो आप मुनासिब समझें, सिर्फ़ इतना ग़ौर कीजिये कि मैं एक जेन्टिलमैन की तरह रहता हूं, मुझे इतनी तनख़ाह मिलनी चाहिये जो इज़्ज़त से बसर करने को काफ़ी हो ।

मिस्टर मावेल—(हँस कर) जेन्टिलमैन की तरह रहना निहायतही वसीउलमला है और मैं समझता हूं कि अँगरेज़ी नौकरियां जो किसी जेन्टिलमैन को इब्तदाअन् मिल सकती हैं उन की तनख़ाह हर्गिज़ इस क़दर वसीय नहीं है कि आदमी इज़्ज़त से और जेन्टिलमैन की तरह बसर कर सके, ब हरहाल मैं समझता हूं कि आप प्रोबेशनरी डिप्टीकलेक्टरी पसन्द करेंगे ।

अमीरहसन—निहायत शुक्रिये के साथ, इससे ज़्यादा मुझे हवस भी नहीं।

मिस्टर मावेल—बहुत बेहतर आप अपना मुझे यूनिवर्सिटी सार्टीफ़िकेट भेज दीजिये, मैं आपके लिये जहां तक मुमकिन है कोशिश करूंगा ।

मिस्टर मावेल हम पहले बतलाचुके हैं कि एक निहायत नेकख़्याल आली मंज़लत और हिन्दोस्तानी दोस्त हाकिम थे । उनकी क़द्रोमंज़लत भी गवर्मेन्ट में बहुत थी और उन की सिफ़ारश भी निहायत वक़अत की निगाह से देखी जाती थी, मिस्टर मावेल सैयद अमीरहसन के वालिदे माजिद के बहुत क़दीम दोस्त थे और उन्हों ने अपने दोस्त की औलाद के साथ पूरा सुलूक करने का इन्तक़ाल की ख़बर सुनतेही इरादा कर लिया था । अमीरहसन के अबतक न मिलने का शिकवः था और उन्हों ने चन्द मवाक़े पर हिन्दुस्तानी शुरफ़ा से इसका तज़किरा भी किया था ।

अब अमीरहसन को देख कर वह बहुत ख़ुश हुए और ख़ास कर अँगरेज़ी फ़ैशन के मुताबिक़ लिबास में ।

क्योंकि जहां तक लिबास और फ़ैशन का ताल्लुक था ट्रेल ऐण्ड को की बदौलत हमारे दोस्त अमीरहसन किसी से कम न थे ।

मिस्टर मावेल ने बहुत ज़ोरदार सि-

पोर्ट सैयद अमीरहसन की सिफ़ारिश में गवर्मेन्ट को भेजी और दर्ख़ास्त की कि वह जदीद क़वायाद के मुताबिक़ प्रोवेश्नरी डिप्टीकलेक्टर मुक़र्रर किये जायँ।

मिस्टर मावेलसाहब ने सिर्फ़ रिपोर्ट ही पर इकतफ़ा नहीं किया बल्कि साहब कमिश्नर हुक्काम बोर्ड और साहब चीफ़ सेक्रेटरी गवर्मेन्ट के नाम ख़ानगी चिट्ठियां भी सिफ़ारिश की भेजीं और मिस्टर अमीरहसन को इन्ट्रोडक्शन के ख़तूत देकर हिदायत की कि नैनीताल जाकर हुक्कामों से मुलाक़ात करें, मिस्टर अमीरहसन, इसमें शुबह नहीं कि इस मर्तबा निहायत किफ़ायत शेआर थे यहां तक कि डाक बँगलो में रहना और एक रुपया रोज़ किराया देना भी उन्हें नागवार था, मगर मिस्टर मावेल से अपने इफ़लास को अफ़शा करना मुनासिब न समझा और तौबनोकरके नैनीताल जाने पर आमदा हुये इटावा से बराह कानपूर लखनऊ होते हुये बरैली पहुंचे और वहां से काठगुदाम तक रेलका टिकट लिया औवल दर्जे का किराया कमायूं रेलवे में इस दर्जे गिरां है कि बेचारे अमीरहसन बावजूदे कमाल जेन्टिलमैनी इन्टरमीडियट किलास से ज्यादा टिकट लेने की जुर्रत न कर सके काठगोदाम स्टेशन पर घोड़ा किराया किया और बवजह नावाक़िफ़कारी के ख़ूब ही ठगे गये, मामूली किराया काठगुदाम से नैनीताल तक सिर्फ़ तीन रुपया है मगर हमारे दोस्त को आठ रुपया देना पड़ा, ख़ैर बरसरे फ़रज़न्दे आदम हरचे आयद बुगुज़रद, यह मुसीबत भी गवारा की शाम के वक़्त नैनीताल पहुंचे, अब फिर वहां यह सवाल पैदा हुआ कि क़याम के लिये कौन जगह मुनासिब होगी, घोड़ेवाला यह राय देता था कि म्यूनिसिपलरेस्ट हाउस में छः आने रोज़ पर एक कोठरी ले लीजिये दूकान से खाना मँगवा कर खाया कीजियेगा, बक़ौल शख़्से, रस्सी जल गई मगर ऐंठन नहीं गई, गो बेज़री और इफ़लास ने किफ़ायतशेआरी सिखलादी थी मगर जेन्टिलमैनी का नशा हनोज़ दूर नहीं हुआ था।

अमीरहसन— क्या बकता है—हम बाज़ार से रोटी मंगवा कर नहीं खा सकते – और नरेस्ट हौस में ठहर सकते हैं वहां अदने लोग और हिन्दु-

स्तानी आदमी ठैरा होगा।

घोड़ेवाला— और आप भी तो हिन्दुस्तानी हैं— हमने तो बराबर डिप्टी और तहसीलदार को रेस्ट हौस में ठहरते देखा है अच्छा फिर आप कहां जायगा।

अमीरहसन— हम नैनीताल इससे पहले कभी नहीं आये जहां भलेआदमी और इज़्ज़तदार लोग. ठहरते हों वहां हम को भी ले चलो।

घोड़े वाला— भले आदमी और इज़्ज़तदार तो सब रेस्ट हाउस में ठहरते हैं लेकिन कलेक्टर और कमिश्नर लोग ऐलबियन होटल को पसन्द करते हैं आपका जी चाहे वहीं चलिये।

घोड़े वाला एक दिल्लगी बाज़ पहाड़ी छोकड़ा था वह खूब जानता था कि ऐलबियन होटल मेमयाना है और वहां सिवा मोअज़्ज़िज़ यूरोपियन अश्ख़ास के मामूलीलोग नहीं ठहरने पाते। हमारे दोस्त मिस्टर अमीरहसन बेधड़क होटल में पहुंचे और एक कमरा मांगा, मैनेजर ने पहले अमीरहसन की सूरत बग़ौर देखी जैसेही सिर पर लाल टोपी नज़र पड़ी फौरन् समझ गया कि काला आदमी है।

मैनेजर— हम को अफ़सोस है हमारे यहां हिन्दुस्तानी आदमी नहीं ठहरने पाते क्योंकि यह होटल लेडीज़ का है।

अमीरहसन— लेकिन मैं मुहज़्ज़ब ख्याल और फैशनएबुल हिन्दुस्तानी हूं और एक जेन्टिलमैन की तरह रहता हूं।

मैनेजर— कुछ ही हो लेकिन क़वायद के ख़िलाफ हम आप को क़याम की इजाज़त नहीं दे सकते।

अमीरहसन— आप मुझे बतला सकतेहैं कि और कौन जगह मुसाफ़िरों के लिये है?।

मैनेजर—मेरे नज़दीक डांक बँगलो बहुत अच्छीजगह है, कमरा भी मुफ़ीद है और सस्ता भी है, डेढ़ मील जाकर फिर अमीरहसन को तल्लीताल की तरफ़ लौटनापड़ा,बहज़ार ख़राबी डांक बंगला पहुंचे और मुक़ीम हुये, वाक़ई हिन्दुस्तानी शुरफ़ा के लिये नैनीताल में डांक बंगला से अच्छी कोई जगह नहीं, बुड्ढे मैनेजर की यह सलाह क़ाबिल शुक्रगुज़ारी थी।

दूसरे ही दिन सुबह से अमीरहसन ने मुलाकातबाज़ी शुरू की लेकिन मैनी

ताल की मुलाक़ात और इसी खेल तो है नहीं जो एक दिन में सब से फ़राग़त हो जाती वहां औवल तो सुबह देर को होती है दूसरे पहाड़ का मामला एक का बँगला ज़मीन में है तो दूसरे का आसमान पर, तीसरे आबादी इतनी बढ़गई है कि मुश्किल से बँगलों का पता चलता है, बहरहाल पूरे आठ रोज़ रहकर अमीरहसन ने नैनीताल की सैर भी ख़ूब की और हुक्काम से मुलाक़ातें कीं, गो अमीरहसन का रुपया ख़ातिरख़्वाह ख़र्च हुआ लेकिन सैर व तफ़रीह से वह बहुत ख़ुश हुये, झील का नज़ारा, असेम्बली रूम, रानरी अस्पताल गवर्मन्ट हौस अलगर्ज़ वहां की हर शै हमारे दोस्त को पसन्द आई और बक़ौल उन्हीं के "बछिया मरी तो क्या ग़म पर भामरा तो देखा" इसी तरह कुछ रुपये ख़र्च हुये बला से नैनीताल की सैर तो नसीब हुई, सिर्फ़ सैर सपाटा ही नहीं हुआ बल्कि काम भी निकला, तमाम मोअज़्ज़िज़ हुक्काम जिस २ से अमीरहसन मिले उनके अन्दाज़, फ़ैशन, सूरत, शकल और क़ाबिलीयत से मज्नूं हुए।

अमीरहसन वाक़ई एक ख़ुशक़द व मज़बूत नौजवान आदमी थे और अँगरेज़ी लिबास उनपर बहुतही मौज़ूं था, साहब चीफ़ सेक्रेटरी बहादुर जो अपनी फ़ैयाज़ तबियत और ख़िलक़ी इख़लाक़ के लिये बेहद मशहूर थे अमीरहसनसे मिल कर बहुत ख़ुश हो के और उन्हों ने उनसे वादा कर लिया कि अनक़रीब प्रोवेशनरी डिपटी कलेक्टरी पर आपका तक़र्रुर मुश्तहिर गज़ट हो जायगा।

अमीरहसन ने बहुत २ शुक्रिया अदा किया, और अपनी कामयाबी से निहायत मसरूर हुये, उसी ख़ुशी में उन्हों ने दो ख़त तहरीर फ़र्माये। नाज़रीन बतलाइये कि वह ख़त किसके नाम थे, मिसेज़ हील और हिदायतरसूल के नाम।

ख़त अव्वल।

मिसेज़ हील तुम को हैरत होगी कि मैं नैनीताल कैसे पहुंचा मुझे इटावा में तुम्हें ख़त लिखने का बिलकुल मौक़ा न मिला, मैं मिस्टर मावेल से मिला वह निहायत बुज़ुर्गाना मोहब्बत से पेश आये और मेरी डिप्टी कलेक्टरी का रिपोर्ट कर दिया और मुझे ख़ुद यहां हुक्काम से मिलने को भेजा, मैं यहां

रोज़ से यहां हूं और करीब २ कुमला हुक्काम से मिल चुका, सब मुझसे निहायत इख़लाक से मिले और मैं साहब चीफ़ सेक्रेटरी का निहायत शुक्रगुज़ार हूं, उन्हीं ने मुझसे पूरा वादा कर लिया है और ग़ालबन हफ्ता दो हफ्ता में मेरा तकर्रुर हो जायगा, यह नहीं जानता कि किस ज़िला में तैनाती हो बहरहाल ख़ुदा ने मेरी मेहनत ठिकाने लगाई, प्यारी उस दिन की उम्मेद पर जी रहा हूँ कि जिस रोज़ हम तुम एक हो जायँगे और रुख़सत ले कर गर्मियां नैनीताल में मनावेंगे, प्यारी! नैनीताल अजीब जगह है. ख़ुदा रुपया दे और नैनीताल, यहां लकड़ी इस कसरत से है कि मुझे बे अख़्तियार अपनी विक्टोरिया सा मिल याद आती है, यहां अगर उसकी सौ दस कलें क़ायम हो जायँ तब भी लकड़ी न चुके ॥

मेरे पास अभी एक सौ पन्द्रह रुपया बाक़ी हैं जो यहां से इटावा की वापसी के लिये बहुत काफ़ी है, वहां पहुंच कर मैं अपने मुफ़स्सल हालात लिखूंगा। बहुत २ तुम्हारे दोसों के साथ मैं हूँ। तुम्हारा हमेशा हमेशा हमेशा हमेशा हमेशा निहायत दिल से चाहने वाला

अमीरहसन

दूसरा ख़त।

प्यारे हिदायतरसूल! ख़ुदा का शुक्र है कि मेरी तमन्ना बर आई और मैं अनक़रीब डिप्टीकलेक्टर होने वाला हूँ, गवर्मेंट के चीफ़ सेक्रेटरी साहब ने वादा कर लिया है, यह नहीं मालूम कि किस ज़िला में तैनाती हो, बहरहाल जब ज़्यादा तफ़सीली हालात मालूम होंगे मैं तुमको लिखूंगा, तुम को ज़रूर बुलवाऊंगा और अपने साथ रक्खूंगा, तुम हर्गिज़ २ कहीं और अपनी नौकरी की फ़िकर न करना फ़क्त ॥

तुम्हारा दिली दोस्त सैयद अमीरहसन

मिस्टर अमीरहसन नैनीताल से रुख़सत हो कर उसी रास्ता से इटावा लौटे और मिस्टर मावेल से मिल कर कुल क़िस्सा बयान किया, वह भी निहायत ख़ुश हुये ॥

मिस्टर मावेल — जब तक हुक्म आवे आवे तुम ज़ाबता फ़ौजदारी चिफ़कोर्ट ऐक्ट १८ सन् ७३ और ऐक्ट लगान पढ़ डालो और मेरे पास कचहरी आया करो, वहां किसी क़दर

काम से भी वाकफ़ियत हासिल हो जाय, तुम्हारा बाद तकर्रुर के बड़ा काम यह है कि इम्तिहान पास कर लो अक्सर लोग इम्तिहान से ग़फ़लत करते हैं और पीछे को पछताते हैं।

अमीरहसन — आप इस से इतमीनान रखिये मैं इम्तिहान के मामला में कभी न पछडूंगा, इनशाअल्लाहताला पहिली ही बार में कुल सेग़ा पास कर लूंगा।

मिष्टर मावेल — आप यहां कहां ठहरे हैं॥

अमीरहसन — डांकबँगला में॥

मिष्टर मावेल — वहां रहना वाहियात है, कोई छोटा सा बँगला किरायेपर ले लीजिये मेरे हेड क्लर्क का बँगला खाली है मैं उससे आज कह दूंगा दस रुपया माहवारी पर वह मिल जायगा, आप के लिये अच्छा है, अमीरहसन किफ़ायतशेयारी सीखो, फ़ज़ूलखर्ची बहुत बुरी बात है और क़र्ज़ से बचो, अक्सर लोग बे ज़रूरत भी क़र्ज़ चीजें खरीदते हैं और समझते हैं कि गोया दाम न देना पड़ेगा, उस वक्त तो अच्छा मालूम होता है लेकिन पीछे को वही लोग खराब होते हैं, इब्तदा में तो दो चार रुपये की चीज़ से क़र्ज़ की आदत पड़ती है और फिर रफ्ता२ सदहा हज़ारहा की नौबत पहुंचती है।

मिष्टर अमीरहसन साहब आप इस बारे में बहुत एहतियात रखिये।

अमीरहसन — बहुत बेहतर।

दूसरे दिन अमीरहसन उस बँगला में जो उनके लिये साहब कलेक्टर ने तजवीज़ किया था उठ गये।

बाब अठारहवाँ।

सैयद नज़ीरहसन वकील हाईकोर्ट

नाज़रीन! मिष्टर अमीरहसन का बहुत कुछ क़िस्सा सुन चुके और अभी बहुत कुछ सुनना बाक़ी है, थोड़ी देर सैयद नज़ीरहसन साहब के भी खुश्क हालात से जी बहलाइये, सैयद नज़ीरहसन के हालात में न कोई मिसेज़ डील हैं और न हिदायतरसूल उन्हों ने अपने वालिद नामदार के जीते के मरासिम निहायत आली होसलगी से अंजाम दिये, अपनी मां और अमीरहसन की बीबी को इताअत अपने ज़ाती आराम और आसाइश पर भी मुक़द्दम समझे, जब वे अमीरहसन

ने भाबारुगी अख्तियार की भाब्बाई मकान के तर्क सकूनत कर के बँगले में रहने लगे, उनकी बीबी की बुरी हालत थी, वह बेचारी मारे रंज के पिघली जाती थी, उसके गुलाब कैसे सुर्ख़२ गाल कुम्हलाये जाते थे, गो ज़ाहिर में कुछ न कहती थी लेकिन दिलही दिल में सख्त पज़मुर्दा भौर मग़मूम थी, उसी हालत में अपने बाप को भी एक ख़त लिखा जिसमें दबी ज़बान से कुल किस्सा कह दिया था, वह ख़त यह है —

जनाब क़िबला व काबा मैंने अर्से से कोई अरीज़ा नहीं भेजा, ख़ुदा से उम्मेद है कि आप बख़ैरियत होंगे और घर में सब लोग अच्छे और ख़ुश होंगे मेरी हालत आज कल बहुतही क़ाबिल अफ़सोस है, जिस तरह मेरे दिन कट रहे हैं ख़ुदाही शाहद है, मैं अम्माजान या उनके बड़े साहबज़ादह की शिकायत कहीं कर सकती, उनकी मुहब्बत और उनका बर्ताव मेरे साथ पहिले से भी अब हज़ार दर्जा अच्छा हो गया है, अम्मा मुझे अपनी ख़ास बेटी से कम नहीं समझतीं और वही ख़्यालात उन के बड़े साहबज़ादे के हैं, अम्माजान ने अपने ज़ेवर परसों दोनों बहुओं में तकसीम किये, क्योंकि अब वह ख़ुद सिवा कपड़ों के कोई ज़ेवर नहीं पहन सकतीं मेरे पास पूरा संदूक भेज दिया कि जो मेरा जी चाहे मैं ले लूं और जो बाक़ी रहे बाजीजान (नज़ीरहसन की बीबी) को मिलें मैंने वापस कर दिये और अर्ज़ किया कि मैं इतनी ख़ुदगर्ज़ या ज़ेवर की लालची नहीं हूं कि अपने हिस्से से ज़्यादा ले लूं, अम्माजान बहुत ख़ुश हुईं और ख़ुद अपने हाथ से सब चीज़ें तकसीम करदीं, दो अँगूठियां और एक झूमड़ मुझे मेरे हिस्से से ज़्यादा दिया, यह सब कुछ है लेकिन मैं आपही आप दुबली होती जाती हूँ और अब्बाजान मेरी ज़िन्दगी के अब बहुत दिन बाक़ी नहीं हैं, मैं समझती हूं मेरी मौत नज़दीक है, जो हाल मैं सुन रही हूं, लिखते हुये ग़ैरत आती है, जो कुछ उनके हिस्से का रुपया था अपने भाई से निहायत बेमुरव्वती से तकसीम करा लिया और मैं सुनती हूं कि सब रुपया बर्बाद कर दिया, अब सिर से पैर तक क़र्ज़े से लद गये हैं और डिगरियां हो गई हैं, एक मेम है उसी के यहां दिन भर पड़े

रहते हैं और वही जिधर फेरती है फिर जाते हैं, एक बँगला किराये पर लिया है वहीं रहते हैं और जिस रोज़ से गये यहां धोखे से भी नहीं आये। अब्बाजान! उन्हों ने अपने भाई! बिला सबब तकरार की, नाहक रंज मोल लिया और अपना नुकसान किया, ऐसा मोहब्बती भाई छोड़ कर बदवज़ा लोगों के फेर में पड़ गये हैं ख़ुदा ही अपना रहम करे अब मेरा इस घर में रहना बेमौक़ा है, जब वेही इस घर में न रहे और सब से किता ताल्लुक कर लिया तो अब उनके भाई की ख़ैरात पर मैं कैसे रहूं, अल्ला से मौत मांगती हूं और ज़िन्दगी से आरी हूं, अब्बाजान आपही बतलायें मैं यहां किसकी हो कर रहूँ, गो ज़ुबान से कोई कुछ न कहे मगर लावारिस बहू की निसबत जो ख्यालात औरतों के हुआ करते हैं ज़ाहिर हैं, आज नहीं कल नहीं परसों एक न एक दिन मेरी बेक़दरी ज़रूर होनी है, इससे आप मुझे बुलवा लीजिये, मैं अपने छोटे २ भाई बहिनों में जी बहलाऊंगी और अपना ग़म ग़लत करूंगी" ॥

मोअज़्ज़िज़ बाप ने अपनी प्यारी बेटी का ख़त पा कर बहुत अफ़सोस किया, उन्हें अपने दामाद की तरफ़ से हमेशा से नाउम्मेदी थी, उसके आसार ज़ाहिर होने लगी, यह इखतदा थी जिसकी इन्तिहा बुड्ढे ससुर की आंखोंमें फिरने लगी, वह मुतमव्वल ख़ुश हाल नेकनियत और रहमदिल बाप थे, अपनी बेटी से उन्हें कमाल उल्फ़त थी इस ख़त को पा कर निहायत रंजीदा हुये और हसब ज़ैल जवाब लिखा। यह जवाब एक लिफ़ाफ़े में बन्द कर के सैयद नज़ीरहसन साहब के पास भेज दिया।

जवाब।

मेरी प्यारी बेटी! तुम्हारा मुहब्बतनामा जिसको मुसीबतनामा कहना चाहिये मैंने पाया, जो सदमा तुम्हारी आज कल की हालत दर्याफ्त कर के मुझे हुआ बयान नहीं हो सकता। मैं इसके आसार बहुत दिन से जानता था और मुझे इस दिन का हमेशा से डर था जो आज पेश आया, सैयद काज़िम हुसेन खां मर्हूम जब तक ज़िन्दा रहे उस वक्त तक कोई ज़ुबान न खोल सकता था और सबही कहते थे कि इस घर में कभी निफ़ाक घुसने न पावेगा

लेकिन मैं नूरबख़्श की तबियत और उनके रंग ढंग देख कर हमेशा डरता था कि एक न एक दिन यह बना बनाया घर इन साहबज़ादे की बदौलत ख़ाकस्याह हो जायगा, अफ़सोस वही हुआ, मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं कि अमीरहसन ने अपना रुपया बर्बाद कर दिया, जवानी में एक मर्तबा सभी से ग़लती होती है, अगर वह अब भी इसलाह पर आ जायँ तो कुछ नहीं गया, चालीस पचास हज़ार रुपया हथेली का मैल है। आज हैदराबाद में हुज़ूर सर आस्मांजाह या नव्वाब विकारुल मुल्क बहादुर से तह-रीक मुमकिन है, लेकिन जब तक हालत दुरुस्त न हो ऐसी सिफ़ारिश कोई कैसे कर सकता है, मेरे नज़दीक भी तुम्हारा उस घर में रहना अब नामुनासिब है, जिससे तुम्हारे शौहर ने तर्क ताल्लुक़ कर दिया. चाहे कैसीही ख़ातिर नज़ीरहसन या उनकी वालिदा करें फिर भी बे दुलहे की बरात अच्छी नहीं मालूम होती, इस वास्ते मेरी क़तई राय है कि तुम फ़ौरन् वहां से चली आओ, यही ख़त नज़ीरहसन को दिखा दो, वह मुझ को उम्मेद है कि तुम को रुख़सत करने में ताम्मुल न करेंगे यहां जब तक ख़ुदा तुम पर रहम कर के तुम्हारे शौहर को राहे रास्त पर ला कर ताल्लुक़ात की बहाली न करे शौक़ से रह सकोगी और मेरी आख़िर उमर में मेरी ख़िदमत कर सकोगी, फ़क़त ॥

यह ख़त नज़ीरहसन ने पढ़कर सख़्त रंज किया, वह अपने भाई के मामलात में अगर किसी चीज़ से डरते थे तो वह यही अमर था कि किसी तरह अमीरहसन की बीबी दिलगिरफ़्ता न हों, हर तरह नज़ीरहसन ने अपनी भावज की इताअत और फ़र्मांबर्दारी की थी, इस ख़त ने उनको बहुत मायूस कर दिया, वह फ़ौरन् घर में गये और अपनी मां से कुल क़िस्सा बयान किया।

नज़ीरहसन — अम्माजान अमीरहसन भाई की बीबी क्यों इस घर से नाराज़ हैं, ख़ुदा नख़्वास्ता कोई बात ऐसी तो नहीं हुई जो उनकी ख़फ़गी का बाइस हो।

मां — नहीं बेटा मैं इस लड़की को बहू नहीं जानती बल्कि बेटी समझती हूं, अगर एक बात टोकने की भी होती है तो मैं उसमें नहीं कहती हूं

जिसमें उनके दिल पर चोट न लगी ।

नजीरहसन — फिर अम्मा उन्होंने अपने बाप को क्यों खत लिखा ? ।

मां — क्या उस खत में कोई शिकायत लिखी है ? ।

नजीरहसन — मैंने वह खत नहीं देखा जो भाभीजान ने अपने अब्बाजान को लिखा, मगर उसका जवाब मैंने अभी देखा है कि जिसमें भाभीजान को उनके बाप ने अपने पास बुलाया है ।

मां — इस में शक नहीं, जिस रोज़ से अमीरहसन ने बंगला लिया और यहां से चले गये उस बेचारी पर एक मुसीबत है, अजब हालत तारी हो गई, लहज़ः बलहज़ः सूखती जातीहै और वह प्यारी २ रंगत बिलकुल काली होती जाती है, कभी बैठे बैठे खुद बखुद रोने लगती है और कभी ऐसी बहकी बहकी बातें करने लगती है जैसे दुश्मनों के जुनून हों ।

नजीरहसन — कुछ ही हो लेकिन उनका यहां से चले जाना हम लोगों को रुसवाई का बाइस होगा, तमाम ज़माना यही कहेगा कि चार दिन भी भाई के घर निबाह न हुआ ।

मां — बेशक यह तुम्हारा कहना बजा है, मैं अपने जीते जी ऐसा गज़ब न होने दूंगी, देखो मैं अभी उनको बुलवाती हूं, ।

बेगम साहब ने फ़ौरन मामा भेजकर अमीरहसन की बीबी को बुलवा भेजा ।

मां — क्यों बेटी मुझसे क्या कसूर हुआ जो रूठी जातीहो ? तुम्हारे अब्बाजान के मर जाने से अब तमाम ज़माना मुझसे भाग रहा है, पहले तुम्हारे मियां ने मुझे जिन्दा दरगोर किया, अब सुना तुम भी अपने बाप के घर जाने वाली हो ।

बहू — अम्माजान ! भला मेरी मजाल है जो मैं आप से नाराज़ हूं आप जो मुहब्बत का बर्ताव मुझ से किया क्या मैं उसे भूल सकती हूं ।

मां — बेटी मैंने तुम्हें बहू नहीं समझा बेटी जाना ।

बहू — मैं उसकी खुद एहसानमन्द और शुक्रगुजार हूँ और कुछ आपही पर नहीं घर भर ने मुझे वैसाही जाना जैसी उम्मेद थी ।

मां — फिर बेटी मुझे क्यों छोड़े जाती हो, मैं दुनियां में अब बहुत दिन न जिऊंगी, इस चन्द रोज़ जिन्दगी

में अपनी जुदाई का दाग़ न दो।

नज़ीरहसन — भाभी साहब आप यह तो ग़ौर करें कि ऐसी हालत में जब भाई अमीरहसन मुझ से नाराज़ हैं आप का चले जाना किस दर्जा मेरी बदनामी का बाइस होगा, मैं तमाम दुनियां को क्या जवाब दूंगा।

बहू—मैं तुम्हारी निहायत एहसानमन्द हूं और जो ख़त मैंने अब्बाजान को लिखा था उसमें भी सब की शुक्रगुज़ारी तहरीर की थी।

मां — मगर बेटी ज़बानी शुक्रिये से काम नहीं चलता, अगर वाक़ै तुम हम लोगों से ख़ुश होतीं तो यहां से चले जाने का इरादा कभी न करतीं।

बहू—मगर आपही ग़ौर फ़रमाएँ कि मेरी हालत आज कल कैसी ख़राब हो रही है, हर वक़्त रंज सहते२ मैं नीमजां हो गई हूं, अगर चन्द रोज़ के लिये मैं अपने मैके हो आऊंगी तो मेरा जी बहल जायगा, मैं ख़ुद न जाती लेकिन किसी तरह मेरा रंज यहां कम नहीं हो सकता और न वह कम्बख़्त घड़ी मुझे एक मिनिट भूलती है, जिस रोज़ सब से पहिले बँगला किराया पर लिया गया यही सब सोच कर मैंने अपने बाप को ख़त लिखा था, अब्बाजान मैं आप से किसी तरह नाराज़ नहीं हूं।

मां — बेटी उस नालायक की नालायकी पर न जा अपनी सआदतमन्दी की तरफ़ देख और मेरा घर बर्बाद न कर, एक तो योंही घर कम्बख़्त काटे खाता है तुम भी चली गईं तो बस और भी बेरवनकी हो जायगी, बेटी सौ बातों की एक बात यह है अगर तुम इस घर में नहीं रहना चाहतीं तो मुझे भी लेती चलो, नज़ीरहसन जानें और उनकी बीबी जानें।

नज़ीरहसन— भाभी लो मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ, ख़ुदा के लिये अपना घर ख़ाली न करो, तुम्हारे चले जाने से मेरी सख़्त रुसवाई होगी, अगर तुम्हें यह मंज़ूर हो कि मैं भी घरबार छोड़ कर अपना रास्ता नापूं तो जहां चाहे चली जाओ और अगर यह मंज़ूर न हो तो शौक से इस घर को अच्छा हो या बुरा अपना समझो और रहो, मुझको अपनागुलाम और मुतीअफ़र्मान समझो और जब तक ख़ुदा इस मुसीबत को न टाले सब्र और शुक्र के साथ बर्दाश्त करो और मुझे बर्दाश्त करने दो, दुनियां में अगर किसी को अपने भाई से इश्क

मुमकिन है तो वह मुझे था और है, आप अपने भाई की मुलाक़ात में मैं तुम्हें उनकी निशान समझ कर अपने दिल को तसल्ली देता था और हरतरह तुम्हारी इताअत व फ़र्मांबर्दारी को मुक़द्दम रखता था, इस वास्ते मेरी अच्छी भाभी अपना दिल मज़बूत कर के यह मुसीबत बर्दाश्त करो और दुनियां में मुझे सरबुलन्द और नेकनाम रक्खो ।

मां और बेटे ने बेचारी का नातिक़ा बन्द कर दिया और जब तक उसने अपने बाप के घर आने से इन्कार नहीं कर लिया उसको जान न छोड़ी ।

नज़ीरहसन ने उस रोज से मामूल से भी ज़्यादा अपनी भावज की इताअत करनी शुरू की और कुल घरबार का इन्तज़ाम सियाह व सुफ़ेद का अख़्तियार अमीरहसन की बीबी को दे दिया गया, इस से किसी क़दर उनका जी बहल गया और जो वहशत पहिले थी वह जाती रही, इस दर्मियान में हमारे दोस्त सैयद नज़ीरहसन ने सख़्त मेहनत मुताला क़ानून में की और हाईकोर्ट की वकालत के इम्तिहान में शरीक हुये । हरचन्द बाज़ लोगों ने सवालात चुरवाने की नज़ीरहसन को तरग़ीब दी मगर उन्हीं ने ऐसी वाहियात बातों की तरफ़ कुछ तवज्जह न की और अपने क़ूवत बाज़ू पर भरोसा कर के शरीक हुये, ख़ुदा के फ़ज़्ल व करम से पहिले ही मर्तबा हाईकोर्ट में पास हो गये और आगरे में वकालत शुरू की. थोड़े ज़माना में काफ़ी तज़्रबा हासिल हो गया और वकालत भी फ़रोग़ पकड़ चली, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्यूनिसिपलबोर्ड ने अपनी २ कमेटियों का मेम्बर मुन्तख़ब किया शहर के बहुत से नामी महाजनों ने अपनी कोठियों के कुल मुकद्दमात उन्हें मुताल्लुक़ कर दिये और रफ़्ता २ मिस्टर नज़ीरहसन का शुमार शहर के नामी और सरबरआवुर्दा वकला में होने लगा और बहुत रुपया आने लगा । नज़ीरहसन का तरीक़ा सादा मिज़ाज मिलनसार और मुन्कसिर और तबियत ज़हीन और तबा थी, तक़रीरशुस्ता: और बरजस्ता थी, यही सब बातें हैं जो एक वकील के फ़रोग़ के लिये ज़रूरी होती हैं, हमारे दोस्त में बफ़ज़्लह ताला सब मौजूद थी. तरीक़ा आम्मत सैयद साहब का बअ़ैना वही था जो उनके वालिद मर्हूम का था, मुख़्तसर

से कुल मसारफ़ की मीज़ान दो सौ रुपया तक पहुँचती थी, बाक़ी कुल आमदनी बङ्क में जमा होती थी और गो ठीक तादाद किसी को मालूम न थी, लेकिन यह आम तौर पर ख़्याल किया जाता था कि थोड़ेही दिनों में नज़ीरहसन ने बहुत कुछ कमाया और जमा कर लिया है।

बाब उन्नीसवां।

सैयद अमीरहसन की इब्तदाई नौकरी।

सैयद अमीरहसन नैनीताल से वापस आ कर इटावा में मुक़ीम थे। मिसेज़ हील से बराबर ख़त किताबत जारी थी और शायदही कोई दिन ऐसा गुज़रता हो जो मेम साहबा का मोहब्बतनामा सादिर न होता हो, लेकिन हर ख़त में मिसेज़ हील यह ज़रूर ताकीद कर देती थीं कि जब तक कोई अच्छी सूरत रोज़गार की न निकले हर्गिज़२ बहालत बेकारी आगरा न आना, हमारे दोस्त को बहुत दिन इन्तज़ार करते न गुज़रे थे कि गवर्मेण्ट गज़ट ने प्रोवेशनरी डिप्टी कलेक्टरी की ख़बर छापी।

मिस्टर मावेल ने गज़ट देखतेही निहायत अच्छे अलफ़ाज़ में अमीरहसन को मुबारकबाद की चिट्ठी लिखी और इटावा के अकसर लोगों ने ख़ास कर तहसीलदार साहब ने निहायत दिली ख़ुशी से अमीरहसन को मुबारकबाद दिया। तहसीलदारसाहब इटावा उनके वालिद माजिद के बहुत क़दीम दोस्त थे और इस मर्तबा जब सैयद अमीरहसन इटावा गये तो उन्हों ने बहुत इसरार किया और अपने घर ले जाना चाहते थे मगर सैयद साहब ने पुरानी किता के मकान में जाना नापसन्द किया, तहसीलदार साहब भी चुप हो रहे और किसी क़दर रंजीदा भी हुये मगर वह बलिहाज़ अपने दोस्त के उनके साहबज़ादे से वैसीही मोहब्बत करते थे और वही बर्ताव करना चाहते थे, कि जो बुज़ुर्गों के लिये मौज़ूँ था। मगर सैयद अमीरहसन इसके ख़िलाफ़ थे, गज़ट में तक़र्रुरी शाया होते ही अमीरहसन ने इस मामले पर ग़ौर किया कि इटावा के हिन्दुस्तानी शरीफ़ों से किस क़िस्म का बर्ताव करना चाहिये। इत्तफ़ाक़ से उसी ज़मानेमें मिस्टर चार्लों एक नौवारिद सिविलियन भी

बतौर असिष्टेण्ट मैजिस्ट्रेट के तैनात थे, हमारे दोस्त ने फ़ौरन् उन्ही पर नज़र दौड़ाई और यह तै कर लिया कि जिस तरह वह रहते हैं मैं भी रहूंगा और जो उनका तरज़ माशरत है वही मेरा भी होगा। इस बारे में उन्हें निहायत उजलत थी कि एक तरीका जल्द मुकर्रर कर लेना चाहिये। मिसेज़ झील से मशवरा लेने में देर होती थी और इटावा में दूसरा सलाहकार दिखाई न दिया, आखिरकार अपने खानसामा से मशवरा किया। कासिमअली खानसामा निहायत ही पुराना खुर्राट था, खुदा जाने कितने अङ्गरेजों की नौकरी कर चुका था और मालूम नहीं कहां २ से निकाला गया था, जब मीसेज़ झील की दावत के बाद नई भरती हुई उसमें सैयद साहब की मुलाज़मत में मियां कासिमअली भी दाखिल हुये थे।

कासिमअली अपने को खानसामा नहीं समझता था बल्कि अतालीक जानता था और सच यह है कि एक मानें करके वह अतालीक था भी, छूरी कांटे से खाना उसी ने सैयदसाहब को सिखलाया था।

अमीरहसन— वेल खानसामा तुम सुना हम डिप्टी कलेक्टर हो गया।

खानसामा— हुजूर मैं ने सुना और खुदा की दर्गाह में शुकराना अदा किया, बड़े पीर की भी नयाज़ कर दी।

अमीरहसन— ऐसे पुराने फैशन् की बातें न करो हम यह पूछता है कि हम हिन्दुस्तानी लोग से कैसा बर्ताव करे?।

खानसामा— खुदावन्द यह तो कोई पूछने की बात नहीं हुजूर का सब कारखाना साहबाना है वैसा ही सब वर्ताव होना चाहिये।

अमीरहसन— बेशक यही हमारा भी राय है अच्छा कल सवेरे पूरा फैशन के मुताबिक़ इन्तज़ाम कर दो और हम भी इस बँगला में कुल सामान दुरुस्त कर देगा।

खानसामा— इस बँगले में शागिर्दपेशा नहीं है, हम लोगों को बड़ा तकलीफ है, हुजूर के लायक भी यह बँगला नहीं, जैसा बँगला चार्ली साहब का है कोई वैसाही अगर हुजूर को भी मिल जाय तो ले लीजिये।

अमीरहसन—बेशक हम भी ऐसा ही समझता है।

अमीरहसन ने दूसरी सुबह को इटावे में जितने अशखास मालकान मकान थे सब को चिट्ठियां लिखीं और बँगले की तलाश शुरू की आखिरश चालीस रुपया माहवारी पर एक कोठी किराये पर ली और उसी रोज़ तमाम अंगरेज़ी तरीक़े से उस की आराइश की गई, वहां भी शामत आमाल से एक पारसी दूकान्दार था, उसकी दूकान से कुल ज़रूरी चीजें खरीद लीं और दोही तीन दिन में निहायत पुरतकल्लुफ़ तरीके से सैयद अमीरहसन साहब वहां उठगये खानसामा और बैरा तो आगरे से साथही थे भिश्ती, मेहतर और बावर्ची वगैरह जदीद मुलाज़िम रक्खे गये, दो घोड़े और एक टमटम भी मेहरबान जी की दूकान से खरीदी गई, पांच छ: रोज़ भी न गुज़रे थे कि मिसेज़ होल और हिदायतरसूल इटावे में दाखिल हुये।

अमीरहसन ने अपने दोस्तों को निहायत तपाक से लिया और मिसेज़ होल का सचे दिल से खैर मुक़द्दम किया।

मिसेज़ होल — मिस्टर हसन! मैं निहायत दिली मसर्रत से मुबारकबाद तुमको देती हूं खुदा चाहेगा तो एक दिन तुम कलेक्टर मजिस्ट्रेट हो जाओगी और उसी दिन में समझूगी कि खुदा ने तुम्हारी लियाक़त का तुम्हें इनाम दिया।

हिदायतरसूल — यह कुछ बड़ी बात नहीं, देखिये नवाब मुहम्मद इसहाक़ खां साहब बहादुर और कुवँर भारथ सिंह साहब बराबर डिप्टीकमिश्नरियां कर रहे हैं।

अमीरहसन — हां रफ्ता २ मुझको भी अपनी कामयाबी और तरक्की की उमेद है, मिसेज़ होल मैं तुम्हारे मिलने को बहुत तर्स रहाथा। आह हा, किस क़दर बेचैन और मुश्ताक था।

मिसेज़ होल – मैं समझती थी कि तुम इस हालत में मुझसे ज़रूर मिलना चाहते होगे और सदहा मामलात में मुझसे मश्विरा लेना मंज़ूर होगा।

अमीरहसन— वाक़ई तुमने मेरे दिल की बात जान ली मैं अपने सोशल मामलात में तुमसे मश्विरा लेना चाहता था, बतलाओ अब मैं कैसे रहूं क्या वर्ताव करूं अंगरेज़ों से क्यों कर मिलूं, हिन्दुस्तानीयों से कहां तक ताल्लुक रक्खूं।

मिसेज़ होल — मेरी राय में तुमको एक पूरे जेन्टिलमैन की तरह रहना चाहिये अंगरेज़ों से बराबरी और दोस्ती का बर्ताव करना चाहिये। यह बर्ताव उसी वक्त हो सकता है जब हिन्दुस्तानियों से बिल्कुल अलहदगी रहे। मेरी क़तई राय है कि तुम किसी हिन्दुस्तानी से खिला मिला न करो और ठीक फैशन् के मुताबिक़ अपना कारखाना रक्खो।

अमीरहसन — मेरा भी यही कस्द है, देखो मैंने बगैर किसी की सलाह के अपनी कोठी कैसी सजी है।

मिसेज़ होल — निहायत खूबसूरत, अमीरहसन तुमको इन बातों में पूरा मज़ाक हासिल है और यही चीज़ है जिसको मैं प्यार करती हूं।

अमीरहसन— आगरेवाली कोठी का असबाब क्या हुआ, कुछ तुमने सुना?

मिसेज़ होल — मैं सुनती हूं कि नीलाम हो गया, अफसोस कैसा नफ़ीस सामान था।

अमीरहसन — कुछ परवाह नहीं मैं दूसरा सेट अन्करीब कलकत्ते से मँगवाऊंगा।

हिदायतरसूल — हां हुजूर को कोठी ऐसी सज देनी चाहिये कि जिसमें कमिश्नर व कलेक्टर भी देख कर अश २ करें।

मिसेज़ होल — हम को कोठी सजने के बाद दावत भी अङ्गरेज़ों को देनी चाहिये, इसी तरीके से मेल मुहब्बत मुम्किन है।

अमीरहसन — मेरा खुद कस्द डिनर देने का है।

मिसेज़होल—सिर्फ डिनर देना काफ़ी नहीं बल्कि ऐसा हेलमेल पैदा करो कि क्लब में तुम मेम्बर हो जाओ और हर जलसे में और हर पार्टी में शरीक हुआ करो, तुम को चाहिये कि स्टेशन में जितने अङ्गरेज़ और लेडियां हैं सब से एक मर्तबा मिल आओ।

अमीरहसन — बहुत बेहतर, मैं अब की तातील में सब जगह काल (Call) कर आऊंगा।

हिदायतरसूल— किसी हिन्दुस्तानी अफ़सर के यहां तो सर्कार अभी नहीं गये।

अमीरहसन — सिर्फ़ तहसीलदार साहब के यहां गया था और कहीं नहीं गया।

मिसेज़ होल — तहसीलदार का

मर्तबा इस लायक नहीं है कि तुम्हारे ऐसा जेण्टिलमैन उसके घर जाय, आइन्दा ऐसी हरकत न करना ।

अमीरहसन — वाक़ई मैंने ग़लती की, अब फिर कभी न जाऊंगा ।

मिसेज़ स्टील ने चन्द घण्टे कयाम कर के वापसी का इरादा किया और बावजूदे मिस्टर अमीरहसन के इसरार के यह उज्र पेश करके कि बे-ब्याहे साहब लोगों के यहां लेडीज़ का क़याम ख़िलाफ़ फ़ैशन् है चली गईं, मगर हिदायतरसूल ने क़याम अख्तियार किया मिसेज़ स्टील के जाते ही अमीरहसन ने स्टेशन के कुल अंगरेज़ों और मेमों से मुलाक़ात की। करीब २ सब मेहर्बानी और इनायत से पेश आये, सिर्फ मिस्टर फोर्बस इन्सपेक्टर निमक ने अपनी बीबी के मिलाने से इन्कार किया। जिस रोज़ अमीरहसन उन से मिलने गये और दो कार्ड भेजे वह ख़ुद निकल आया और दफ्तर के कमरे में मुलाक़ात की ।

अमीरहसन—मैं मिसेज़ फ़ोर्बस से भी मिलना चाहता हूं ।

फोर्बस — आप की शादी हो चुकी है ?

अमीरहसन — हां मेरा ब्याह हो चुका है ।

फोर्बस — पहिले आप अपनी बीबी से मुझे मिला लीजिये उसके बाद हमारी मेम साहब से आप मिलियेगा ।

अमीरहसन — हमारे यहां औरतें बेवक़ूफ़ी और जहालत के सबब से पर्दे में रहती हैं इस वजह से मेरी बीबी आपके सामने नहीं आ सकती और न वह यहां मौजूद है ।

फोर्बस — फिर साहब हमारी मेम साहब आप के सामने क्यों कर आ सकती हैं ? आपको यहां आये कितने दिन हुये ? ।

अमीरहसन — थोड़ा अर्सा हुआ।

फोर्बस — आप कलेक्टर साहब और उनकी बीबी से मिले ? ।

अमीरहसन — अभी नहीं, पादरी साहब और उनकी मेमसाहबा से मिला और मिस्टर डिमानिटी हेड क्लार्क और उनकी मेम से मिला ।

फोर्बस— अच्छा आप रुख़सत हों।

अमीरहसन फोर्बस की मुलाक़ात से रंजीदा हुये और उस के बर्ताव से निहायत नाराज़ । वह यह समझे कि फोर्बस ने शायद इस वजह से ऐसी

कज-इखलाकी की कि अब तक वे कलेक्टर साहब की मेम से नहीं मिले।

अमीरहसन फौरन् कलेक्टर साहब के बँगलेपर पहुंचे और मुलाकात की।

कलेक्टर — वेल सैयद साहब कहिये आप काम से वाकिफ हो चले?

अमीरहसन — हां काम में मुझे कोई दिक़्क़त नहीं मालूम होती, आपने इनायत से जो मुहर्रिर तैनात कर दिया है वह भी होशियार और अच्छा आदमी है।

कलेक्टर — आपको मैंने कसदन् ज़्यादा काम नहीं दिया ता कि आपको कानून याद करने का पूरा वक़्त मिले, आपको इम्तिहान के लिये पूरी कोशिश करनी चाहिये, डिप्टी कलेक्टरी के लिये सब से ज़्यादा इम्तिहान ज़रूरी चीज़ है।

अमीरहसन — हां इमतिहान के लिये मैं पूरी कोशिश कर रहा हूं। मिस्टर माविल! मैं एक इनायत आप से चाहता हूं, मैंने अबतक मिसेज़ माविल को नहीं देखा आप मुझ को उन से इन्ट्रोड्यूस कर दीजिये, यहां की कुल लेडियों की वह पेशवा हैं इसलिये मुझे सब से पहिले उनसे मिलना चाहिये।

कलेक्टर — मैं अभी अपनी बीबी से जा कर पूछता हूं; वह आपसे मिल कर खुश होंगी।

कलेक्टर साहब ने अपनी बीबी से जा कर अमीरहसन का तज़किरा किया।

कलेक्टर — मेरा एक हिन्दुस्तानी दोस्त डिप्टी कलेक्टर तुमसे मिलना चाहता है, तालीमयाफ्ता और अङ्गरेज़ी किता का आदमी है।

मेम - डियर! मुझे वह दावत अब तक भूली नहीं खुदा के लिये अब इन लोगों को ज़्यादा सिर न चढ़ाओ।

कलेक्टर — लेकिन यह नौजवान निहायत संजीदा और खुश इखलाक़ शख़्स है।

मेम — तुम उन लोगों की भी तो तारीफ़ करते थे जिन्होंने मेरा गुलदस्ता तोड़ डाला।

कलेक्टर — यह शख़्स वैसा नहीं है, मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं।

अलगर्ज़ मेमसाहबा अमीरहसन से मिलने पर रज़ामन्द हुईं और हमारे दोस्त ड्राइङ्ग रूम में बुलाये गये। मेम साहब ने निहायत इखलाक़ से हाथ मिलाया और अमीरहसन के तरीक़ा

व आदात पसन्द किये, चाय मँगवाई और अमीरहसन की बातों से बहुत खुश हुईं।

मेम — मैं हर्गिज़ यह तवक्का नहीं करती थी कि आप ऐसे अच्छे ख़्यालात के नौजवान होंगे, मेरे शौहर ने मुझसे आप की बहुत तारीफ़ की है।

अमीरहसन — मैं मिष्टर माबेल का निहायत एहसानमन्द हूँ, वह मेरे साथ बहुत मेहर्बानी रखते हैं।

मेम — आप चाह पियेंगे ?।

अमीरहसन — बहुत २ शुक्रिया मैं सिपहर की चा का आदी भी हूं।

मेमसाहब ने खुद अपने हाथ से चाय बना कर एक प्याली अमीरहसन को दी और अमीरहसन ने फैशन् के लेहाज़ से बहुत फीकी चाय मांगी।

वह जलसा खैरियत से गुज़रा, चलती वक्त मेमसाहब ने अमीरहसन को दूसरे दिन शाम को खाने पर आने को कह दिया।

अमीरहसन निहायत शुक्रगुज़ार और खुश२ लौटे। सच यह है कि मिष्टर माबेल अमीरहसन से बुज़ुर्गाना बर्ताव करते थे और हर तरह अमीरहसन की इज़्ज़त अफ़ज़ाई और कामयाबी उनको मद्देनज़र थी। अपनी मेमसाहब की बदमिज़ाजी के लेहाज़ से अब तक अमीरहसन को खाने पर कलेक्टर साहब ने नहीं बुलाया था मगर आज मेम साहब ने खुदही अमीरहसन पर इनायत दिखलाई, इससे मिष्टर माबेल भी अज़हद खुश हुये।

मेम—डियर, मैंने तुम्हारे दोस्त को डिनर के लिये कह दिया है, यह आदमी बहुत अच्छा मालूम होता है, मामूली हिन्दुस्तानियों की तरह ग़ैरमुहज़्ज़ब नहीं है।

कलेक्टर — मैं बहुतही खुश हुआ यह लड़का मेरे दोस्त का बेटा है और इस वजह से मुझे निहायत अज़ीज़ है, मुझको हैरतहै कि उसने थोड़ेही दिनों में अङ्गरेज़ी आदाब कैसे अच्छे सीख लिये।

मेम — और कपड़े कैसे अच्छे पहनता है, मैं समझती हूं यह इंगलेण्ड हो आया है।

कलेक्टर — नहीं इङ्गलिस्तान कभी नहीं गया, मगर मैं खुश हूं कि तुमने एक अच्छी राय उसकी निस्बत कायम की।

यहां अमीरहसन ने आतेही हिदा-

यतरसूल को सब हाल कह सुनाया ।

अमीरहसन—भइ वल्लाह ! कलेक्टरकी जोरू निहायत नेक औरत है, इस तरह मुझसे पेश आई कि मैं तारीफ़ नहीं कर सकता ।

हिदायतरसूल — कलेक्टर भी तो अच्छा आदमी है, हुजूर से बुजुर्गाना बर्ताव रखता है ।

अमीरहसन — अजी मेम बड़ी बदमिज़ाज है मगर मुझसे खास इनायत से पेश आई; चाय पिलवाई और कल खाने पर बुलाया है ।

हिदायतरसूल—हां ? लाइये कूरमें वाला हाथ ! अब हुजूर भी एक दिन निमकख्वार बना दें ।

अमीरहसन — हां मिसेज़ हील से इस बारे में मशविरा लेके कार्रवाई की जावेगी, मगर एक निमकवाले ने बड़ी रुखाई की । कमबख्त ने न मेम को बुलाया और न किसी किस्म का इख्लाक किया ।

हिदायतरसूल — शायद हुजूर को समझा नहीं वर्ना निमकवाले की हुजूर के आगे क्या हकीकत है ।

अमीरहसन — अजी समझा क्यों नहीं, आदमी ही शरीर मालूम होता है, मुझसे कहता था कि अपनी बीबी को मिलाओ तब मैं अपनी मेम को मिलाऊंगा ।

हिदायतरसूल – बड़ा दिल्लगीबाज़ आदमी है, हुजूर भी एक दिन मेमवाले हो जायँगे वह वक्त भी दूर नहीं है ।

अमीरहसन—तुम्हारी भी क्या बातें हैं भला मुझसे कौन ब्याह करेगा ? ।

हिदायतरसूल—वही जो जान व माल से हुजूर पर फ़िदा हो रही हैं ।

अमीरहसन — क्या वाकई मिसेज़ हील मुझसे शादी करने पर आमादा हैं ? ।

हिदायतरसूल – आप भी खूब बातें करते हैं, वह हुजूर पर जान दिये देती हैं और जिस दिन से हुजूर की डिप्टी कलेक्टरी सुनी है हलके २ अपना कुल सामान कर रही है, जैसेही अपना इन्तज़ाम कर चुकेंगी हुजूर से शादी करेंगी ।

अमीरहसन — मुझको मिसेज़ हील से सख्त मुहब्बत है, लेकिन चन्द वजह से ज़बान पर नहीं ला सकता और मुझे डर है कि इसके अफ़शां में हुक्काम मुझसे शायद नाराज़ होजायँ ।

हिदायतरसूल — हजूर की नातजरबाकारी और खामी को भी एक दलील है, भला हुक्काम अंगरेजी नाराज़ क्यों होने लगे, आप खुद वाकिफ़ हैं, मिस्टर जेस्टन, अमीरअली, कुंवर हरनामसिंह, मिस्टर बादशाह यह सब जेन्टिलमेन मेम ब्याह लाये, हुक्काम इनसे निहायत इज्ज़त से पेश आये और जनाब ऐसी शादी ब्याहों में एक पोलिटिकल मसलहत भी है अगर हिन्दुस्तान में ब-कसरत हिन्दुस्तानी शुरफ़ा मेमों से शादी कर लें तो बहालत ग़दर या बग़ावत अङ्गरेजों की हिन्दुस्तानमें एक किस्मकी मज़बूती हो जायगी। हुजूर मेम से शादी करना एक किस्म की खैरख्वाही सरकार है।

अमीरहसन—वाक़ई बहुत मज़बूत दलायल से यह मसला तुमने तै कर दिया, अब मैं आज से अपने दिल को पूरे तौर पर मिसेज़ हील से शादी करने को आमादा करता हूं।

हिदायतरसूल — बिसमिल्ला, शौक से; वल्ला चिराग़ ले कर ढूंढ़ियेगा तो ऐसी परीज़ाद ज़ी-शान और आलीखान्दान लेडी न पावेगा।

बाब बीसवां।

मिस्टर ऐटकिन्स।

नाज़रीन! मिस्टर ऐकिन्स से नावाकिफ़ नहीं, यह वही बुजुर्ग हैं जिनको मिसेज़ हील सा-मिल की मनेजरी पर कलकत्ते से नौकर रख लाई थीं और और जिस से मिसेज़ हील ने कलकत्ते में शादी का वादा कर लिया था, यह बेचारा जिस शौक से आगरे आया था वैसीही मायूसी और हसरत से लौट गया। यह सिर्फ मनेजरी के लालच में नहीं आया था, बल्कि एक रोज़ हसीन मिसेज़ हील का मालिक और उनको कुल दौलत का काबिज़ होने को आया था, यह सख्स बालुतबा कोई शरीर आदमी न था बल्कि मिसकीं और किसी कदर बेअकल था, मिसेज़ हील के वादे को उसने उतनाही जल्द यक़ीन कर लिया था जितना जल्द मिसेज़ हील ने उसे भुला दिया।

जब तक वह आगरे में रहा बावजूद अमीरहसन की आमद रफ्त और मिसेज़ हील की बेएतनाई के वह दिल शिकस्ता यार बखुर न था, उसे यह तवक्का हो गई थी कि मिसेज़ हील किसी न किसी दिन अपना वादा ज़-

रूर पूरा करेंगे उसे यह ख्याल था कि मिसेज़ स्टील सिर्फ़ अमीरहसन के सबब से आज कल ज़रा अलग २ रहती हैं मगर जब मिसेज़ स्टील ने उसे साफ़ जवाब दे दिया उस वक्त अलबत्ता उसकी तमाम उम्मेदें मायूसी से बदल गईं उसका बक़ौल उसी के बनावनाया घर एक पलक मारतेमें बिगड़ गया कि—

इस तरह से जिसकी टूटी हो उमेद। ना उमेदी उसकी देखा चाहिये॥

मिस्टर ऐटकिन्स को यह ताज्जुब था कि एकबारगी मिसेज़ स्टील सी बामुरौव्वत खुशख़ल्क और मिलनसार औरत क्यों उनसे इसतरह फिर बैठी कि गोया कभी पहिले की जान पहचानही न थी और "इन तिलों तेल ही न था। गोया हमसे कुछ मेलही न था" वह जाने को आगरे से तो चले गये लेकिन बक़ौल शायर—

"महफ़िले यार से उठने को उठे हम लेकिन। दर्द की तरह उठे गिर पड़े आंसू की तरह॥"

उन्हें मिस्टर गर्नर का राज़ किसी कदर मालूम होगया था और वह यह भी जानते थे कि अमीरहसन और मिसेज़ स्टील से गाढ़ी दोस्ती है, अगर मेमसाहब ने उससे कलकत्ते में खुद वादा न किया होता तो शायद उसको रश्क या रक़ाबत का जनूं न पैदा होता, मगर शिकवा था तो यही और तमाशा था तो यही कि आपही वादा करें और खुदही मुकर जायँ, आपही उमेद देकर खुदही मायूस कर दें।

मिस्टर ऐटकिन्स गो शरीर या बदबातिन शख्स न था मगर यह रंज उसे ऐसा पहुँचा था कि अगर उसे कोई मौक़ा मिल सकता तो बदला लेने में कुछ भी पस व पेश न करता। वह कोई खजिस्ता हाल आदमी न था, इस वजह से महज़ बदला लेने की फ़िक्र में एक घंटा भी अपने वक्त का वह सर्फ़ नहीं कर सकता था और मजबूर उसे नौकरी की तलाश में कलकत्ते को वापस जाना पड़ा, वहां पहुंचे बहुत दिन न गुज़रे थे कि एक कंपनी जिसका असली काम इमारत और इञ्जीनियरी से मुताल्लिक था कलकत्ते में कायम हुई, वहां बहुत से जदीद मुलाज़िमों की ज़रूरत थी, मिस्टर ऐटकिन्स ने भी दर्खास्त भेजी और इत्तफ़ाक़ से फ़ौरन् मंज़ूर भी होगई, उसी कारखाने में

मिस्टर जान्स नामी एक शख़्स मुलाज़िम थे, बर्मा से बहुत कुछ रुपया कमा लाये थे, जान्स आदमी सीधा और ख़ुशइख़लाक था, ऐटकिन्स से और उससे दो ही चार दिन में बहुत दोस्ती होगई, यहां तक कि दोनों एक ही जगह और एकही साथ रहने लगे।

एक रोज़ ऐटकिन्स और जान्स दोनों अपने कमरे में बैठे खाना खा रहे थे, एक छोटे से मेज़ पर साफ़ सुथरी चादर बिछी हुई थी ब्राण्डी की बोतल बीच में रक्खी थी और दोनों दोस्त अच्छी तरह खा पी रहे थे।

ऐटकिन्स — जान्स! कहो बर्मा मुल्क कैसा है?।

जान्स — बहुत अच्छा मुल्क है मगर आब व हवा बाज़ मुकामात को अच्छी नहीं।

ऐटकिन्स — तुम वहां किस ज़रिये से गये थे।

जान्स — (एक सर्द आह भर कर) "दिल में एक दर्द उठा, आंखों में आंसू भर आये, बैठे २ हमें क्या जानें क्या याद आया।" ऐटकिन्स! ख़ुदा के वास्ते और बातें करो, बर्मा का ज़िक्र जाने दो मुझे सख़्त रंज होता है।

ऐटकिन्स—क्यों? क्या वहां किसी से ठेस लग गई थी, यह तो आज नया गुल खिला।

जान्स — किसी ब्याहे हुये आदमी के निस्बत ऐसी बदगुमानी नहीं करनी चाहिये, ऐटकिन्स यह किस्सा ग़म से भरा है तूल न दो, और बातें करो।

ऐटकिन्स — ब्याहे हुये आदमी की एकही कही, क्या तुम्हारी शादी हो चुकी है?।

जान्स — हां, लेकिन बदनसीबी से शादी के बाद बहुत ही थोड़े दिन बीबी के साथ रहने का इत्तफ़ाक़ हुआ और कुछ ऐसे मामलात पेश आये कि फ़ौरन् बर्मा चला जाना पड़ा।

ऐटकिन्स — मैं जब तक कुल किस्सा न सुन लूंगा हर्गिज़ तुम्हारी जान न छोड़ूंगा। बताओ मिसेज़ जान्स कहां हैं और उनकी सूरत कैसी है?।

जान्स — सूरत और हुस्न का हाल हमसे न पूछो।

सब्ज़ रंगत पै अजब नूर है अल्ला २,
चेहरा भी शम्सा-नूर तौर है अल्ला २,
ख़ुद तबियत भी बहुत दूर है अल्ला २,

क्या भला हुर का मज़कूर है अल्ला २,
खूबसूरत है गुलेबाग़ जवानी है वह,
हुस्न में पहिलेपहल युसुफ़ सानी है वह,
चाल वह कबकदरी पांव पड़े आ २ कर
जी उठें मुर्दे जो तुर्बत को लगावे ठोकर
सहर करती है यह तकरीर लबेशीरी पर
ज़हर खाते हैं इन्हीं बातोंपर सब जादूगर
मुर्दा आवाज़ सुने उसकीतो ज़िन्दाहोजाय
सीखे तकरीर ज़िन्दा तो मसीहा होजाय

ऐटकिन्स यह न समझना मैं अपनी बीबी की तारीफ़ कर रहा हूं, बखुदा ऐसी परी और गुलअन्दाम औरत मेरी नज़र से नहीं गुज़री।

ऐटकिन्स—यह तो बतलाओ वह हैं कहां ?

जान्स — हाय इसका क्या जवाब दूं, कोई जगह कोई शहर ऐसा नहीं बचा जहां मैं अपनी प्यारी को न ढूंढ़ आया हूं लेकिन उसके कम्बख्त बाप ने मालूम नहीं मेरे यूसुफसानी को कहां बेच डाला, मालूम नहीं किस कूयें में कैद करा दिया न उसी का पता लगता है और न उसकी मह्जबीं लड़की का।

ऐटकिन्स — पहिले यह बताइये कि आपने मिसेज़ जान्स को कहां छोड़ा ? और क्यों छोड़ा ?।

जान्स — भाई सच्ची बात तो यह है कि मिसेज़ जान्स का बाप और वह खुद दोनों निहायत फ़ज़ूलखर्च और ज़रपरस्त थे, शादी होने के बाद ही मुझे तरह २ के ताने और मेरी मुफ़लिसी के तज़किरे निहायत बेरहमी से मेरे सामने करनेलगे। मैं यह अहद करके कि जब तक खुदा मुझे रुपया न देगा अपनी बीबी के साथ न रहूंगा और तमाम उमर हसरत व नाउम्मेदी में काट दूंगा अपनी बीबी को उसके बाप के पास छोड़ कर बम्बई चला गया। वाक़ई मैंने सख्त नामर्दी की कि अपनी प्यारी बीबी को बे सरो सामान छोड़ कर गुस्से की हालत में चल दिया। बम्बई में खुदा ने मुझे मेरी तवक्का और लियाकत से ज्यादा दिया और जब मेरे पास काफ़ी सरमाया जमा हो गया मैं अपनी बीबी की तलाश में निकला। नौकरी छोड़ दो हिन्दुस्तान वापस आया, हर जगह जहां २ ख्याल था अपनी बीबी को ढूंढ़ा लेकिन बेसूद। मैंने यह भी ग़लती की कि बम्बई से कोई खत न लिखा। मालूम नहीं वह बेचारी मुझ को ज़िन्दा जानती है

या मुर्दा ।

ऐटकिन्स — तुम्हारे ससुर का क्या नाम था ? ।

जान्स — मिष्टर गर्नर ।

ऐटकिन्स — और वह कहां रहता था ? ।

जान्स— चुनार में, हाय कैसी प्यारी जगह चुनार है ।

ऐटकिन्स— (उछल कर) आह हा ! गर्नर को मैं खूब जानता हूं; बहुत दिन नहीं हुये जब वह आगरे में मिसेज़ ह्वील के यहां नौकर था, मुझसे किसी ने कहा था कि वह मिसेज़ ह्वील का कोई रिश्तेदार है मगर वह अपना नाम वहां पर बेसफर्ड ज़ाहिर किये हुये था ।

जान्स — मिसेज़ ह्वील कौन ? ।

ऐटकिन्स — आगरे में बहुत मुतमौअल और निहायत खूबसूरत एक लेडी है, मैं भी चन्द रोज़ उनके साथ रहा लेकिन अफ़सोस यह है कि आखिर में उसने मुझसे दग़ा किया, जो तारीफ़ हुस्न व जमाल की तुम मिसेज़ जान्स की कर रहे हो वह्ना मिसेज़ ह्वील भी वैसीही परीज़ाद है । देखो मैं तुम्हें उसकी तस्वीर दिखाता हूं ।

यह कह कर मिष्टर ऐटकिन्स ने अपने करम खुरदा पोर्टमैण्टो से एक अलबम निकाला और उसको खोल कर मिष्टर जान्स के सामने रखदिया । जान्स ने ग़ौर से वह तसवीर देखी और देखते ही बेहोश हो गिर पड़ा । बेचारा ऐटकिन्स उस वक़्त एक अजीब हालत में था ।

जान्स की बीमारी ने उसे सख्त तरद्दुदमें डाल दिया, उसे हैरत थी कि इस तसवीर में ऐसा क्या सेहर था कि जिसने जान्स के होश व हवास छीन लिये, ऐटकिन्स ने जो ज़रूरी तदबीरें ग़श के दफ़ा करने की जानता था कीं मगर कुछ भी फ़ायदा न हुआ, आखिर कार डाक्टर बुलाने की ज़रूरत हुई । डाक्टर महेन्द्रनाथ चटर्जी पड़ोस में एक पेनशिनयाफ्ता असिस्टेण्ट सार्जन रहा करते थे, आदमी तजरुबाकार और अपने फ़न में बहुत नामवर और लायक थे, ऐटकिन्स ने उन्हें बुलाने को आदमी भेजा शामत अमाल से उन्हीं दिनों उस महल्ले में एक जगह फ़ौजदारी हुई थी, बाबू साहब भी मारपीट के वक़्त मौजूद थे, और कुल किस्सा देखा था । मुद्दई ने प्रेसीडेंसी मैजिस्ट्रेट

के इजलास में बाबू साहब को बतौर गवाह के तलब करा दिया, मुलज़िम आदमी शरीर था उसने बाबू साहब को मना किया कि हमारे खिलाफ़ गवाही न दो, लेकिन ईमान का मामला था जो कुछ देखा था कैसे न कहते, चार ना चार अदालत में जा कर मुलज़िम के खिलाफ़ कहना ही पड़ा उस कम्बख़्त ने ऐन कचहरी के हाते में बाबू साहब को धमकाया।

मुलज़िम — बाबू जी गवाही तो दी है मगर याद रखना इसी अदालत में मुद्दई बनके न आवो तो मेरा ज़िम्मा।

बाबू — भाई साहब हमारा कोई कसूर नहीं। मुद्दई साला हमको साखी बदा है, हम लाचारी से आया।

मुलज़िम — अजी ऐसी बातें हम ने बहुत देखी हैं। आप ख़ुशी से आये या लाचारी से, हमारा काम तो तमाम कर गये। इसका बदला न लिया तो सही।

इन मुख़्तसर अलफ़ाज़ ने बाबू साहब को इस दर्जा खौफ़ज़दा कर दिया था कि उन्हों ने रात को आमदरफ्त या बग़ैर दो चार आदमी साथ लिये घर से निकलना तर्क कर दिया था। हरचन्द लोग समझाते थे कि एक तनहा शख़्स क्या कर सकता है, मगर डाक्टर साहब को किसी तरह इतमीनान न होता था। लार्ड मेओ का कत्ल व जेनरल अज़ीम उद्दीन खां का मारा जाना यह कुल वाक़ात उन के नोक-ज़बान थे और बार २ यही कहते थे कि जब इतने बड़े २ आदमी दुश्मन के हाथ से बच न सके तो मैं बेचारा किस शुमार और कितार में हूँ।

अलगर्ज़ जान्स के इलाज के वास्ते ऐटकिन्स ने उन्ही हज़रत को चिट्ठी लिखी, उन्हों ने साफ़ जवाब दिया कि हम रात के वक्त घर से बाहर नहीं निकलते, उस वक्त बहुत रात भी नहीं गई थी मगर ख़ौफ़ के भूत ने इस दर्जा डरा रक्खा था कि मोअज़्ज़िज़ डाक्टर को किसी तरह घर से बाहर कदम रखने की जुर्रत न होती थी।

ऐटकिन्स बेचारा ख़ुद दौड़ा हुआ गया, मरीज़ की हालत बयान की, बहुत कुछ मिन्नत व आर्जू की मगर वह कुछ भी असरपज़ीर न हुई।

बाबू साहब—साहब अगर दिन का वक्त होता तो हम बग़ैर फ़ीस के आप

जहां कहता चला आता, मगर रातको हम नहीं चल सकता वह शाला ज़रूर हमारे पर असाल्ट (Assault) करेगा।

ऐटकिन्स — मगर मैं आपके साथ हूँ कोई कुछ नहीं कर सकता, आप ज़रा भी ख़ौफ़ न करें।

बाबू साहब — नहीं साहब आप अकेला क्या कर सकता है उसके पास बहुत बदमाश लोग है।

ऐटकिन्स — मैं आप को दो अशर्फियां फ़ीस देने को आमादा हूं, गाड़ी में बन्द कर के ले जाऊंगा, किसी तरह का खटका नहीं है।

बाबू साहब — आप हमको दोसौ अशर्फी दीजिये तब भी हम नहीं जा-गा। हमारा जान हम को बहुत प्यारा है, रुपया हथेली का मैल है, हम जि-येगा तो बहुत कुछ कमायेगा।

बेचारा ऐटकिन्स मायूस हो कर फिरा, बंगालियों की मर्दानगी का एक ताज़ा सबूत उसके हाथ आया, थो-ड़ी दूर चला था कि खुदबखुद एक फ़िकरा उसके ज़ेहन में आया और उ-सने सोचा कि बाबू साहब की कम-ज़ोरी से हम को भी फ़ायदा उठाना चाहिये, फ़ौरन् लौटा।

ऐटकिन्स — बाबू साहब! अभी मेरे साथ चलिये मैं हुक्म देता हूं, वह बदमाश तो शायद लाठी डन्डे ही से काम लेगा और मैं इसी वक्त तमंचे से आप का काम तमाम किये देता हूं मेरा एक दोस्त मर रहा है मुझे इस वक्त अपनी या किसी की जान की कुछ पर्वाह नहीं है।

यह सुनना था कि बाबूजी के हवास गुम हो गये, हरचन्द खुशामद की लेकिन ऐटकिन्स ने जो गज़बनाक चेहरा बनाया था कुछ भी उसमें फ़र्क न आया, आख़िर को बाबू साहब यह कहतेहुये कि यह शाला बड़ा मुश्किल कावात निकाला, एकतरफ लाल चेहरा मारने को तैयार दूसरी तरफ़ उस बद-माश का डर, ओ गाड हम क्या करें!" हमराह हुये, बँगले पर आ कर जान्स को देखा, ज़रूरी दवाइयां उसी वक्त मँगवाई गई, लवेन्डर सुंघाया, सिरपर ठढा पानी छोड़ा, पैर धुलाये, चन्द मि-निट में जान्सको होश आगया। डाक्टर ने ऐटकिन्स को समझाया कि रात भर निहायत आराम और खामोशीकी हालत में मरीज़ को छोड़ देना चाहिये किसी किस्म की तरद्दुद आमेज़ या खु-

तरगाक बात उसके सामनेनहीं करनी चाहिये. थोड़ीसी सुलानेवाली दवा भी जान्स को पिलादी और खुद रुखसत हुये।

डाक्टर — साहब! जिस तरह आप हम को लाया है उसी तरह हमको आप पहुंचा दीजिये।

ऐटकिन्स— हम इस वक्त आप के साथ नहीं चल सकता. आप गाड़ी पर आराम से चले जायें और यह अपनी फ़ीस लीजिये।

डाक्टर—ओ साहब ! ऐसा गज़ब न कीजिये, हमारा जान बड़े खतरे में है गाड़ीवाला शाला उस बदमाश का बड़ा दोस्त है, रास्तामें हमको ज़रूर मारेगा।

ऐटकिन्स थोड़ी देर चिढ़ाने के लिये जाने से इनकार करता रहा, आखिर जिस तरह लाया था उसी तरह बाबू साहब को उनके घर पहुँचा आया।

बाब इक्कीसवां।

खाकी साहब बहादुर।

अमीरहसन अपने कलेक्टर और उन की मेमसाहबा के बहुत शुकरगुज़ार थे और मियां बीबी दोनों उनसे निहायत इखलाक और मुहब्बत से पेश आते थे, अक्सर डिनर पर बुलाते और जिसतरह एक जेन्टिलमैन से बरताव करना चाहिये वही उनसे करते थे। मिस्टर मावेल की इस इनायत ने अमीरहसन का मिजाज बिलकुल बिगाड़ दिया था हिन्दुस्तानी उनकी निगाह में सख्त ज़लील और निहायत ग़ैरमुहज़्ज़ब थे। तहसीलदार का क्या ज़िकर हिन्दुस्तानी डिपटी कलेक्टरों से भी मिलना अमीरहसन को नागवार था।

हरवक्त वह इसी फ़िक्र में रहा करते थे कि अंगरेज़ों से उनकी पूरी पूरी आव भगत हो, अगर किसी अंगरेज़ के यहां कोई दावत या जलसा होता और अमीरहसन न बुलाये जाते तो उनको इस कदर सदमा होता था कि जैसे किसी का कोई अज़ीमउश्शान नुकसान हो जाता हो, अगर वह किसी के घर मिलने जाते और वह उनसे इत्तफ़ाकिया ड्राइंगरूम में मुलाकात न करता तो वह इस दर्जा मग़मूम होते थे कि जिसका अन्दाज़ा नाज़रीन मुश्किल से कर सकते हैं। सिवा मिस्टर मावेल के और अंगरेज़ों ने कोई तवज्जह अमीरहसन की तरफ़ नहीं की बल्कि आम तौर पर उनको

नज़र हिकारत से देखते थे हर जलसे में यही तज़किरा रहता था, हिन्दुस्तानी अपनी तरफ़ अमीरहसन को बुरा कहते थे और अँगरेज़ अपनी तरफ़।

अँगरेज़ों के ख्यालात जैल की गुफ्तगू से मालूम हो सकते हैं।

एक रोज़ मिष्टर फोर्बस इन्सपेक्टर निमक के यहां क्रिकेट था, स्टेशन के सब अंगरेज़ और मेमें जमा थीं अमीरहसन का किसी बात पर तज़किरा निकला वह खुद उस जलसे में शरीक न किये गये थे।

एक— आजकल एक हिन्दुस्तानी यहां आयाहुआ है ख्वाहमखाह अपनी सोहबत वह हमलोगों पर डालता फिरता है।

दूसरा — हा हा हा वही मिष्टर मावेल का अवुर्दा!।

तीसरा — अजब शख्स है न वक्त देखता है न बेवक्त जब देखो विज़िटिंग सूट पहने हुये मुलाकात को डटे हैं और फिर तमाशा यह कि ड्राइंग रूम में मुलाकात न करो तो रंजीदा होते हैं, लेडीज़ से न मिलाओ तो खफ़ा होते हैं।

फोर्बस — मैंने एक रोज़ खूब अच्छा जवाब दिया, मैंने कहा कि पहिले अपनी जोरू को लोगों से मिलाओ उसके बाद हमारी लेडियों से मिलो।

एक—भई वल्लाह! यह खूब कही. वाक़ई यह निहायत शर्मनाक बात है कि हमारी लेडियों से तो वह मिले जुले और अपनी बीबी को पिंजरे में बन्द रक्खे।

दूसरा—मुझे हैरत यह है कि इस का खर्च कैसे चलता है, मैंने आजही सुबह को सिविल लिस्ट में देखा था, सिर्फ सौ रुपे उसकी तनखाह है ठाठ बहुतही अमीराना, कपड़ा असबाब घोड़ा गाड़ी हर चीज़ आला दर्जे की, इस तनखाह में तो यह ठाठ नहीं चल सकते।

एक लेडी—एं! मिष्टर अमीरहसन सिर्फ सौ रुपये के नौकरहैं, मैं समझती थी कम से कम उनकी पांच सौ रुपये तनखाह होगी।

दूसरी लेडी — मिष्टर मावेल ने बहुत बुरा किया जो इस हिन्दुस्तानी को इस तरह सिर चढ़ाया, क्या उसकी शादी हो चुकी है?।

एक — हां मुझसे खुद आगरे में मिस्टर आर क्लीन कहते थे और इसका बड़ा भाई आगरे में निहायत नेकनाम और मोअज्जिज़ वकील है ।

दूसरा — क्या वह भी अंगरेज़ी सुसाईटी का दिलेदादः है? ।

एक — ओ ! नो, गो वह भी एम० ए० है और बहुत लायक, लेकिन वह हिन्दुस्तानी फैशन् में रहता है ।

फोर्बस — मैं इस बात को बुरा नहीं समझता कि हिन्दुस्तानी अंगरेजी सुसाईटी में बकसरत मिलें मगर मुझे जो बात नागवार है वह यह कि हिन्दुस्तानी लोग अंगरेजी फैशन् अख़्तियार करके निहायत फज़ूलखर्च और बदचलन हो जाते हैं ।

एक — मैंने अमीरहसन को आज तक किसी पार्टी में नहीं बुलाया ।

दूसरा — सिवा मिस्टर माविल के मैं समझता हूं और किसीने नहीं बुलाया बल्कि आज कई रोज़ हुये क्लब में इसका ज़िक्र था, मिस्टर माविल चाहते थे कि अमीरहसन क्लब में मेम्बर होजायँ, नौजवान वालों भी यही चाहते थे, लेकिन हम सबने कतई इन्कारकिया और आखिरकार मिस्टर माविल नाकाम रहे, मुमकिन है वह अपने दिल में खफा हो गये हों मगर ऐसा स्कान्डिल (बदनामी) हम लोग क्या कभी जायज़ रख सकते थे? ।

तीसरा — यह बहुत अच्छा हुआ कि वह क्लब से अलग रहा, मुझे खुदा जाने क्यों उससे एक सख्त नफ़रत है उसकी फास (शोख़) वज़ा ज़ाहिर करती है कि भले आदमियों की सोहबत में वह कभी नहीं रहा ।

एक — अजी यह उन्हीं का बेटा तो है जो पारसाल नुमाइश में मिस्टर माविल के यहां दावत में आये थे क्या वह किस्सा भूल गये? ।

सब के सब हँस कर — भला वह किस्सा भूलनेवाला है ।

अलगर्ज़ इस गुफ्तगू से नाज़रीन बखूबी वाकिफ़ हो गये होंगे कि स्टेशन में एक शख्स भी अमीरहसन के रंग ढंग से खुश न था, सिर्फ मिस्टर माविल और उनकी बीबी अमीरहसन पर मेहर्बान थे और यही वजह थी कि आज तक अमीरहसन अपनी असली हालत नहीं पहचान सके, उन्हें मुतलक खबर न थी कि अंगरेजों ने इसतरह उनको नज़री कर रक्खा है । अब

रहे हिन्दुस्तानी; छेशन में इसवक्त हसब ज़ैल शुर्फा इज़्ज़तकी निगाहसे देखेजाते थे। राय किशोरीलाल सबजज, बाबू दामोदरदास बी॰ए॰ मुन्सिफ़, मौलवी मुकर्रमहुसैन तहसीलदार, मुनशी शरीफ़उल्ला डिप्टीकलेक्टर, शेख़ गौहरअली डिस्ट्रिक्ट इन्जीनियर, नवाब महम्मद हुसैन खां रईस, बाबू माधोदास रईस, काज़ी सिकन्दरअली रईस। ये लोग इस दर्जे के आदमी थे कि यूरोपियन हुक्काम भी निहायत कदर व मंज़िलत से पेश आते थे और किसी तरह ज़ाती इज़्ज़त में अमीरहसन से कम न थे, अमीरहसन ने डिप्टीकलेक्टरी के होते ही इन सब लोगों से साहबाना बर्ताव शुरू करदिया, किसीके घर खुद मिलने को न जाते और अगर कोई मिलने को आता तो जब तक तीस मिन्ट बरामदे में न बैठ ले मुलाकात न होती, इसबात से अमूमन् सब हिन्दुस्तानी नाराज़ थे, एक रोज़ सबने मिलकर कमेटी की कि इस मामले में क्या करना चाहिये। इस कमेटी में मौलवी मुकर्रमहुसैन तहसीलदार भी थे, वह यह नहीं चाहते थे कि उनके दोस्त का लड़का किसी बात में अंगुश्तनुमा हो, गो और सब लोगों ने कृतई यह राय कायम कर ली थी कि अमीरहसन से कोई सोशल ताल्लुक नहीं रखना चाहिये मगर तहसीलदार साहब ने इस से इख़्तलाफ़ किया और यह कहा कि एक रोज़ सब लोग जमा होकर इस बारे में मश्विरा करें, चुनान्चे सबजज साहब के मकान पर ऐतवार के दिन यह नशिस्त करार पाई।

बाबू दामोदर दास — क्यों जनाब इसमें मश्विरा क्या दरकार है जब वह (अमीरहसन) हम लोगों से मिलते ही नहीं फिर हमको क्या ज़रूरत है कि ख़्वाहमख़्वाह हम उनसे मिलने की कोशिश करें।

शरीफ़उल्ला — हज़रत मुझे हँसी आती है, वल्ला लौंडा इस दर्जा बहक गया है कि हमलोगों को चमार से बदतर जान्ता है, परसों कम्पनीबाग में इत्तफ़ाक से मुझे मिले, मिस्टर चार्ली असिस्टेन्ट मजिस्ट्रेट और वह साथ २ थे, चार्ली ने बढ़ कर हाथ मिलाया और मिज़ाज पूछा और अमीरहसन ने सिर्फ़ सलाम का जवाब देकर मुँह फेर लिया, मैंने शामत से हाथ मिलाने को बढ़ाया, उन्हों ने अपना हाथ

जेब में रख लिया थोड़ी देर के बाद मैंने अपने कानों सुना कि अमीरहसन ने चार्ली को समझाया कि हिन्दुस्तानियों से ऐसा बरताव नहीं करना चाहिये जैसा तुम करते हो। चार्ली ने मेरी तारीफ़ की और कहा कि यह बड़ा जेन्टिलमैन है। अमीरहसन ने उसके जवाब में एक ऐसी बेहूदा बात कही जिसको मैं आप लोगों के सामने बयान नहीं कर सकता, जब यह हालत है तब ऐसे शख्स के मिलने की कोशिश फ़जूल है।

बाबू दामोदरदास— सुनिये जनाब मेरा तो जो है सो यह क़ौल है कि—

झुके जो कोई उस्से झुक जाइये।
रुके जो कोई उससे रुक जाइये॥

काजी सिकन्दरअली— मुझ पर जो बीती वह किसी साहब ने नहीं सुना, अजब लतीफ़ किस्सा है, मैं ईद के रोज़ मिलने गया, आध घंटे के करीब मुझे बरामदे में बैठना पड़ा, ख़ुदा २ करके साहब बहादुर गुसल से फ़ारिग़ हुए, दफ्तर के कमरे में मेरी तलबी हुई, मैं इस दर्जा गुस्से में आ कि मैंने मिलाने को हाथ नहीं बढ़ाया एक कुर्सी पर बैठ गया। साहब बहादुर ने मुझसे पूछा, वेल आपलोगों का आज ईद है?।

मैं—क्या आप ताज़ाविलायत हैं? मुसल्मानों के तेहवार भी आपको याद नहीं?।

अमीरहसन— वेल काज़ीसाहब मुझे अर्सा से सिवा अँगरेज़ी सुसाइटी के हिन्दुस्तानियों से मिलने का इत्तफ़ाक़ नहीं होता, इस वजह से मुझे तेहवारों का हाल नहीं मालूम। मेरे नौकरों ने कल ईदगाह जाने की इजाज़त मांगी थी इस वजह से मैं समझा कि आज ईद है।

मैं—आप निमाज़ के लिये क्यों नहीं तशरीफ़ लेगये? क्या बड़े दिन के रोज़ गवर्नर जेनरल गिर्जे नहीं तशरीफ़ ले जाते?।

अमीरहसन— अच्छा काज़ीसाहब रुख़सत, आप हमसे झगड़ा करने नहीं आये हैं मिलने आये हैं।

हज़रत मैं वहां से अपना सा मुँह लेकर चला आया, मेरे नज़दीक ऐसे आदमी से कोई तालुक नहीं रखना चाहिये।

बाबू दामोदर दास— अमीरहसन कोई लफटिनेन्ट गवर्नर तो हैं नहीं

अगर सच पूछिये तो उनका दर्जा हम लोगों से हज़ार दर्जा कम है, ख़ुदा के फ़ज़ल से हम लोगों की तनख़ाहैं उन से ज़्यादा, हालत उनसे अच्छी, फिर उनको किस बात का ग़रूर ? ।

मुकर्रमहुसैन तहसीलदार — मैं अमीरहसन के बाप का दोस्त हूं, आप लोगोंसे हाथ जोड़ कर अर्ज़ करता हूं कि एक मौका उनको ज़रूर दीजिये, ख़ुदा चाहेगा समझ जायेंगे हम सब लोग चलकर उनको समझायें कि भाई यह क्या बात है अगर मान जायें और राह रास्त पर आजायें तो बेहतर वर्ना जो जैसा करेगा आप भुगतेगा ।

नवाब महम्मद हुसैन खां — मेरी भी यही राय है, बेशक अमीरहसन को इसतरह पञ्चायत बाहर नहीं करना चाहिये. अलकिस्सा सब लोगों ने बइत्तफाकराय यह तै किया कि अमीरहसन से एक मजमूई मुलाकात करनी चाहिये और उन्हें उनकी ग़लतियों से आगाह करना चाहिये । सबलोग गाड़ियों पर सवार होकर अमीरहसन के बँगले पर पहुँचे, बँगले में क्या देखते हैं कि मिस्टर अमीरहसन और एक नौजवान मेम गुलैमाश चमन में मशरूफ हैं, अमीरहसन के मुँह में चुरुट लगा हुआ है और मेमसाहब फूलों से जी बहला रही हैं, बाग़ बज़बान हाल यह शेर पढ़ रहा है:—

चमन की सैर को आया न कीजे ।
गुलों को देख शर्माया न कीजे ॥

मेम—मिस्टर हसन ! यह कौन लोग बँगले में चले आ रहे हैं ? ऐसे गुस्ताख़ कि हाते के अन्दर गाड़ी ले आये, मैंने तुम्हें कई मर्तबा समझाया कि हिन्दुस्तानियों को इतना मुँह नहीं लगाना चाहिये तुम नहीं मानते, अगर अँगरेज़ लोग इस बात से वाकिफ हो जायँगी तो तुम्हारा कोई वकार अँगरेज़ी सुसाइटी में नहीं रहेगा ।

अमीरहसन — माई डियर ! मैं हर्गिज़ इनलोगों को मुँह नहीं लगाता यह लोग ख़ुद बेहयाई से दौड़ २ के यहां आते हैं । यह कह कर चपरासी को आवाज़ दी "कोई है ?"।

चपरासी—हाज़िर ख़ुदावन्द ।

अमीरहसन—हम तुमसे पचास मर्तबा हुकुम दिया किसी हिन्दुस्तानी का गाड़ी हाता में न आवे, तुम नहीं मानता, अब हम तुमपर जुर्माना करेगा ।

चपरासी—खुदावन्द सबजज साहब व डिप्टी साहब हैं, हुजूर से मिलने आये हैं ।

अमीरहसन—कोई हो हमारा एक हुकुम है, अच्छा बिठलाओ; हम मुलाकात करेगा, मगर गाड़ी बाहर निकाल दो ।

चपरासी लौटने भी न पाया था कि अमीरहसन के गुस्ताख़ कुत्तों ने तहसीलदार साहब की पहिलेही ख़बर ले ली, पायजामा फाड़डाला । अगर डिप्टी शरीफ़उल्ला हण्टर से ख़बर न लेते तो तहसीलदारसाहब और कुत्तों से अच्छी ख़ासी हाथापाई हो चुकी थी ।

चपरासी—साहब ने हुजूर लोगों को सलाम दिया है, थोड़ी देर में मिलेंगे मगर गाड़ी हुजूर लोग हाता बाहर भेज दें, अन्दर गाड़ी लाने का हुकुम नहीं है ।

सब् जज—अपने साहब से कह दो कि हम उनके यहां नौकरी मांगने नहीं आये हैं, हमारी गाड़ी तो गवमन्ट हाउस में भी बरामदे तक जाती है ।

शरीफउल्ला—अजी लौट भी चलो ऐसे आदमी से मिलना क्या, खुदा जाने कौन लटी लामड़ी मेम लाया है उससे बातें करता है और हम लोगों को ठहरने का हुकुम देता है, कुदरत खुदा ! ।

तहसीलदार—जनाब आप लोग जल्दी न करें, शायद कलेक्टर साहब की मेम हों ।

सब् जज—हा हा हा वल्ला ! तहसीलदार साहब आप भी अजब चीज़ हैं, कलेक्टर की मेम और अमीरहसन का बंगला ! ज़रा होश की दवा कीजिये, कोई तमाशेवाली मालूम होती है, खैर जिस काम के लिये हम लोग आये हैं बग़ैर किये न जायँगे, इस मामले को तै कर लेना ज़रूरी है ।

शरीफ़उल्ला—(चपरासी से) क्यों मियां कादर ! यह मेम कौन है ? ।

चपरासी—सुनता हूं कोई आगरे में सौदागर है, उसकी बेटी है, आठवें दसवें हमेशा आती है, हुजूर अजब बदमिज़ाज औरत है ।

शरीफ़उल्ला—तुम्हारे साहब के ठाठ बहुत बड़े हैं, सौ रुपये में कैसे खर्च चलता है ? ।

चपरासी—खर्च क्या ख़ाक चलता है, मारे क़र्ज़ के मियां के होश ढीले होरहे हैं, हज़ारों रुपये का नाहक

अपने सिर भार कर लिया है, यह ली-जिये साहब आ गये ।

अमीरहसन—आप लोग दफ्तर के कमरे में आइये, चपरासी ! कुर्सियां रख दो।

अमीरहसन ने सिर्फ साहब सलामत की किसी से हाथ नहीं मिलाया अपना चुरट पीते रहे ।

अमीरहसन — आप लोग माफ़ कीजिये मेरा दस्तूर एतवार के दिन किसी से मिलने का नहीं क्योंकि मुझे निज के खत लिखने का मौका इसी रोज़ मिलता है सनीचर के रोज़ सुबह को आप लोग जब तशरीफ लायेंगे मैं बहुत खुशी से मिलूंगा ।

तहसीलदार — साहबज़ादे साहब हम लोग आज आपको यह समझाने आये हैं कि आप अपने को सम्हालिये आपके एतवार बहुत बुरे होरहे हैं सब लोग आपके गरूर के शाकी हैं, मैं तो किसी लायक नहीं लेकिन सबजज साहब डिप्टीसाहब, इञ्जीनियर साहब यह लोग उमर और मर्तबा दोनों में आप से बड़े हैं अगर इन लोगों से आप न मिलेंगे तो फिर आप से कौन मिलेगा, अँगरेज आपसे मिलने से रहे हम लोगों से आप नफ़रत करते हैं मियां साहबज़ादे आप की वही मसल होगई कि धोबी का कुत्ता, न घर का न घाट का ।

अमीरहसन — मगर—

तहसीलदार — आप अभी मेरी बात न काटिये मैं जो कहूं अच्छी तरह सुन लीजिये उसके बाद आप को अख्तयार है, अँगरेज़ी फैशन को मैं बुरा नहीं कहता मगर खुदा के लिये अँगरेज न बन जाइये और न अपनी चादर से ज्यादा पैर फैलाइये, सौ रुपै आपको मिलते हैं उसको जिस्तरह चाहिये खर्च कीजिये मगर यह जो कर्ज़ा आप लेले कर उड़ा रहे हैं इसका अञ्जाम क्या होना है ? आप मुस्तकिल नहीं सिर्फ इमतेहानी डिप्टी कलेक्टर हैं खुदा के वास्ते वह मसल न करो कि कौआ हंस की चाल चला अपनी भी चाल भूला ।

अमीरहसन— बस, अब आप बहुत गुस्ताखी कर चुके, मैं ऐसा इनसल्ट का मुतहम्मिल नही हो सकता आप को कोई हक़ मेरे निज के मामलात में गुफ्तगू करने का नहीं है ।

तहसीलदार—अगर मैं आपके बाप का दोस्त न होता तो वल्ला इधर रुख

भी न करता, मियां साहबजादे होश की दवा करो।

अमीरहसन—मैं फिर कहताहूं कि आप खामोश रहें वरनः मुझे कलेक्टर साहब के पास आप के बारे में चिट्ठी लिखनी पड़ेगी।

नवाब महम्मदहुसेन खां — तहसीलदारसाहब आप खामोश रहें चन्द अलफाज़ मैं कहना चाहता हूं। जनाब सैय्यद साहब! आपके इस जिले में तशरीफ लाने से हम लोगों को बहुत खुशी हुई लेकिन अफसोस यह कि आपका यहां होना न होना हम लोगों के लिये एकसां है। क्योंकि आप आते भी नहीं हमको बुलाते भी नहीं बाइस शर्फे मुलाकात बताते भी नहीं॥ हम लोग इसी गर्ज़ से इस वक्त आये हैं कि आपसे वजह अलहदगी दरयाफ्त करें, आखिर हम लोगों ने क्या कसूर किया जो एक कलम आपने हमलोगों की मुलाकात से परहेज़ फ़र्माया हम लोग खुदानखास्त: बदवजा बदचलन या बदमाश नहीं हैं अहलयूरप हुक्काम भी हमलोगों से ब-कमाल इनायत मिलते हैं फिर आप को क्यों एतराज़ है?।

अमीरहसन — नवाबसाहब! मैं आप लोगों का शुकरगुज़ार हूं कि आपने मुझे अपनी मुलाकात के काबिल समझा, लेकिन आप माफ करें मेरा तर्ज मुआशरत, मेरे ख्यालात आपलोगों से बिल्कुलजुदागाना हैं मैं आप लोगों से ज्यादा रब्त व राह नहीं पैदा कर सकता क्योंकि मुझे अंगरेजी सुसाइटी में रहना है आदमी दो काम एक साथ नहीं कर सकता।

शरीफ़उल्ला अंगरेजी सुसाइटी हम लोगों से मिलने को मना नहीं करती आनरेबुल मिस्टर जस्टिस, महमूद नवाब महम्मद इसहाक खां सी॰ एस॰, मौलवी सैयद हबीबउल्ला सी॰ एस॰ इन लोगों से ज्याद: अंगरेजी सुसाइटी में आप की पुर्सिस है? हरगिज़ नहीं। क्या जेनरल अजीम उद्दीन खां मरहूम से ज्यादा आप अंगरेजी सुसाइटी में बुलाये जाते हैं? कभी नहीं। फिर जब इन सब लोगों ने अपनी अहल कौम को अपनी सुसाइटी को नहीं छोड़ा तो आप का उज़र सिर्फ फजूलही नहीं बलके गुस्ताखी माफ दाखिल बेवकूफी है।

अमीरहसन—यह अपने २ ख्यालात हैं, मैं आप लोगों से मिलने में

मुतमल्लेह नहीं जब चाहिये आपका घर है, लेकिन आपलोगों के घर जाने से या आपके यहां दावत या जल्से में शरीक होने से इनकार है ।

सब जज — बस हज़रत अब बात चीत फ़ुजूल है चलिये हम लोग रुख़सत हों अगर आप में से किसीकी ग़ैरत इजाज़त दे फिर तशरीफ लाईये वरना "मां बख़ैर व शुमा बसलामत"

सब लोग उठ खड़े हुए मामूली साहब सलामत के बाद अपनी२ गाड़ियों पर सवार हुए।

शरीफउल्ला— देखा आपने, किस दर्जा साहबीयत चढ़ी हुई है ?।

तहसीलदार— लौंडे ने ग़ज़ब हांथ पैर निकाले हैं ; खुदा ख़ैर करे ।

सब जज— हम लोगों को उनकी कोई पर्वाह नहीं और न उनसे मतलब; उन्हीं को पचासों गरज़ें इनशाअल्ला हम लोगों से अटकेंगी ।

दामोदर दास— मैं समझता हूं किसी मौके से इस किस्से की इत्तला डिप्टी कमिश्नर साहब और जज साहब से कर देना चाहिये ताकि इनकी कोई शिकायत असरपज़ीर न हो ।

नव्वाबमहम्मदहसन — मेरे नज़दीक यह निहायत छोटा ख्याल है अमीरहसन इस किता के आदमी हर्गिज़ नहीं हैं कि किसी की बुराई या ग़ीबत करें।

शरीफउल्ला— मुझ को मुनसिफ़ साहब से इत्तफाक है, मैं इनशा अल्ला कलही कुल कच्चा चिट्ठा कह आऊंगा, जनाब नौकरी में यह बहुत बड़ा गुर है किसी से ज़रा शिकायत या रंजिश होजाये तो उसकी पहलेही मशहूर कर देना चाहिये, वर्ना पीछे को उस का असर बाकी नहीं रहता। किस्सा मुख्तसर स्टेशन के तमाम शुर्फा मिस्टर अमीरहसन की कजख़ुलकी और बेएतनाई के सख्त शाकी थे, लेकिन अमीरहसन को मुतलक इसकी पर्वाह न हुई, इस वाका के बाद भी उन्हें कुछ तश्वीह न हुई ।

मिसेज़ स्टील ने पूछा "सबलोग क्या कहते थे ?"।

अमीरहसन ने कोई बात बनाकर कह दी और असली हाल मिसेज़ स्टील से भी नहीं बतलाया ।

मिस्टर माबेल की इनायत पर अमीरहसन को इस दर्जा भरोसा था कि वह दुनिया में किसी को ज़रा भी प-

चाह नहीं करते थे।

बाइसवा बाब।

नौज: का तजाहुल आरिफ़ाना॥

कब्ल इसके कि मिस्टर जान्स ख्वाबे राहत से बेदार हों नाज़रीन किसी कद्र हालाते मशीद भी उसके मुताबिक सुन्ने के मुश्ताक होंगे। मिस्टर जान्स वही बदनसीब शौहर है जिसकी शादी मिस गर्नर से जो अब आगरे में मिसेज़ स्टील के नाम से मशहूर हैं हुई थी। यह बदनसीब शादी के बाद थोड़ेही दिन अपनी बीबी के साथ रहने पाया था कि घर भर ने इफ़लास के जिगरखराश तानों से उसका शीशये दिल चूर चूर कर दिया। बेचारा रफ़ये इफ़लास की ग़र्ज़ से घर बार दोस्त आशना और परीज़ाद जोरू सबको छोड़ कर बर्मा गया, वहां याकूत की खान बरआमद हुई, उसकी किस्मत ने जान्स को भी वहां पहुँचा दिया; दो तीन बरस बराबर जान्स ने निहायत मुस्तैदी और मेहनत से अपने खिदमात अंजाम दिये, ठीकेदारान खान ने जान्स को उसकी दियानत के एवज़ में वादे से बहुत ज़्यादा दिया, पहिले वह सिर्फ़ नौकर था मगर पीछे को मुनाफ़े में भी पचीस फ़ी सदी उसका हिस्सा होगया जान्स बर्मा में सिवाय अपने काम के और किसी तरफ़ मुतवज्जः न हुआ हँसी दिल्लगी खेल कूद या कोई तफ़रीह जान्स के लिये ख्वाब व ख्याल थी, उसे जो कुछ धुन थी वह यही कि एकबार दौलते कसीर लेकर हिन्दुस्तान लौटे और अपनी महलका लेकिन ज़रपरस्त जोरू को खुश रख सके। अपनी जोरू की ज़रपरस्ती और बेएतनाई से जान्स वाकई दिलगिरिफ्ता और मग़मूम था, उसने रोज़े-मुफारकत से आजतक एक भी खत अपनी बीबी को नहीं लिखा और न उसे खबर थी कि उसकी जोरू का क्या अंजाम हुआ। जान्स का उमेदकरना कि वापसीके वक्त अपनी अमानत महफ़ूज़ पायेगा महज़ फ़ुज़ूल था, जान्स वाकिफ़ था कि उसका ससुर मुफ़लिस कल्लांच और उसकी जोरू ऐशपरस्त व आरामतलब है। वह जान्ता था कि उसकी जोरू फ़ुज़ूलखर्च इमारतपसन्द और तलौव्वन मिज़ाज है कुछ रुपये भी अपनी जोरू के लिये जान्स छोड़ नहीं गया था फिर उसको क्या तवक्का थी के वह अपनी जोरू को

जहां छोड़गया वहीं पायेगा, बहरहाल जब जान्सके पास काफ़ी रुपया होगया उसे अपनी जोरू और उसका प्यारा चेहरा फिर याद आया और उसने फ़ौरन् अपना तर्क ताल्लुक़ कर के हिन्दोस्तान की राह ली। मालिकाने खान ने जान्स को इस्तिफ़ा से बाज़ रखना चाहा मगर यह राज़ी न हुआ वह अपना काम पूरा कर चुका था, उसे दर अस्ल रुपये का बहुत लालच न था अगर उसकी बुल्हवस जोरू इस दर्जे लालची और ज़रपरस्त न होती तो जान्स के लिये उसकी तनख़ाह जो नौकरीमें मिला करती थी बहुत काफ़ी थी। वह वहांसे सीधा कलकत्ते आया जहाज़ से उतरतेही चुनार का टिकट लिया, जहां पहुंच कर सब से पहले लोअरलाइन में वह बँगला ढूंढ़ा जिसमें उसके ससुर नामदार रहा करते थे वहां बिलकुल मायूसी हुई बँगला तो मौजूद था मगर बँगलेवाले न थे दर्याफ्त करने से पड़ोसी अंगरेज़ों ने बतलाया कि मिसिज़ जान्स मुद्दत हुई चुनार से बाप के साथ कहीं चली गई, और किसी को उसका पता भी मालूम नहीं। चुनार के खुशइख़लाक मुन्तज़िम और हरदिलअज़ीज़ तहसीलदार नवाब सैफउल्ला खां बहादुर और वहां के इख़लाक़ मुजस्सिम रईस बाबू हनूमानप्रसाद हैं इनदोनों साहबों ने जान्स से बहुत हमदर्दी की और जहां तक मुमकिन था उसके हुसूले मुद्दआ की कोशिश की लेकिन चुनार ऐसी जगह है कि हरसाल दस पांच नये अंगरेज़ वहां आते हैं और दसही पांच चलेजाते हैं जो आया उसका यह हाल जानना कि कहांथा और कहांसे आया मुशकिल होता है और जो गया उसका यह राज़ कि कहां गया दर्याफ्त करना ग़ैर मुमकिन। चुनार में अब भी बहुत इज़्ज़तदार और अच्छे लोग मौजूद हैं उनके बँगले और कारखाने हैं और निहायत शरीफ़ाना तौर से बसर कर रहे हैं, लेकिन जो छोटे दर्जे के ज़लील अँगरेज़ हैं उन्होंने चुनार की अँगरेज़ी आबादी को बहुत बदनाम कर रक्खाहै। बहरहाल जान्स को अपनी जोरू का पता न मिला, दो चार रोज़ ख़राब व ख़स्ता रह कर जान्स कलकत्ते वापस आया। अख़बार पायोनियर, मार्निङ्ग पोस्ट, इँग्लिशमैन व इण्डियन डेली न्यूज़ में इश्तिहार छपवाये और अपनी

जोरू को इश्तिहारात के ज़रिये से अपनी वापसी की इत्तला दी, कोई जवाब उन इश्तिहारात का भी न मिला और न जोरू का पता लगा, आख़िरकार मायूस होकर जान्स ने कलकत्ते में फिर नौकरी कर ली और वहीं मिस्टर ऐटकिन्स से मुलाक़ात हुई और नाज़रीन वाकिफ़ हो चुके हैं जिसतरह एक तसवीर देख कर जान्स को ग़श आ गया, सुबह हुई और रात ख़ुदा २ करके ख़तम हुई, दवा के असर से रात भर जान्स ग़फ़लत में रहा सुबह होतेही अपने दोस्त ऐटकिन्स को बुलाया।

जान्स— प्यारे ऐटकिन्स ! रात जो ख़िदमत तुमने मेरी की उसका शुक्रिया तमाम उम्र मुझसे अदा नहीं हो सकता, बतलाओ यह प्यारी तसवीर तुमने कहां पाई और यह प्यारी औरत कहां है ?।

ऐटकिन्स—जान्स ! ज़रा सम्हलो और अक़ल से काम लो, उर्दू किस्सों में अलबत्ता सुना था, पादशाहज़ादे तसवीरें देख कर आशिक़ हो जाया करते थे लेकिन हमलोगों में ऐसा वक़ूया शायद कभी नहीं पेश आया हो।

जान्स—मैं सिर्फ तसवीर देख कर आशिक़ नहीं हुआ बल्कि—

ख़ुदाई के झूठे ज़माने के क़ातिल।
यही हैं जो गर्दन झुकाये हुये हैं॥

यही मेरी प्यारी जोरू है, यही कम्बख़्त औरत है जिसने मुझे बर्म्हा ऐसे ख़राब मुल्क में तीन बरस ख़ाक छनवाई, यही ज़ालिम और बेमुरौव्वत औरत है जिसने मुझे तबाह और बर्बाद कर रक्खा है, इसी की तलाश में मैं दर ब दर कूचा ब कूचा घूमा, इसी के पता लगाने को मैं ख़ुद बे-निशान हो गया और अख़बारों से इमदाद चाही। ऐटकिन्स बताओ यह औरत कहां है ?।

ऐटकिन्स— जान्स ! तुम्हें कुछ ख़ब्त होगया है, यह मिसेज़ ह्वील की तसवीर है; मिसेज़ ह्वील एक मुतमौव्वल लेडी है, तुम ख़ुद कहते हो कि तुम्हारी जोरू इफ़लास की हालत में थी, मैं मिसेज़ ह्वील का अमीराना ठाठ अपनी आंखों से देख आया हूं, मिसेज़ ह्वील हर्गिज़ वह औरत नहीं हो सकती जिसे तुम चुनार छोड़ बर्म्हा गये थे।

जान्स— अच्छा हाथ कंगन को आरसी क्या है, आजही मेरे साथ आ-

गरे चलो और वहां चल कर मुझे मेरा शुबहा रफ़ा करने दो।

ऐटकिन्स—औव्वल तो आगरे चलना सर्फ़ कसीर मांगता है, दूसरे छुट्टी मिलना भी मुश्किल है।

जान्स—ऐटकिन्स! तुम रुपये या रुखसत का कुछ भी ख्याल न करो, मैं खुदा के फज़ल से मुफ़लिस या कंगाल नहीं हूं अगर तुम इस अज़ीम उश्शान मुसीबत में मेरा साथ दोगे तो तमाम उम्र तुम्हारे लिये नौकरी या रुपये की कमी नहीं रहेगी और रुखसत मिलना भी कुछ मुश्किल नहीं। मेरी तरफ से एक चिट्ठी मनेजर को लिख दो और चलो इसी वक्त मेल ट्रेन में सवार हों।

ऐटकिन्स ने जान्स की तर्फ से मनेजर को खत लिखा और बगैर इन्तज़ार उसके जवाब के फ़ौरन् सफ़र की तैयारी कर के दोनों दोस्त रवाना स्टेशन हुये। स्टेशन पर औव्वल दरजे का टिकट जान्स ने अपने लिये और नीज़ ऐटकिन्स के लिये खरीद किया और दोनों मेल ट्रेन में सवार होतेही स्टेशन से बहुत दूर निकल गये। ईस्टइन्डिया की मेल ट्रेन वाकई बहुत तेज़ चलती है। एक रात और एक दिन में कलकत्ते से देहली पहुँच जाती है। टुन्डले के स्टेशन पर यह दोनों मुसाफिर उतरे वहां से दूसरी गाड़ी में सवार होकर आगरा पहुँचे। स्टेशन पर पहुँचतेही जान्स ने दर्याफ्त किया कि मिसेज़ ह्वील का बँगला किसी को मालूम है, हर गाड़ीवाले और हर इक्केवाले ने जवाब दिया कि हां साहब हम मेमसाहब का बँगला जान्ते हैं चलिये ले चलें। चार बजे सुबह का वक्त था चांदनी रात थी, गो किसी कद्र रात बाकी थी लेकिन चांदनी के सबब मालूम होता था कि बिलकुल सुबह होगई है।

ऐटकिन्स—चलो किसी होटल में ठहरें जब सुबह हो ले तब वहां चलेंगे।

जान्स—मैं समझता हूं कि इसी वक्त सीधे वहीं चलना चाहिये, होटल जाना बेकार है।

ऐटकिन्स—इसवक्त जाना खिलाफ़मसलहत है और खिलाफ़तहज़ीब है।

जान्स—तहज़ीब और मसलहत से मुझे सरोकार नहीं है मुझे अपनी जोरू मिलनी चाहिये, और बस—

ऐटकिन्स—मगर पहिले यह तो

तहकीक होवे कि वह तुम्हारी ही जोरू है।

जान्स — खैर अगर तुम्हारी यही मर्जी है तो थोड़ा इन्तज़ार कर लो।

ऐटकिन्स ने जाकर रिफ्रेशमेन्ट रूम में चाय पी, इधर जान्स ने एक कुली से बातें की।

जान्स — तुम जानता है हील मेम साहब कहां रहता है?।

कुली — जाम्त। क्यों नहीं उनसे कोई भी नावाकिफ़ है?।

जान्स — यहां कितने दिन से मेम साहब रहता है?।

कुली — हमतो दो तीन वर्ष से बराबर मेम साहब को यहीं देखते हैं।

जान्स — मेम साहब यहां क्या काम करता है?।

कुली — बड़ी भारी दूकान है आराघर जारी किया था वह अब बन्द है और नवाबसाहब बहुत कुछ देते हैं।

जान्स — नवाब साहब कौन?।

कुली — साहब यह हम नहीं जाने और सब हाल आप खुद मेम साहब से पूछियेगा।

जान्स — हम तुम को बख़्शीश देगा तुम सब हाल हमको बता दो।

कुली — हजूर कौन हाल है पहले मेमसाहब के यहां एक चौधरी साहब आते थे उसके बाद एक नवाब साहबा आने जाने लगे, बहुत दिन से नवाब साहब को भी नहीं देखा, नहीं मालूम कि कहां है।

जान्स — आने जाने से तुम्हारा क्या मतबल है?।

कुली— आप तो हिन्दी कि चिन्दी निकालते हैं, हम क्या जाने। इतने में ऐटकिन्स भी आ गया और दोनों किराये की गाड़ी में सवार होकर मिसेज़ हील के बंगले को रवाना हुये।

ऐटकिन्स— पहिले मैं अपना कार्ड भेजूंगा तुम बाहर बैठे रहना, जब वह मुझे अन्दर बुलालें तब तुम अपना कार्ड भेजना शायद वह पहले तुम्हें न बुलायें।

जान्स—हां, यह तर्कीब अच्छी है।

बँगले पर गाड़ी पहुँचतेही ऐटकिन्स ने उतर कर इधर उधर देखा, बिलकुल सुनसान पड़ा हुआ था कोई नौकर चाकर भी उस वक्त तक बेदार न हुआ था, थोड़ी देर ऐटकिन्स टहलता रहा इतने में एक बुड्ढा ख़ान्सामां लंबी

दाढ़ी ऐनक लगाये बड़ी सी पगड़ी बांधे अपनी कोठरी से निकला।

खानसामा—सुबह सुबह कौन लोग आये हैं, यह कौन वक़्त है, मेम साहब अभी सो रही हैं।

ऐटकिन्स—वेल बुड्ढे खानसामा! हम है, तुमने हमको पहचाना? बेर्सफर्ड साहब हैं और मेमसाहब भी है?

खानसामा— आह हा आप हैं ऐटकिन्स साहब। हां बड़े साहब भी हैं और मेमसाहब भो हैं लेकिन अभी सो रहे हैं।

ऐटकिन्स— वेल खानसामां! मेम साहब को जगा दो और हमारी खबर कर दो हम अभी कलकत्ते से आ रहे हैं।

खानसामा— हुज़ूर सरदार से कहें मैं सोने के कमरे में नहीं जा सकता।

ऐटकिन्स ने बैयरा को पुकारा। वह भी यह उज्र करके कि सिवा आया के और कोई सोने के कमरे में नहीं जा सकता चलदिया। खुदा खुदा कर के आया बर-आमद हुई और यह खुशखबरी दी कि मेमसाहब जागीं।

ऐटकिन्स— हमारा टिकट मेम साहब को दे आओ और कहदो बहुत जुरूरी काम है।

आया— अभी मेमसाहब कपड़ा नहीं पहने हैं, आप जबतक मुलाक़ात के कमरे में बैठें, थोड़ी देर में मेम साहब आवेंगी। ऐटकिन्स को बहुत देर बैठना न पड़ा था कि मिसेज़ स्टील अपने मामूली हस्ते हुये चेहरे और दिलफरेब अन्दाज से बर-आमद हुईं।

मिसेज़ स्टील— मिस्टर ऐटकिन्स! गुड मार्निंग, हाउ डू यू डू (मिज़ाज़ शरीफ) इस वक़्त आप कहां से आ रहे हैं? माफ कीजियेगा उठने में देर हुई कल शब को मैं बहुत देर को सोई थी।

ऐटकिन्स— आपको मुझसे माफ़ी मांगने की जुरूरत नहीं बल्कि मुझे खुद माफ़ी मांगनी चाहिये कि ऐसा बे वक़्त मिलने को आया; मगर एक ख़ास जुरूरत ऐसीही थी जिसने मुझे तकलीफ़ देने पर मजबूर किया। आप मेरे दोस्त मिस्टर जान्स को जान्ती हैं? मिसेज़ स्टील के चेहरे की शोखी मुबद्दल बअफ़सर्दगी और उनके गालों की सुर्खी मुबद्दिल ब ज़र्दी हो गई।

मिसेज़ स्टील—मिस्टर जान्स! जहां तक मुझे ख्याल है सिवा डाक्टर

जान्स के जिनकी डिक्शनरी मैंने लड़कपन में देखी थी और किसी जान्स से मैं वाकिफ़ नहीं ।

ऐटकिन्स — मगर वह आपसे बखूबी वाकिफ हैं आपके वालिद का नाम मिस्टर गर्नर था ।

मिसेज़ ह्वील— ओ नो मिस्टर ऐटकिन्स ! इस वक्त आप कैसी बातें कर रहे हैं, किसी लेडी से इसतरह गुफ्तगू नहीं करनी चाहिये । मेरे बाप का नाम सर जान गार्डन है, गर्नर कैसा ? भला यह भी कहीं शरीफों के नाम होते हैं ।

ऐटकिन्स — मिसेज़ ह्वील ! मुझे माफ़ कीजिये यह सब बातें मुझे मेरे दोस्त ने कराईं वह आपसे मिलने के मुश्ताक हैं और गाड़ी में बाहर बैठे हैं, हुकम दीजिये तो अभी बुला लाऊं । मिसेज़ ह्वील जवाब भी न देने पाईं थीं कि ऐटकिन्स ने जान्स को पुकारा और कहा अन्दर आओ ।

मिसेज़ह्वील — मगर मैं इस वक्त किसी ग़ैर शख्स से मिलने को तैयार नहीं हूं । इतने में मिस्टर जान्स ड्राइङ्ग रूम में दाखिल हुये । जान्स से निहायत हसरत और शौक से अपनी बीबी को देखा और बोसा लेने को बढ़ा । मिसेज़ ह्वील भी अपनी कुर्सी से उठ कर पीछे हटीं । वह वक्त भी एक अजीब वक्त था, मिसेज़ ह्वील की परेशानी और घबराहट, मिस्टर जान्स का शौक और बेताबी क़यामत का लुत्फ दिखा रही थी ।

'वह मेरी सुनता नहीं बजा है,
मैं उसकी सुनता नहीं मज़ा है ।
इधर भी हां हां का गुल मचा है,
जो शोर उधर है नहीं नहीं का ॥"

मिसेज़ ह्वील - मैंने इस वक्त तक आपको नहीं पहिचाना, आप इस जगह बैठिये और उसके बाद मुझसे अलहदे से बातें कीजिये ।

जान्स—प्यारी एलिस ! क्या तुम समझती थीं कि मैं मरगया ? क्या तुम जानती थी कि जान्स दुनिया में बाक़ी नहीं ? ।

मिसेज़ ह्वील—मेरा नाम एलिस ज़रूर है मगर मैं यह नहीं समझती कि आप किस हक़ से मेरे ख़ानगी नाम से पुकार रहे हैं ।

जान्स—प्यारी ! उस हक़ से जिसने हमको और तुमको तन्दुरुस्ती और बीमारी ख़ुशी और रंज जिन्दगी और

तमी, इफ़लास और अमीरी में हमेशा के लिये मिलादिया था । उस हक़ से जिसने मुझको तुम्हारा जांनिसार शौहर और तुमको मेरी प्यारी बीबी बनाया ।

मिसेज़ हील— आप अपने होश की दवा कीजिये, यह बहकी २ बातें मुझे भली नहीं मालूम होतीं, क्या आप कोई नशा खाये हुए हैं? या ख़ुदानखास्ता ख़ललदिमाग़ है । मिस्टर ऐटकिन्स ! मुझे यह उमेद न थी कि आप मेरे घर एक सौदाई को लाके बैठावेंगे जो इस तरह मेरी तौहीन करेगा । ग़ज़ब ख़ुदा का मैं और आप की जोरू ! मेरा शौहर आलीवकार ख़ुदा जाने किस ज़मीन में सो रहा है देखिये आप अपनी ज़बान रोकिये वर्ना मुझे अपने नौकरों को बुलाना पड़ेगा ।

जान्स - क्या तुम मुझे सचमुच नहीं पहिचानतीं? मैं वही जान्स हूं जो तुम्हारे लिये बर्म्हा गया, जो तुम्हारे इश्क़ में अब तक वैसाही दीवाना है जैसा पहिले था ।

मिसेज़ हील— मैं हर्गिज़ आपसे वाकिफ़ नहीं आप किसी और के धोखे में हैं, न मैंने आपको बर्म्हा भेजा और न मुझे आपके इश्क़ की ज़रूरत है !

जान्स—यह देखो तुम्हारी अँगूठी । क्या यह भी भूल जाओगी? ।

मिसेज़ हील—जनाब आप अक़्ल के नाख़ुन लीजिये, मेरे दुश्मन् आपको अँगूठी देते हैं, जब आपही को नहीं पहचानती तो अँगूठी कैसे पहचानूंगी। यह कह कर मिसेज़ हील ने बैरा को हुकुम दिया कि बेर्सफर्ड साहब को बुला लाओ । बुड्ढा गर्नर जो बेर्सफर्ड के नाम से मशहूर था चन्द मिनट में दाख़िल ड्राइङ्गरूम हुआ । गर्नर आते ही जान्स को देख कर पहिले एक सक़ते की हालत में होगया; वह बख़ूबी वाकिफ़ था कि मिसेज़ हील ने पुराना क़िस्सा बिल्कुल भुला दिया है और हर्गिज़ मिस्टर जान्स से कोई ताल्लुक अज़सरे नौ क़ायम नहीं हो सकता । बुड्ढा अपनी बेटी की चालाकियों से इस दर्जा वाकिफ़ था कि उसने जान्स की आमद से कोई अफ़सुर्दगी ख़ातिर नहीं पैदा होनेदी, अलबत्ता किसी क़दर शोर व गुल का उसको अन्देशा हुआ लेकिन यह ख़ौफ़ भी बिल्कुल आरज़ी था, उसने अपने होश व हवास बजा करे ।

मिसेज़ स्टील— मिस्टर बेर्सफर्ड ! यह देखिये एक साहब कहीं से तशरीफ़ लाये हैं, और मुझे ख़ाहमख़ाह अपनी बीबी बतलाते हैं और तौहीन कर रहे हैं ! (मिसेज़ स्टील रोने लगीं)

जान्स— यह चाहें कुछ कहें और जिस तरह इनकी मर्ज़ी हो मेरा नाम सफ़हये दिल से काट दें मगर आप मुझे नहीं भूल सकते ।

गर्नर— आप माफ़ कीजिये मैंने इस वक़्त से पहले आप को कभी नहीं देखा, इस्म मुबारक आपका क्या है ? ।

जान्स— ग़ज़ब खुदा का ! आप भी उलटी राह चले, मैं हूं आपका दामाद एडवर्ड जान्स, क्या तीनही चार बर्स में ज़माना ऐसा पलटा खागया ! एकबारगी आप सबने मुझे फ़रामोश कर दिया, मैं ने अर्सासे आईना नहीं देखा मुमकिन है मेरा चेहरा बदल गया हो मगर आप लोगों की सूरत में फ़र्क़ नहीं ।

गर्नर—आप की ज़ुबान बहुत बेतकान हो रही है, चन्द मिनट हुये आपने मिसेज़स्टील को अपनी बीबी बताया अब मुझे अपना ससुर बता रहे हैं, तोबा तोबा ! ।

जान्स— क्या आप ईमान से कह कह सकते हैं कि यह लेडी आपकी लड़की नहीं ? क्या आप चुनार के रहनेवाले गर्नर नहीं ? क्या गिर्जा में आपने इसका हाथ मुझे नहीं दिया ?।

गर्नर— या ख़ुदा तुझे क्या होगया है, क्या बक रहा है, मिसेज़ स्टील को मेरी लड़की क्यों बनाता है, मैं उनका नौकर हूं वह मेरी आक़ा हैं, अगर इसी तरह बेहूदा बातें तुम करोगे तो पुलिस से इम्दाद लेनी पड़ेगी ।

मिसेज़ स्टील— मेरे मकान पर आकर इस तरह गुस्ताख़ी और तौहीन करना हर्गिज़ कानून इजाज़त नहीं दे सकता । इस वक़्त मैं हुकुम देती हूं मिस्टर ऐटकिन्स तुम और मिस्टर जान्स दोनों मेरा मकान छोड़ दो वर्ना मदाखलत बेजा में अदालत के सपुर्द कर दूंगी ।

ऐटकिन्स— भाई जान्स ! यह मामला अजब गोमगो का है, मेरी समझ में नही आता । ग़ज़ब यह है कि तुम सब को पहचानते हो और तुमको कोई नहीं पहचानता अब यहां ' तू तू मैं मैं ' से कोई फ़ायदा नहीं, चलो रुख़सत हो ।

जान्स — बहुत अच्छा लेडी हील मैं अब जाता हूं तुम्हारी संगदिली और बे-रहमी को बगैर सज़ा दिये न छोडूंगा। यह याद रक्खो कि मेरा जी जला कर तुम भी ठंढी नहीं रह सकती अब भी समझो मै तुम्हारी पिछली खता को सब माफ कर दूंगा. मैं अब खुदा के फ़ज़ल से मुफ़लिस या कंगाल नहीं हूं ज़रूरत से ज्यादा दौलत मेरे पास है, हमारी तुम्हारी तमाम उम्र ब-आराम बसर हो सकती है।

मिसेज़ हील — आप की फैयाज़ी का शुक्रिया अदा करती हूं मगर मुझे आप की दौलत या आराम की कुछ ज़रूरत नहीं, मैं इस वक्त तक वाकिफ़ नहीं कि आप कौन शख्स हैं किसी अजनबी की दौलत मैं क्यों लेने लगी और जो आपने मुझे धमकाया इसके निसबत यही कहना काफ़ी है !

परीरखों ही की मैंने भी आंखे देखी हैं।
मैं डर न जाऊंगी आंखें दिखाईये न मुझे॥

जान्स — अच्छा मैं जाता हूं, शायद तुम्हारी खता खुदा माफ़ करदे लेकिन मैं कभी न माफ़ करूंगा।

चैन तुझको न मिले मेरे सतानेवाले।
तू भी ठंढा न रहे जी के जलानेवाले॥

तेईसवां बाब।

मिसेज़ हील की तैयारी॥

जान्स और ऐटकिन्स के जातेही मिसेज़ हील ने अपने बाप से मश्विरा किया।

मिसेज़ हील — यह तो बड़ी बला नाज़िल हुई, ऐटकिन्स भी जान्स से मिलगया खुदा खैर करे एक कडुआ करेला दूसरे नीम चढ़ा।

गर्नर — इसके आने की मुझे मुतलक इत्तला न थी मालूम नहीं बह्मा से कब आया और आगरे का पता उस को किसने दिया।

मिसेज़ हील — ग़ालिबन् चुनार में किसीने बता दिया होगा अब बतलाइये क्या करना चाहिये ? मैं एकदिन भी यहां नहीं रह सकती। जान्स कोई न कोई ज़रूर फ़साद करेगा।

गर्नर — अगर कहो तो मैं जान्स के पास जाऊं और उससे सुलह की गुफ्तगू पेश करूं, पिछली बातों पर वह कुछ लेहाज़ न करेगा, रुपया भी उसके पास अब काफ़ी है, जान्स आदमी भी सीधा है मैं समझता हूं तुम उसके

साथ खुशी से रह सकोगी।

मिसेज़ होल — आप भी कुछ सठिया गये ? जिस शख्स से ऐसी गुफ्तगू हो जाय और ऐसा सख्त वाकेआ पेश आये उस से सुलह की उमेद महज़ फ़जूल है अलावा इसके मुझे जान्स से ज़रा भी मोहब्बत नहीं मैं किसी तरह उस से मिल नहीं सकती।

गर्नर — जान्स अदालत के ज़रिये से तुम्हें हासिल कर सकता है और शादी का साबित होना कुछ भी मुश्किल न होगा।

मिसेज़ होल — मगर वह मेरा पता कहां पायेगा ? मैं आजही रात को आगरे से ग़ायब हो जाती हूं आप पटने को चले जाइये हसब मामूल खर्च आप के पास पहुँचा करेगा, मेरा हाल या मेरा पता किसी से न बताइयेगा।

गर्नर — तुम्हारा कहां जाने का इरादा है ? इस उम्र में मुझे कोई सख्त सद्मा न देना।

मिसेज़ होल — मैंने इस वक्त तक कोई इरादा मज़बूत नहीं किया, लेकिन मुझे उमेद है कि मिस्टर अमीरहसन मेरे साथ शादी कर लेंगे मैं उनके यहां ब-आराम रह सकूंगी, देखिये मैंने उनका हज़ारहा रुपया बर्बाद किया और उस शख्स ने ओफ़ भी न की अब भी मुझे उमेद है कि ज़रा भी ताम्मुल न करेंगे—मैं इसी वक्त उनको तार देती हूं और अपना कुल असबाब और कारखाना फ़रोख्त कर डालूंगी।

गर्नर — जल्दी का काम बुरा होता है, खूब समझ बूझ कर कदम रखना चाहिये।

मिसेज़ स्टील — मैंने खूब समझ लिया इससे बेहतर कोई तदबीर ज़ेहन में नहीं आती।

गर्नर — जल्दी में असबाब भी अच्छी तरह न बिकेगा।

मिसेज़ स्टील — आरे की कल फ़र्निचर गाड़ी घोड़ा मैं किसी महाजन के यहां रेहन कर दूंगी और बाक़ी चीज़ें साथ ले जाऊंगी कोई नुक्सान न होगा।

मिसेज़ होल ने उसी वक्त नौकरों को हुकुम दिया कि कोई शख्स हाते में न आने पावे, खुद वह असबाब बाँधने में मसरूफ़ हो गईं थोड़े अर्से में तमाम कीमती चीज़ें कपड़े बर्तन ज़ेवरात बन्द कर दिये और खान्सामां को हुकुम दिया कि रे-

ल पर जाकर इटावा की बिलटी कर दे—खुद गाड़ी में सवार होकर शहर के अँगरेजी सौदागर और हिन्दुस्तानी महाजनों से मिलने गईं—जावजा रेहन की गुफ्तगू की; मारीसन ऐण्डको० सौदागरों ने रेहन रखने से इन्कार किया मगर बै पर आमादगी ज़ाहिर की। मिष्टर मार्सन सेज उस वक्त मिसेज़ स्टील के हमराह बँगले पर आये, कल और उसके सामान को अच्छी तरह देखा भाला, फर्निचर वग़ैर: जो मिसेज स्टीलने फ़रोख्तके लिये अलहदा कर दिये थे देखा। कुछ शक नहीं कि मिसेज़ स्टील के पास बहुत कीमती सामान था अगर अच्छीतरह फ़रोख्त किया जाता तो बहुत ज्यादा कीमत मिलती मगर जल्दी में क्या हो सकता था अहल् गर्ज़ को ग़र्ज़ माल के दाम हमेशा कम कर देती है।

मारीसन — मिसेज़ स्टील! एक बारगी तुमने क्यों सब चीजें बेचने का इरादा कर लिया ?।

मिसेज़ स्टील—आप मेरे खानगी किस्से से वाकिफ नहीं मेरे चचाज़ाद भाई को बहुत बड़ी दौलत तरकह में मिल गई है, एक रिश्ते के चचा मरगए हैं उनका विलायत से तार आया है कि फ़ौरन चली आओ, इसलिये मुझे जिस क़दर जल्द मुमकिन हो यहां से जाना ज़रूरी है वर्ना मेरा लाखों रुपये का नुकसान हो जायगा।

मारीसन — क्या तुम्हारी उनके साथ शादी होनेवाली है ?।

मिसेज़ स्टील— मैं अभी कुछ नहीं कह सकती, ग़ालबन् इस उजलत् का नतीजा कोई अच्छाही निकले।

मारीसन—आप यह कुल सामान जिस हैसियत से बँगले में मौजूद है किस क़दर कीमत मजमुये पर फ़रोख्त करेंगी ? अलहदा २ दाम ते करने में बहुत वक्त ज़ाया होगा इसलिये बेहतर है कि एकजाई दाम ते हो जाय।

मिसेज़ स्टील— मुझे जो ज़रूरी सामान अलहदा करना था अलग कर चुकी अब जो कुछ बँगले में है सब फ़रोख्त के लिये है। सा मिल (Saw-Mill) याने आरे की कल बिलकुल नई है और चीज़ें भी सब आला दर्जे की हैं कीमत का तसफ़ीआ मैं कुछ नहीं कर सकती आपही बतलाइये क्या दीजियेगा ? मिष्टर मारीसन् इतना लेहाज़ रखियेगा कि मैं एक बेवा औरत

हूं और आप खुदा के फ़ज़्ल से एक मुतमीव्वल दोस्त ; जो कुछ आप देंगे वह गोया एक बेवा के लिये निहायत हमदाद होगी ।

मारीसन— यह कल कितने को खरीदी थी ? ।

मिसेज़ होल— यह लीजिये उसके कुल कागज़ात मौजूद है आप अच्छी तरह देखें मै आप को कोई धोखा देना नहीं चाहती।

मारीसन— कोई चीज़ इस कल में बिगड़ी तो नहीं है ? ।

मिसेज़ होल— कुछ नहीं बिलकुल नई कल है ।

मारीसन— और बँगला किस किराये पर आप के पास है ? ।

मिसेज़ होल चालीस रुपये महीने पर और पांच बर्स का मेरे पास ठीका है जिसमें अभी सिर्फ दो बर्स गुज़रे है तीन वर्स तक मालिक मकान आप को बेदख़ल नहीं कर सकता और उसका मालिक बहुत ही अच्छा जेन्टिलमेन है कोई फ़साद या शरारत उस की तरफ से वक़्अपिज़ीर नहीं हुई ।

मारीसन— किसी और ने भी आप से इसकी खरीदारी की गुफ्तगू की ? ।

मिस्टर होल – खरीदारी पर तो बहुत लोग आमादा हैं । बाबू भगवान दास, मिस्टर जान, लेकिन मै तुम्हारे होते हुये दूसरे के हाथ नहीं बेच सकती । जब से मेरी आप से मुलाकात हुई हम लोग बराबर दोस्त रहे ।

मारीसन— अच्छा मिसेज़ स्टील मैं कुल सामान के लिये पन्द्रह हज़ार रुपया आप को दूंगा, इसीवक़्त मुझे बैनामा लिख दो और मैं भी इलाहाबाद बंक के नाम चेक दे दूंगा ।

मिसेज़ होल— मिस्टर मारीसन पन्द्रह हज़ार बहुत ही कम हैं, और इससे ज्यादा मैं क्या कहूं ।

मारीसन— खैर आपकी खातिर से एक हज़ार और सही ।

मिसेज़ होल— बहुत बेहतर । उसी वक़्त मिसेज़ होल ने सा मिल की कुल दस्तावेज़ मिस्टर मारीसन के सपुर्द कर दी और कुल चीजों की फ़िहरिस्त बनाई और फ़रोख्त की इबारत तहरीर कर मारीसन को दे दिया । मारीसन ने भी सोलह हज़ार रुपये का चेक हवाले किया ।

आदमी भेज कर मिसेज़ होल ने नोट मँगवाये । मेमसाहब इस मामले

में सच पूछिये तो बुरी नहीं रहीं; अस-बाब अलेहदा २ नीलाम होता तो अलावा देर होने के दाम भी बहुत कम मिलते। सा-मिल भी अमीरहसन की जायदाद थी उसमें मिसेज़ हील का एक हिब्बा भी खर्च नहीं हुआ था इस लिये भागे भूत की लँगोटीही सही जो कुछ मिसेज़ हील को मिलगया ग़नीमत था, मिसेज़ हील ने मारीसन से यह दर्खास्त की कि जब तक मैं रवाना नहीं होती सब असबाब जिस तरह है वैसाही बँगले में मौजूद रहै। मारीसन ने यह दर्खास्त भी मंजूर कर ली और अपने घर को चल दिये।

मिसेज़ हील ने अमीरहसन को हसब ज़ैल तार दिया। तार, मिन जानिब मिसेज़ हील बनाम सैयद अमीरहसन डिप्टी कलेक्टर इटावा, "मैं आज रात को पसेंजर ट्रेन में इटावा पहुँचूंगी, स्टेशन पर मुझे मिलो। कल मेरे तुम्हारे शादीहोगी। अगर मंजूर हो तो हां का जवाब बज़रिये तार दो, वर्ना नहीं लिख भेजो। नहीं की हालत में फिर तमाम उम्र तुम मुझे न देखोगे गुडबाई",।

मिसेज़ हील ने यह तार अर-जेन्ट रवाना किया उस वक़्त उसकी एक अजीब हालत थी, कभी उमेद का हँसता हुआ चेहरा इसके दिल को बाग़२ कर देता और कभी मायूसी की डरावनी सूरत उसके सब्र व क़रारको पायेमाल कर देतीथी, उसे यह पूरी तवक्का थी कि अमीरहसन हां के सिवा नहीं न कहेगा, मगर यह फिर डरती थी कि शायद कोई दरअन्दाज़ रखना डाल दे या हिदायतरसूल हारिज हो या अमीरहसन खुदही अपनी हालत को ग़ौर करके इन्कार करे। ऐसी हालतमें मिसेज़ हील को बहुत अज़ीम उग़शान मसायब का सामना नज़र पड़ता था, दुनिया में उसे कोई न दिखाई देता था जो ज़रा भी तसक़ीन व तशफ्फी दे सकता।

अजनबी मुल्क या ग़ैर जगह जाने में उसे बहुत पशोपेश था; जान्स का डर अलग उसके कुल मसर्रतों को मुबद्दल बग़म किये देता था, वह दर-असल शादी को एक किस्म की पाबन्दी और क़ैद समझती थी; जिस आज़ादी से उसने अपनी उम्र अबतक बसर की वह हर्गिज़ इसकी मुक़तज़ी न थी कि बक़ीया उमर का कोई हिस्सा भी

पाबन्दी में सर्फ़ हो, मगर ज़रूरत के लिये कोई कानून नहीं, मजबूरी सभी काम करा लेतीहै; जान्स के पास जाना उसको इस दर्जा नागवार था कि अमीरहसन का क्या मज़कूर अपने खानसामां या बैरा से भी उसे शादी में तअम्मुल न होता, तार भेजे हुये तीस मिन्ट हो गये और अभी तक कोई जवाब न आया। उसकी घबराहट हर २ मिन्ट पर बढ़ रही थी, बेचैनी दम बदम ज़्यादा होती जाती थी, सुबह से सिवाय एक प्याली चाय के एक टुकड़ा भी रोटी का मुँह में नहीं गया। खानसामां खिदमतगार नौकर चाकर सभी परेशान थे कि दफ़तन् क्या से क्या हो गया, उनकी हँसती बोलती मालका पर दफ़तन् कैसे रंजव गम को बिजली गिरी यह राज़ किसी के समझ में न आता, बाज़ नौकरों ने मिस्टर टेलर से पूछा मगर साफ़ जवाब न मिला आपस में बराबर खिचड़ी पकती रही।

एक— क्यों खानसामा जी क्या होनेवाला है, मेम साहबा बहुत उदास हैं असबाब भी बकसों में होकर रेलघर जारहा है।

दूसरा—मारोन् साहब भी तो आये थे इस कोठी में शायद वही उठ आवेंगे।

तीसरा— कुछ हाल नहीं खुलता कि वे सान गुमान यह क्या हो गया!।

एक—मालूम होताहै कि मेमसाहब का दिवाला निकल गया, कुल कर्ज़दार आनेवाले हैं इसवास्ते आजही सब असबाब बाँध बूँध डाला।

दूसरा— हमको तो यह मालूम होता है कि मेमसाहब आज कहीं भागनेवाली हैं।

एक— हम लोगों को कौड़ी दे जाती नहीं तो पीछे मुश्किल होगी।

तीसरा— हम यह समझते हैं कि मेमसाहब का ब्याह होनेवाला है इसी से सब चीज़ वस्त फ़रोख्त कर डाला।

एक—चलो मेम साहब से खुदही पूछें।

सब नौकर मिसेज़ हील के पास गये और बचश्म पुरनम् खानसामां ने दर्याफ्त किया कि हुजूर आज क्यों रंजीदा हैं और तैयारियां कैसी होरही हैं, सब नौकर लोग परेशान हैं।

मिसेज़ हील—बुड्ढे खान्सामा! मैं तुम्हारी और सब नौकरों की मुहब्ब-

त का शुक्रिया अदा करती हूं। बेशक आज रात से थोड़े दिन के लिये तुम सब मुझसे अलग हो जाओगे और यह अभी मैं न बतलाऊंगी कि मैं कहां जा रही हूं मगर बहुतही चन्द रोज़ बाद मैं अपने वफ़ादार नौकरों को बुला लूंगी, मेरे सब नौकर मुझको दिल से प्यारे हैं और मुझ को सब की वफ़ादारी और ईमान्दारी पर पूरा भरोसा है, यह लो तुम सब की आज की तारीख़ तक तनखाह और यह एक २ महीने की तनखाह इनाम, सिर्फ़ तुमसे इतनी मेहर्बानी चाहती हूं कि जब तक मैं रेल पर सवार न हो लूं मेरी रवानगी का राज़ अफ़शा न करो और मेरे जाने का हुल्लड़ न मचाओ, आया मेरे साथ जायगी इसवास्ते इसकी तनखाह मैं आज न दूंगी।

खानसामा — खुदावन्द हम लोगों का बालबच्चा आपकी ज़ात से पलता था ऐसा मालिक हमलोगों को न मिलेगा (सब नौकर रोने लगे)

मिसेज़ स्टील—मेरे प्यारे नौकरो! तुम न रोओ (आंसू पोंछ कर) मैं तुमको हर्गिज़ न छोड़ूंगी तुम एक महीने अपने २ घरों पर मेरी चिट्ठी का इन्तज़ार करना और कहीं नौकरी न कर लेना, महीने के अन्दरही अन्दर तुमको मैं जहां हूंगी बुला लूंगी।

खान्सामा—क्या सर्कार की शादी होनेवाली है?।

मिसेज़ स्टील—मैं कुछ अभी नहीं कह सकती, इस वक़्त तक मेरे कुल मामलात नातमाम नामुकम्मल और ग़ैर साफ़ हैं, खुदा से सब कुछ उम्मेद है और उसी का सब सहारा है, मुम्किन है कि खुदा अपनी मेहर्बानी से मेरे रंज को खुशी से बदले और मुझे अपनी नेअ़मत से सर्फ़राज़ करे। मेरे दोस्त नौकरो! तुम मुझसे अब कोई सवाल न करो एक महीने के लिये मुझे मेरे खुदा पर छोड़ दो। खान्सामा! वह तार लेकर कौन गया था? देखो अभी तक जवाब नहीं लाया।

खान्सामा—साईस गया था आदमी हुशियार और चालाक है, शायद जवाब नहीं आया है वर्ना साईस देर न करता।

मिसेज़ स्टील—दूसरा आदमी तारघर भेज दो जिसमें जल्दी पता लगे।

खान्सामा—बहुत बेहतर, आज सर्कार ने हाज़री अभी तक नहीं खाई बर्सफ़र्ड साहब भी मुन्तज़िर बैठे हैं।

मिसेज़ स्टील—मुझे बिल्कुल भूख नहीं साहब को खिला दो मुझे जब ख़ुदा खिलावेगा तभी खाऊंगी। इतने में साईस और तारघर के चपरासी दूर से दिखाई दिये।

मिसेज़ स्टील ने बेताब होकर चपरासी को पुकारा उसने दौड़ के तार का लिफ़ाफ़ा दे दिया, मिसेज़ स्टील को इस दर्जा घबराहट थी कि तार की रसीद पर भी दस्तख़त न किये फ़ौरन् लिफ़ाफ़ा खोलकर तार पढ़ा वह हस्ब ज़ैल था।

मिन्जानिब अमीरहसन इटावा, बनाम मिसेज़ स्टील—

आओ और मेरी जान माल की मालिक बनो, मैं तुम्हारा बेचैनी के साथ मुन्तज़िर रहूंगा।

इस तार के पढ़तेही मिसेज़ स्टील की हालत में बहुत बड़ा तग़य्युर पैदा हुआ, चेहरे की उदासी, लबों की ख़ुश्की, सर्द आहें थोड़ी देर में सब रुख़सत होगईं, मसर्रत और इतमीनान ने चेहरे को पलक मारते में शगुफ्ता और बारौनक़ कर दिया, मिसेज़ स्टील ने फ़ौरन् अपने बाप को पुकारा और उन्हें भी मिस्टर अमीरहसन के जवाब से इत्तिला दी।

गार्नर—प्यारी! मैं तुम्हारी ख़ुशी से ख़ुश और तुम्हारे रंज से रंजीदा होता हूं मगर सवाल यह है कि वह मुसल्मान और तुम ईसाई, यह शादी क्यों कर हो सकेगी? दूसरे जान्स से जब तक तुम्हारी ख़लासी न हो ले शादी ख़िलाफ़ क़ानून होगी और इस में अमीरहसन और तुम्हारा दोनों का नुकसान होगा और प्यारी! सच पूछो तो मुझे यह भी यक़ीन नहीं कि तुम्हारा एक दिन भी अमीरहसन के यहां निबाह होगा।

मिसेज़ स्टील—अब्बाजान! मुझे उम्मेद थी कि मुझ दिलशिकस्त को आप इत्मीनान देंगे, लेकिन आपने और जलते हुए दिल पर तेल छिड़क दिया, ख़ुदा के लिये ऐसी कमज़ोरी की बातें मुझसे न किया कीजिये, सिवा मेरे और आपके तीसरा यह राज़ न जान सकेगा कि मैं कौन हूं और कहां हूं। मैं इटावे में पर्दे में रहूंगी और इसके अलावा अमीरहसन मैजिस्ट्रेट है उसका कोई कुछ नहीं कर सकता।

गार्नर—क्या अमीरहसन इस राज़ से वाक़िफ़ है कि तुम्हारी एक मर्तबा

शादी हो चुकी है और तुम्हारा शौहर ज़िन्दा है ?।

मिसेज़ स्टील—खुदा न करे वह वाक़िफ़ हों, मैं क्या बेवक़ूफ़ थी जो उनसे यह हाल कहने बैठती, आप वहम से ज़्यादा काम न लें मेरे कामों को मेरीही अक़ल और तदबीर पर छोड़ दीजिये देखिये किस खूबसूरती से सब अमूर ते होते हैं, किसको उम्मेद थी कि चश्मज़दन् में यह सब काठ किवाड़ सोलह हज़ार को बिकजायगा और नक्द् क़ीमत भी वसूल होजायगी खुदा की मेहर्बानी से कुछ वईद नहीं।

गर्नर—लेकिन तुमने इसका जवाब नहीं दिया कि वह मुसल्मान तुम ईसाई शादी कैसे होगी।

मिसेज़ स्टील—मुसल्मान और ईसाइयों का व्याह क़ानूनन् जायज़ है, बहुतसे मुसल्मान विलायत से मेमें व्याह लाये, जिस तरह उनकी शादी हुई वैसेही मेरी भी होगी, आप इस बारे में ज़्यादा तरद्दुद न फ़र्माइये।

अलग़र्ज़ मिसेज़ स्टील ने अपना कुल सामान रेलके वक़्त तक दुरुस्त करलिया नौकर चाकर सबकी तनख्वाहें दे दीं, अपने बाप को भी चार महीने का खर्च दे दिया और मिस्टर मारिसन के मुलाज़िम को सब चीज़ें शुमार करा दीं पांच बजते २ कोठी खाली करके खुद बँगले से चली गईं और मिस्टर गर्नर ने पटने की राह ली।

बाब चौबीसवां।

जान्स की वापसी।

जान्स और ऐटकिन्स मिसेज़ स्टील के हाथों ज़िल्लत उठा कर सीधे स्टेशन पर आये।

जान्स को सख्त ग़ुस्सा रंज और निदामत थी, वह बार २ सख्त मुतहैय्यर होता था कि दुनियां में इस तरह भी जोरू के हाथ से शौहरों पर सख्ती गुज़र सकती है, यह उसको कभी ख्याल न गुज़रता था कि मिसेज़ स्टील या मिस्टर गर्नर ने वाक़ई उसे नहीं पहचाना, तीन चार बरस का ज़माना हर्गिज़ इतना लम्बा नहीं होता कि जोरू शौहर को भूल जाय और वह भी अँगरेज़ों में; हिन्दुस्तान में हिन्दू मुसल्मानों में जो तरीक़ा शादी का जारी है उसमें मुमकिन है कि जोरू खाविन्द को न पहचान सके क्योंकि पहिले से दोनोंमें वाक़फ़ियत या जान पहचान नहीं होती, अजनबी सूरतें बे देखे हुए आदमी

दफ़तन् मिलते हैं मगर उनमें फ़ौरन् फ़र्क़ हो जाय और चन्द बरस के बाद एक दूसरे को देखे तो भूल जाना मुम्किन है मगर महीनों की इश्क़बाज़ी और हफ्तों की कोर्टशिप के बाद शादी होना और फिर अर्सा तक एक जगह रहना यह सब चारही बरस में भूल जांय मुम्किन नहीं हो सकता।

ऐटकिन्स—क्यों जी जान्स ! यह क्या तमाशा था ? तुमने हमें भी ज़लील किया और खुद भी ज़लील हुए।

जान्स - मुझे खुद हैरत है मैं तुम्हें क्या जवाब दूं।

ऐटकिन्स — क्या वाक़ई मिसेज़ हील तुम्हारी बीवी हैं ?

जान्स—क्या तुम्हें अब तक शुबहा है, बखुदा यही औरत मेरी जोरू है इसने अपना नाम बदल दिया है और अब किसी और से व्याह की फ़िक्र में है और बेसफोर्ड वही बुड्ढा गर्नर इलिस इसका बाप है, देखो दुनिया में अब ऐसा खून सफ़ेद होगया।

ऐटकिन्स—मगर मैंने सुना था कि वह कप्तान हील की बेवा है।

जान्स—महज़ ग़लत, वल्ला यही मिसेज़ जान्स है मगर सख्त ऐयारा बेवफ़ा और ज़ालिम औरत है, मैं अब तमाम उम्र उसकी तरफ़ रुख़ भी न करूंगा, ऐसी दग़ाबाज़ और बदकार औरत से नजात मिलना भी मेरी खुशनसीबी है।

ऐटकिन्स--फिर अब इरादा क्या है?

जान्स—कुछ नहीं चलो कलकत्ते वापस चलें वहां पहुँच कर अदालत में निकाह तोड़ने का मुक़द्दमा दायर कर दें, मुझे अब इस औरत से ज़रा ताल्लुक़ मंज़ूर नहीं है।

ऐटकिन्स—मुक़द्दमा दायर करना भी बेकार है, जब वह तुम्हें पहचानती ही नहीं तो इस बखेड़े से क्या हासिल बल्कि बेहतर यह है कि तुम उसको इसी हालत में रहने दो, जब कहीं शादी करे उसवक्त अपना मावज़ा लेना निकाह तोड़ कर आज़ादी दे देना मेरे नज़दीक नामुनासिब है।

जान्स - वाक़ई यह राय उम्दा है मैं बग़ैर सज़ा दिये न रहूंगा, चाहे मेरा कुल रुपया बर्बाद हो जाय, चाहे मैं खुद जेलखाने चला जाऊं मगर इस शत्ताह को बे मज़ा चखाये न रहूंगा।

ऐटकिन्स—अगर यह इरादा है तो आप अपने बुलन्दपर्वाज़ियों से बाज़ आइये और चुपचाप देखिये कि मिसेज़

होल क्या करती है उसके बाद जो मसलहते वक़ हो किया जाय।

जान्स—मगर कलकत्ता बहुत दूर है वहां से मुफ़स्सिल हालात मालूम होना दुश्वार होंगे अगर तुम मेरी मदद पर आमादा हो तो मेरा काम सब ठीक हो सकता है।

ऐटकिन्स— मैं दिलो जान से इस काम में तुम्हारा शरीक हूं, इस कम्बख़्त ने मुझे ख़ुद बड़ा धोखा दिया है गो तुम्हारे सामने वह क़िस्सा बयान करना शायद बेमौक़ा हो।

जान्स— कुछ बेमौक़ा नहीं जब मैं तर्क तालुक़ही कर चुका तो अब उस बदकार औरत के हालात सुनने में मुझे क्या ताम्मुल हो सकता है।

ऐटकिन्स— ख़ुदा का शुक्र है कि मेरी दास्तान् बहुत तूल तवील नहीं है, जब मिसेज़ होल कलकत्ते में आरे की कल ख़रीदने गई थीं मुझसे मुलाक़ात हुई पहलेही रोज़ मुझे इस दर्जा गुस्ताख़ और बे तकल्लुफ़ कर लिया गोया बरसों की मुलाक़ात थी, मुझसे खुद अपने मुंह से कहा कि मैं बेवा हूं और तुमसे शादी कर लूंगी, मैं सीधा सादा आदमी उसकी बातों में आगया और मुझे इसका बिल्कुल यक़ीन होगया कि एक न एक दिन मिसेज़ होल से ज़रूर मेरी शादी हो जावेगी।

जब मुझे मिसेज़ होल ने बरख़ास्त किया मुझसे सख़्त बे रुख़ी से पेश आई वह सदमा मेरे दिल पर इस वक़्त तक तरोताज़ा है, अब मालूम हुआ कि यह कम्बख़्त औरत तुम्हारी बदनसीब जोरू है, मैं भी उसकी चालाकी और दग़ाबाज़ी का बदला लेने को मुस्तैद था अब तुम्हारे क़िस्से के बाद और भी मुझपर फ़र्ज़ हो गया।

जान्स – मैं तुम्हारे साथ हूं और इन्शा अल्ला वह बदला लिया जाय कि उम्र भर मेमसाहब भी याद करें और तमाम दुनियां में बदचलन औरतों को एक सबक़ हो जाय।

जान्स — फिर क्या इलाज है, बेशक इस औरत को उसकी बदआमालियों का मज़ा चखाना चाहिये अगर तमाम दुनियां में सब औरतें इसी तरह क़वानीन क़ुदरत को ज़लील करदें और शादी के मज़बूत तअल्लुक़ को इसी तरह तोड़ दिया करें तो कोई काहे को शादी ब्याह करे, औरतें जो चाहे कर लिया करें मर्द बेचारे रोते फिरें, अफ़-

सोस मैंने इस सूरत पर ख़सायल नेक और इस सीरत को तर्जीह न दिया, मेरी ऐसी अच्छी जगह शादी ठहरती थी कि सुभानअल्ला, लेकिन वह औरत इस से ज्यादा ख़ूबसूरत न थी इस कमबख़्त ने मेरी अच्छी ख़ासी आमदनी की नौकरी छुड़ाई, मुझे बर्मा में ख़राब व ख़स्ता रक्खा और अब इस तरह पेश आई।

ऐटकिन्स — मेरी राय यह है कि आज सीधे कलकत्ते वापस चलो वहां इस्तीफ़ा दे कर मनेजर से फ़राग़त हासिल कर ली जाय लौट कर कहीं इसी जवार में क़याम किया जाय और जब तक लेडी साहबा को उनकी रास्तबाज़ी और वफ़ाशारी का इनाम न दे दिया जाय उस वक़्त तक किसी काम पर तवज्जह न की जाय। मुझे पूरा यक़ीन है कि मिसेज़ डील अनक़रीब कहीं न कहीं शादी कर लेगी, तुम्हारी वापसी के बाद इस तरह हर्गिज़ अकेली वह नहीं रह सकती अगर मेरा ख्याल सही निकले और कहीं शादी हो जाय तो मेमसाहब और नये शौहर साहब दोनों इज़देवाज की ज़ंजीर में ऐसे जकड़ेंगे कि देखिये तमाशा।

जान्स — "बस मेरी भी यही सलाह है" अलग़र्ज़ दोनों दोस्त मिसेज़ डील से बदला लेने पर मुसमतन आमादा थे फ़ौरन् स्टेशन पर आतेही कलकत्ते की मेल ट्रेन मिल गई, दोनों ने टिकट लिये और रेल में सवार हो कर कलकत्ते को वापस चले जिस दर्जे में यह दोनों मुसाफ़िर सवार थे इत्तिफ़ाक़ से दो तीन और अङ्गरेज़ भी बैठे थे जो आपस में तरह तरह की बातें कर रहे थे। मिस्टर जान्स और ऐटकिन्स दोनों ख़ामोश थे कुछ तो तीन रोज़ की तकलीफ़ सफ़र ने पज़मुर्दा कर दिया था और कुछ सुबह के वाक़िआ हसरतनाक ने अफ़सुर्दा बना रक्खा था, यह लोग तो कुछ बोलते चालते न थे लेकिन अपने साथी मुसाफ़िरों की बातें ग़ौर से सुन रहे थे और यह बातें भी हमारे दोस्तों को ख़ाली अज़फ़ायदा न थी।

एक — आज सुना हसीन मिसेज़ डील ने अपना कुल सामान और सारा घर बेच डाला।

दूसरा — बेच डाला! अजी नहीं कल रात को मिसेज़ डील के घर

खाना था मैं खुद उसमें शरीक था कि-सी किस्म का तज़किरा खरीद फरोख्त का न था, मिसेज़ ह्वील ने यह मुझ से ज़रूर कहा था कि चन्द रोज़ में उनका इरादा आगरे से चले जाने का है लेकिन जब मैंने तशरीफ़ ज़माने की दर्याफ्त की तो उन्होंने साफ़ कहा कि अभी खुद उनको भी मालूम नहीं।

एक—हां कल रात तक शायद इ-रादा न हो लेकिन आज सुबह को वह तमाम शहर में घूमीं और मुझ से खुद मिस्टर मारिसन् कहते थे कि सोलह हज़ार को उन्होंने कुल कारखाना मोल ले लिया।

तीसरा—शायद मिसेज़ ह्वील क-हीं जानेवाली हैं, मैंने स्टेशन पर चन्द बक्स मिसेज़ ह्वील के देखे थे सोलह हज़ार को मारिसन् ने आरामघर और कुल सामान सस्ता पाया मिसेज़ ह्वील के पास बहुतही अच्छा फर्निचर था।

दूसरा—मेरी आज तक समझ में न आया कि मिसेज़ ह्वील क्या शै है।

एक—खूब! दावतें आप चखें जलसा आप देखें गाड़ीं पर चढ़ाये आप घूमें और यह भी मालूम नहीं के 'ज़ुलेखा ज़न् बूद या मर्द'।

दूसरा—भई गाड़ी पर लिये घूम-ना या दावतें उड़ानां कोई अजीब बा-त नहीं जब एक नौजवान और हसीन औरत इस तरह बेबाकी से मर्दों को सिर चढ़ाये तो वह कौन ऐसा मर्द होगा जो उस आज़ादी और बेबाकी से फ़ायदा न उठाये मगर मैं ईमानन् कहता हूं कि मुझे आज तक मिसेज़ ह्वील की हालत से पूरी वाक्फ़ियत नहीं यह भी नहीं जानता कि मिसेज़ ह्वील उनका असली नाम है या फ़र्ज़ी। उन-की शोखी और तर्रारी से मुझे ज़रूर शुबहा होता है कि कोई न कोई राज़ मिसेज़ह्वील का ज़रूर हम लोगों से पोशीदा था।

एक—मैंने जहां तक सुना वह यही है कि वह कप्तान ह्वील की नौ जवान बेवा है और उसका बाप कोई अमीर आदमी है जो विलायत से खर्च भेजा करता है मगर किसी वजह से अपनी बेटी को विलायत जाने की इ-जाज़त नहीं देता है।

दूसरा—अजी यह सब वाहियात बातें हैं, बुड्ढा बेर्सफ़र्ड जो मनेजर के लकब से मशहूर है, उसकी सूरत और मिसेज़ ह्वील की सूरत बहुत मिलती

है, मेरा शुबहा यह है कि मिसेज़ हील उसकी लड़की है और किसी सबब से यह राज़ छिपाया जाता है। बेर्सफ़ई का बर्ताव भी इससे बुज़ुर्गाना है।

तीसरा — मिसेज़ हील असली यूरोपियन नहीं मालूम होती, गो अमीरी और ख़ुशपोशाकी के सबब रंग रूप चमक दमक यूरोपियन लेडियों से भी उसमें ज्यादा है, एक और बात भी आज तक मेरी समझ में न आई, आखिर मिसेज़ हील का खर्च क्यों कर चलता है, दूकान महज़ बराएनाम है न उसमें कोई माल और न कोई खरीदारी बाराघर एक रोज़ भी नहीं चला फिर यह सब कर्रोफ़र शान व शौकत कैसे कायम है, वाक़ई मिसेज़ हील अजीब व ग़रीब औरत है, उसके राज़ों का पता लगाना कोई आसान काम नहीं।

एक — कुछ तुम्हीं को नहीं सब लोग इस बारे में मुताज्जिब हैं चन्द रोज़ हुये जब यह ख़बर मशहूर हुई थी कि मिसेज़ हील किसी हिन्दुस्तानी नौजवान से शादी करने वाली हैं बल्कि तमाम सुसाइटी में यह ख़बर मशहूर हो गई थी मगर मिसेज़ हील ने ख़ुद उसकी तर्दीद की।

दूसरा — हां मैंने भी यह ख़बर सुनी थी और मैंने एक रोज़ मिसेज़ हील की डिनरपार्टी में उस मुसलमान को देखा भी है, शायद अमीरहसन उसका नाम है। आदमी अच्छा खूबसूरत और मुतमौवल है लेकिन शादी की बाबत कोई तहक़ीक़ ख़बर सुनने में नहीं आया है सिर्फ़ बाज़ारी अफवाह थे।

तीसरा - आहा! मिस्टर अमीरहसन शादी करनेवाले हैं, मैं उन्हें ख़ूब जानता हूँ, वह आज कल इटावे में डिप्टी कलेक्टर हैं, आगरे में कोई दूकान्दार ऐसा न होगा जिसके वह क़र्ज़दार न हों, निहायत फ़ज़ूलखर्च और ग़ैरमुन्तज़िम शख्स हैं, अगर मिसेज़ हील उनसे ब्याह करेंगी तो यक़ीनीं पछतायँगी।

जान्स इस तज़किरे को सुन कर एकबारगी बोल उठा, वह लाख चाहता था कि ज़ब्त से काम ले मगर दर्दिदिल ने उसे ज़बान खोलने पर मजबूर किया।

जान्स — हज़रत मिसेज़ हील इस न्याज़मन्द की बेवफ़ा दग़ाबाज़ और गुनहगार ज़ौजा है।

एक — भई वल्लाह ! यह अजब तमाशे को बात सुनने में आई ! अजी हज़रत आप किस ख्वाब व ख्याल में हैं।

जान्स — मैं कप्तान झील नहीं हूं जिसके ख्याल में आपलोग हैं, मेरा नाम एडवर्ड जान्स है और वह औरत मेरी मनकूहा औरत है अफ़सोस उसने मेरे ज़माने ग़ैरहाज़री में जब मैं वहां गया था अपना नाम बदल दिया अपनी वजह बदल कर दी और अपने को इस तरह ज़लील और बदनाम किया।

दूसरा — फिर आज आप मिले नहीं ?।

जान्स — शायद यह मेरेही मिलने का नतीजा था कि मिसेज़ झील ने अपना घर बार बेच बांच भागने का इरादा किया।

एक — क्या आपके साथ भागनेवाली हैं ?।

जान्स — नहीं मुझे तो पहिचाना भी नहीं मेरे डर से ग़ालिबन् वह आगरे की सकूनत तर्क करनेवाली हैं।

ऐटकिन्स — बस जान्स, अब ज्यादा बातें न करो तुम दिन भर के थके मांदे हो तुम्हें यह रास्ता चुपचाप काटना चाहिये।

एक — मिस्टर जान्स ! आपसे हम लोगों को कमाल हमदर्दी है, खुदा करे आप का रंज जल्द कम हो और अखबारों में आप की बीबी और आप के तिलाक का मुकद्दमा बड़े २ हर्फों में जल्द आया हो। इस पर सब लोगों ने बड़े ज़ोर से कहकहा लगाया और मिस्टर जान्स मलूल और मग़मूम हो कर अपने मेज़ पर लेट गये और उन मुसाफिरों ने फिर आहिस्ता २ बातें शुरू कीं।

एक — कोई मजनूं मालूम होता है, कहां मिसेज़ झील और कहां यह हज़रत !

दूसरे — हमने तो कभी जान्स का नाम भी नहीं सुना, मुमकिन है सच भी हो लेकिन हमको इस बखेड़े से क्या वास्ता; हां फिर अमीरहसन बहुत कर्ज़दार हैं ?।

तीसरा — अज़हद, मेरा ख्याल यह है कि बहुत दिन वह सर्कारी नौकरी में भी नहीं रह सकते।

एक — क्या ? गुफ्तगू से तो बहुत लायक और संजीदा मालूम होते हैं।

तीसरा — ल्याकत में कोई शक

नहीं अङ्गरेज़ो बहुत अच्छी जानते हैं मगर हाल में गवर्मेण्ट ने बहुत सख्त सरक्यूलरात जारी किये हैं कि कोई सर्कारी नौकर अपने अहातये हुकूमत में कर्ज़ न ले बल्कि कई अफ़सर इसी इल्लत में मौकूफ़ हो गये हमको मि० अमीरहसन का भी यही अंजाम दिखाई देता है।

एक—अजी "कै आमदी कै पीर शुदी" अभी अमीरहसन को नौकर हुये कै रोज़ हुये और यह क्या मालूम कि वह इटावे में भी कर्ज़ लेते हैं, आगरे का कर्ज़ उनकी नौकरी के लिये कुछ मुज़िर नहीं।

तीसरा— "खूये बद् दर तबीयते कि नशस्त । न रवद् जुज़ बवक्ते मर्ग अज़ दस्त"॥

जो बुरी आदत किसी इन्सान को एक दफ़ा पड़ जाती है बड़ी मुश्किल से छूटती है, मुझे मिस्टर अमीरहसन की तरफ़ से मायूसी है, वह मेरे दोस्त हैं और मैं उनसे बखूबी वाकिफ़ हूं, उनसे ज़्यादा मुरौव्वतदार फ़्याज़ दोस्तनिवाज़ शख्स शायद किसी ने कम देखा है, लेकिन अफ़सोस उनकी बेपरवाही और बदइन्तज़ामी की वजह से कुल सिफ़तें मिट्टी हो रही हैं, अगर मिसेज़ हील से उनका ब्याह हो गया जैसे कि खबर मशहूर है तो और भी उनकी बदकिस्मतियों की तकमील हो जायगी।

मिस्टर जान्स — क्या बेहूदा बक२ लगाई है तुम लोगों को ख्याल नहीं कि मेरे रूबरू मेरी जोरू का दूसरे के साथ शादी का तज़किरा कर रहे हो, मजाल है कि जब तक मैं तिलाक न दे लूं मेरी बीबी से शादी करेंगे।

मुसाफ़िर— आप खफ़ा क्यों होते हैं, हम लोग न आप से वाकिफ़ और न आपकी मेमसाहबा के। रास्ते चलते कोई किसी की ज़बान बन्द नहीं कर सकता अगर आपको ऐसाही नागवार होता है तो मेहर्बानी करके दूसरे कमरे में चले जाइये हमलोग आपसे बातें नहीं करते हैं, आपस में बातचीत कर रहे हैं उसके रोकने का किसी को मजाज़ नहीं।

ऐटकिन्स — जान्स ! तुम नहीं मानते, पचास मर्तबा समझाया कि तुम आराम और सकूत के साथ सफ़र करो, अभी परसों बीमार हो चुके हो अगर इसीतरह यह ख्याल क़ायम र-

रखोगे तो तुम्हारी जिन्दगी दुश्वार है ।

अलगर्ज़ मिस्टर जान्स और मिस्टर ऐटकिन्स दोनों ब कमाल मयूसी व हैरानी कलकत्ते वापस आये। दूसरेही दिन मनेजर कम्पनी से जहां दोनों नौकर थे मिले और तर्क मुलाज़मत करके आज़ादी हासिल की ।

पचीसवां बाब।

अमीरहसन की जेण्टिलम्यानी

हमारे दोस्त मिस्टर अमीरहसन अपने रंग में बहुतही डूबे हुये थे, गो हिन्दुस्तानी शरीफों से उनका कुछ भी ताल्लुक बाकी न रहा, गो फ़ेशन के बहुत से अंगरेज उनको नज़र हिकारत से देखते थे लेकिन उन्हें कुछ भी पर्वाह न थी वह अपने अंगरेजी फ़ेशन अंगरेज़ी तर्ज़ माशरत और उमदा सजे हुये बंगले पर इस दर्जा नाज़ां थे कि दुनिया की कोई हवस उन्हे बाकी न रही थी, अपने काम पर भी उन्हें तवज्जह न थी, गो मिस्टर माबेल इम्तिहान के लिये सख़्त ताकीद करते थे मगर अमीरहसन को ज़रा भी ख़्याल न था, उन्हें डिप्टी कलेक्टर हुये एक बर्स से ज्यादा होगया दो मर्तबा इम्तिहान में शरीक हुये और हिन्दी तक में पास न हुये लेकिन इस को उन्हें कुछ भी ग़ैरत न थी, मां भाई भावज और बीबी यह सब उनके हिसाब मर चुके थे, वह अपने तईं बिलकुल ख़ुदमुख़्तार निहंग और आज़ाद अहले बिलायत जेन्टिलमैन समझते थे। यह दस्तूर भी है कि इन्सान हर वक़्त जब एकही चीज़ पर मरो रहे दिन रात उसी का ख़्याल रहे तो वह उसी का हो भी जाता है; चूंकि अमीरहसन हर वक़्त यूरोपियन सुसाइटी और अंगरेजी वजह और अंगरेजी तर्ज़ माशरत का ख़्याल रखते थे, मुमकिन है कि वह अपना हिन्दुस्तानी होना भूल भी गये हों, इस अर्से में उनकी हालत में बहुत कुछ तग़य्युर होगया, बवजह न पास होने इम्तिहान के तनख़ाह वही रही मगर मसारिफ़ रोज़ बरोज़ बढ़ते गये इबतदा में एक टमटम और दो घोड़े थे अब छः घोड़े थे और चार पांच गाड़ियां उनके अस्तबल में थीं। कर्ज़ का ख़ासा है कि थोड़ी बेपरवाही से वह इतना जल्द बढ़ता है कि ताअज्जुब होता है। मि अमीरहसन ने अपने कर्ज़ की तरफ से थोड़ी नहीं बल्कि बहुत बड़ी बेपर्वाही की। उनको मुसल-

क ख़बर न थी कि वह किस २ के कर्ज़दार हैं और उन्हें कितना रुपया देना है, जिस क़दर बिल आये वह हमेशा बे पढ़े हुये चाक कर डालते थे, रजिष्टरीशुदा बिल और नोटिस इससे भी ज़्यादा बेपर्वाही से फाड़े जाते थे, जब कोई सौदागर या दुकान्दार सख़्त मुतक़ाज़ी होता मिष्टर अमीरहसन दूसरी जगह से क़र्ज़ लेकर थोड़ा बहुत उसे दे देते लेकिन यह उन्हें ख़्याल भी न गुज़रता कि किसी इन्तज़ाम से आदाय क़र्ज़ करना चाहिये। ख़ुद उन्हें मालूम न था कि वह कितने के क़र्ज़दार हैं मगर तमाम शहर में यह बात ज़बानज़द ख़ास व आम थी कि डेढ़ दो साल में मिष्टर अमीरहसन ने बीस पचीस हज़ार रुपया क़र्ज़ कर लिया, उनकी बेफ़िकरी और बदइन्तज़ामी वाक़ई हद दर्जा बढ़ी हुई थी, कोई महीना ऐसा न जाता जिसमें सौ पचास रुपया सिर्फ़ खेल कूद और सैर तमाशे के चन्दों में वह न ख़र्च करते हों। महीने में एक या दो डिनर भी ज़रूर देते थे, मोअज़्ज़िज़ अंगरेज़ कोई भी शरीक नहीं होते थे लेकिन अदने दर्जे के अंगरेज़ जैसे रेलवे गार्ड वग़ैरह हमेशा मिष्टर अमीरहसन के मेहमान होते थे। हर दावत में कम से कम डेढ़ दो सौ रुपये की सिर्फ़ शराब ख़र्च हो जाती थी, जो कोई नई चीज़ अख़बारों में मुश्तहिर हुई हमारे दोस्त ज़रूरही ख़रीद लाते, ख़्वाह उसकी ज़रूरत हो या न हो। मिष्टर अमीरहसन अपने इन आदात और अतवार की वजह से ख़ुद भी ख़ुश व ख़ुर्रम न थे, हिन्दुस्तानी कोई उनसे मिलता न था क्योंकि उन्हों ने ख़ुदही अपने को अलहदा कर रक्खा था, अंगरेज़ों से उनकी क़द्र इब्तिदा में शायद कुछ हुई हो मगर अब बिल्कुल न थी, उनकी क़र्ज़दारी और फ़ज़ूलख़र्ची के क़िस्से इस दर्जा मशहूर थे कि अंगरेज़ों को उनसे एक क़िस्म का मुतफ़र्क़ा पैदा हो चला था। मोअज़्ज़िज़ यूरोपियन लोगों ने किसी दावत या पार्टी में उन्हें कभी नहीं बुलाया, सिर्फ़ मिष्टर मावेल अलबत्ता उन्हें खानेपर बुलाते और अपनी वज़हदारी से जो तरीक़ा इब्तदाअन् अख़्तियार किया था अब तक क़ायम रक्खे हुए थे। एक सुबह से दूसरी सुबह तक अमीरहसन तनहा अपने मकान में बने ठने कोठी में बैठे रहते थे और किसी

मुलाकातो की सूरत भी देखने को न मिलती थी, कभी २ वही मुफ्तखोरे एञ्जिनड्राइवर और रेलवे गार्ड आ जाते थे, अमीरहसन उनसे ड्राइङ्गरूम में मुलाकात करके खूब तवाज़ा व तकरीम करते थे। हिदायतरसूल मौजूद थे। एक दिन सेहपहर को टामी जेक और कुक मिस्टर अमीरहसन के ड्राइङ्ग रूम में रौनक़ अफ़रोज़ थे। टामी, और कूक दोनों इञ्जिन ड्राइवर थे और जेक टिकट कलेक्टर। ख़ान्सामा ह्विस्की और सोडा वाटर खोल २ कर पेश करता था और वह लोग ख़ुम के ख़ुम उड़ाये चले जाते थे। दफ़तन् चपरासी ने आकर कार्ड दिया, मिस्टर चार्ली असिस्टेन्ट मैजिस्ट्रेट मिलने को आये थे। अमीरहसन उस वक्त सख्त शश व पंज में पड़े न अपने यारान बदमस्त को उठा सकते थे और न उसी हालत में चार्ली साहब को बुलाया चाहते थे। टामी ने पूछा किसका कार्ड है, कोई जेन्टिलमेन आया है ?

अमीरहसन— हां, मिस्टर चार्ली असिस्टेन्ट मैजिस्ट्रेट आये हैं।

जेक—डाम् योर चार्ली (ब आवाज़ बुलन्द व बहालत नशा)

Let us drink and be merry. Dance, joke and rejoice with claret and sherry. The orbs and voice changeable worlds to our joy is unjust. All pleasure certain so down with your dust.

हमारे दोस्त लोग जो अँगरेज़ी गीत गा रहे थे उसका तर्जुमा हस्ब ज़ैल है।

आह मो पोकर रचायें अब ख़ुशी।
नाचें कूदें और मनायें दिल्लगी॥
दो गिलासों में क्लारेट औ शेरी।
तोबः टूटे बस इसी दम इस घड़ी।
इनक़िलाबे दहर से बद्तर नहीं॥
जलसये इशरत में है कोई बदी।
कुछ नहीं उमेद सीमो ज़र हमैं॥
ख़ाकही से जो तो बहलावें सही।
आह मो पीकर रचायें अब ख़ुशी॥

अमीरहसन — ज़रा चुप रहिये मिस्टर चार्ली आये हैं, आपको आवाज़ सुनते होंगे क्या कहेंगे।

जेक—क्या तुम हमको जेन्टिलमैन नहीं समझता ? हम चार्ली से किस बात में कम है ?।

अमीरहसन— मिस्टर जेक ! मेरी ख़ातिर से ज़रा ख़ामोश रहो।

जेक — ताज़ा बताज़ा नौ ब नौ।
इस क़दर था न कभू अलग २॥ आ

न कभू अलग २। था न कभू अलग अलग॥

इतने में चार्ली साहब ने चपरासी से कहा कि 'डिप्टी साहब क्या कर रहा है? चपरासी ने मारे डर के कह दिया कि हुजूर को सलाम दिया है।

चार्ली साहब भी गोल कमरे में तशरीफ ले गये, इन बदमस्तों ने चूतर पीट पीट कर एक सख्त बदतमीज़ तरीक़े से मिस्टर चार्ली का वेलकम याने आने का गीत गाना शुरू किया। अमीरहसन अपनी तर्फ खामोश और परेशान थे और मिस्टर चार्ली जुदा मुतहैय्यर व अंगुश्तबदन्दां।

तीनों शराबी—चार्ली आये चार्ली आये वेलकम २ चार्ली आये खुश खुश आये, चार्ली आये चार्ली आये चार्ली आये। पीओपीओ तुम ह्विस्की बेग्। खुश २ आये, चार्ली आये चार्ली आये चार्ली आये। पास नहीं है कुछ भी उनके, खाली आये खाली आये।

मिस्टर चार्ली — डिप्टीसाहब माफ़ कीजिये मैं इसवक्त आपके जलसये निशात में हारिज हुआ। मैं जाता हूँ, मुझे इस जलसे का हाल मालूम न था वर्ना मैं हर्गिज़ न आता।

अमीरहसन जवाब भी न देने पाये थे कि असिस्टेण्ट साहब गुडमार्निङ्ग कह कर चलते फिरते नज़र आये, अमीरहसन के दोस्तों ने बड़े धूमधाम से अल्विदा का भी गीत गाया।

गीत। लो धता २ का हर एक सिम्त शोर है। जाने न पाये लीजियो जूती का चोर है। ह्विस्की का चोर है अजी ह्विस्की का चोर है। लो धता २ का हर एक सिम्त शोर है। बैठा न एक मिण्ट भी पर क़द बड़ा है। ऐसों के वास्ते अजी शट अप् दि डोर है।

मिस्टर चार्ली गो अमीरहसन के दोस्त थे मगर इस गैर मुहज़्ज़ब सोहबत को देख कर सख्त रंजीदा हुये और मिस्टर मावेल से भी इस किस्से को बयान किया; जिसका नतीजा यह हुआ कि छठे छमाहे जो कभी एक आध साहब लोग चले जाते थे वह भी दर्वाज़ा बन्द हो गया और सब लोगों ने एक कलम अमीरहसन के घर जाने से परहेज़ शुरू करदिया। उसी ज़माने में हुजूर वाइसराय आगरे में तशरीफ़ लाये, बड़ी धूम से दर्बार लेवी मुनअक़द फ़र्माया।

अमीरहसन ने हर्चन्द कोशिश की लेकिन लेवी में शिर्कत की इजाज़त न मिली, लेवी सिर्फ़ यूरोपियन जेण्टिलमेन और सिर्फ़ मेम्बरान नेटिव सिविल सर्विस के लिये थी और हिन्दुस्तानी डिप्टी कलेक्टरों के वास्ते एक अज़ीम उश्शान ऐसेही तरीके का दर्बार दूसरा होने वाला था, अमीरहसन ने आम हिन्दुस्तानियों के साथ दर्बार की शिर्कत खिलाफ़ शान समझ कर इन्कार कर दिया। इस वाक़ा से अमीरहसन और भी मग़मूम और रंजीदा हुये।

हिदायतरसूल — क्या हुज़ूर लेवी में न तशरीफ़ ले जायेंगे?।

अमीरहसन— मेरा इरादा नहीं है।

हिदायतरसूल — मगर हुज़ूर ने नया जोड़ा लेवी के लिये कलकत्ते से मँगवाया और सब तैयारियां कीं, अब नहीं क्यों कर दी?।

अमीरहसन — भई मैं इस बारे में सख्त नादिम हुआ मेरे दुश्मन् सब हँस्ते होंगे, सच्ची बात तो यह है कि डिप्टीकलेक्टरी महज़ ज़लील वहदा है, लेवी में वह घुसने नहीं पाते, सुसाइटी में उनका गुज़र नहीं, क्लब में वह शरीक नहीं हो सकते, डिप्टी कलेक्टरी महज़ पुराने फ़ैशन के हिन्दुस्तानियों के लिये है, मेरा दिल फीका हो गया।

हिदायतरसूल — हुज़ूर बात यह है कि डिप्टीकलेक्टरी में इस क़द्र रहुये खदुये भर गये हैं कि वह वोहदा ज़लील होगया। जब हज़ार में नौ सौ निन्नानवे ऐक फ़ैशन और एक तरह के हों और एक दूसरे किते का हो तो उस तनहा ग़रीब को कौन पूछ सकता है। मालूम होता है लाटसाहब को हुज़ूर के हालात से वाक़फ़ियत न थी वर्ना मुमकिन था कि हुज़ूर को लेवी में न बुलाते या गवर्मेण्ट हाउस में खाने का नेवता न भेजते?। अमीरहसन को अगर चश्म बसीरत होती तो यह सब वाक़यात इब्रत के लिये बहुत काफ़ी थे मगर वह चन्द रोज़ अफ़सुर्दगी और ग़म बर्दाश्त करने के बाद फिर वही फ़रज़न्द बे सामान हो गये। हिदायतरसूल बदस्तूर मुसाहबत में थे, अदने दर्जा के अङ्गरेज़ों से बदस्तूर रब्त ज़ब्त थी।

हिन्दुस्तानियों से वही नफ़रत, क़र्ज़ की वही कसरत, अलग़र्ज़ हरतरह उन की हालत रोज़ बरोज़ अबतर होती

जातीथी, उन्हीं दिनोंमें चन्द आदमियों ने नालिशें भी कर दीं और एक तर्फा डिगरियां भी हासिल कर लीं। यह खबरें सुन कर अमीरहसन को सख्त इज़तिराब और परेशानी हुई मगर उसका दफ़ाकरना उनके अख्तियार में न था। बकौल शख्से कि 'अब पछताये का होत जब चिड़िया चुग गईं खेत' न उनके पास कोई जायदाद बाकी थी जिससे वह कर्ज़ अदा कर सकते न उनका कोई दोस्त ऐसा था जो इस गाढ़े वक्त में उनका शरीक होता। एक दिन वह सुबह को बाग़ में बैठे हुये चाय पी रहे थे कि तहसीलदार मुकर्रमहुसैन फिर मिलने आये। अमीरहसन ने अपने मामूली शान व गुरूर से उन्हें लिया कुर्सी पर बैठने का इशारा किया, तहसीलदार साहब बैठ गये।

तहसीलदार— अज़ीज़ अजजान! आप चाहे मुझसे कैसाही बुरा बर्ताव करें लेकिन मुझे जो मोहब्बत आपके वालिद मर्हूम से थी वह किसी तरह कम नहीं हो सकती, उसी मोहब्बत ने मुझे आज फिर तुम्हारे पास आने पर मजबूर किया।

अमीरहसन — आप को जो कुछ कहना है कहिये मैं बार २ अपने वालिद मर्हूम का तज़किरा सुनना नहीं चाहता।

तहसीलदार — यह भी आपकी खाम ख्याली है जो कुछ आपकी इज़्ज़त और वकार है, महज़ आपके बाप के सबब। आप अभी महज़ तिफ्ले मकतब हैं सौ रुपये की तनख्वाह कोई वकअत नहीं रखती, मैं यह कहता हूं कि आपने इस दर्जा नखूत क्यों अख्तियार की, इसका क्या नतीजा? तमाम अम्माल आप की बदज़बानी और बुरे बर्ताव के शाकी हैं, कुल हिन्दुस्तानी शुर्फ़ा आपकी बदइखलाकी और फ़रजन बे सामानी से रंजीदा हैं। भाई, जो जहां रहता है वहां के आदमियों से मिलजुल कर कामयाब और नेकनाम हो सकता है, फ़ारसी का पुराना मकूला है कि:—

'बाहमी मर्दुमां बिआयद साख्त।
चें तवां कर्द मर्दुमां आयन्द॥'

अमीरहसन — मैं आपकी नसीहत का शुक्रगुज़ार हूं मगर मैं यह ऐब अपने में नहीं पाता जो आप इर्शाद फर्माते हैं।

तहसीलदार—खैर मेरी ग़लतीही

सही, अब यह फ़र्माइये कि आपकी क़र्ज़दारी का क्या अंजाम होनेवाला है, मैंने तहक़ीकतन् सुना है कि आगरे के चन्द दूकान्दारों ने अपनी अपनी डिग्रियां इजरा के लिये यहां भेज दी हैं, यहां के सौदागर भी नालिश और फ़िसाद पर आमादा हैं, तमाम शहर में आपकी कर्ज़दारी मशहूर है बल्कि हुक्काम तक इसकी इत्तला होगई है, आप सिर्फ़ तनहा हैं सौ रुपये आपके मुसारिफ़ के लिये बहुत काफ़ी थे मगर आपने ऐसे सामान बढ़ा लिये कि जिसका नतीजा बहुतही बुरा होनेवाला है।

अमीरहसन — मैंने अपने हिसाब कोई फ़ज़ूलखर्ची नहीं की, मैं ख़ुद इस फ़िक्र में हूं कि किसी तरह क़र्ज़ अदा होजाय, आप समझ सकते हैं कि एक जेण्टेलमेन के लिये सौ रुपया हर्गिज़ काफ़ी नहीं हो सकता।

तहसीलदार— मैं खूब समझता हूं मगर जब इनसान के पास उतनी वसत न हो उसे इतना खर्च करना क्या ज़रूर है।

अमीरहसन— यह अपने २ ख्यालात हैं मैं दुनियां में ज़िल्लत की हालत में नहीं रह सकता।

तहसीलदार— अगर अब भी आप फ़ज़ूलियात न करें और किफ़ायतशारी से बसर करना चाहें तो मैं वादा करताहूँ कि आपका पिछला क़र्ज़ अदा करा दूं। यह सैय्यद नज़ीरहसन का ख़त है जो आजही मेरे पास आया है।

ख़त।

जनाब चाचा साहब क़िबला व काबा, कोर्निश फ़िदवियाना — आपका आली सफ़ीना सादिर हुआ मोअज़्ज़िज़ व मुमताज़ किया भाई अमीरहसन के हालात सुन कर सख़्त सदमा हुआ, मैं उनसे किसी तरह बेख़बर नहीं, हमेशा उनकी ख़ैरियत और उनके हालात का मुन्तज़िर रहता हूं, अम्मांजान हरवक्त उन्हीं के ग़म व फ़िराक़ में रोया करती हैं, मगर ख़ुदा जाने अमीरहसन को किसने कैसी उलटी पलटी पढ़ा दी है कि वह हम लोगों से बिला वजह नाराज़ हैं, अगर मैंने कोई क़सूर किया हो तो मैं निहायत ख़ुशी से माफ़ी मांगने को तैयार हूं; जनाब क़िबला, भाई से ज़्यादा दुनियां में कोई न्यामत नहीं, अफ़सोस तक़दीर ने अब्बाजान के मरते ही मेरे प्यारे भाई

को मुझ से जुदा कर दिया, उनकी मुफ़ारक़त का सदमा तो था ही मगर उनके हालात ने और भी मग़मूम और अफ़सुर्दा कर रक्खा है, जनाब की तहरीर से यह दर्याफ़्त हुआ कि इटावे में उनपर क़र्ज़दारों का ज़ोर हो रहा है, शायद जनाब को वाक़फ़ियत नहीं, भाई अमीरहसन ने अपने हिस्से का कुल रुपया तक़सीम कर लिया अगर वह तरीक़े से चलते तो अब्बाजान का छोड़ाहुआ तरका बहुत दिन ब-आराम बसर करने को काफ़ी था मगर उनपर एकबारगी जेंटिलम्यानियत की बला ऐसी नाज़िल हुई कि कुल रुपया बर्बाद कर दिया और उस पर बे-तरह क़र्ज़ है जिसकी आपने ख़बर दी। क्या आप समझते हैं कि अमीरहसन की बदनामी मेरी बदनामी नहीं? या अब्बाजान की रूह को इससे सदमा न पहुँचता होगा? मगर क्या किया जाय मुझे यह तवक़्क़ो हर्गिज़ नहीं कि अमीरहसन अपने आदात तर्क कर के सीधी राह चलेंगे अगर आप मुझे इस अमर से मुतमैयन फ़र्माते तो मैं अब भी अपनी कुल जायदाद अपनी कुल दौलत और नीज़ ख़ुद अपने को अमीरहसन पर निसार करने को तयार हूं, उनका कुल क़र्ज़ा मैं अदा कर दूंगा आप मेरे ख़ातिर से और अपने उस मुअज़्ज़िज़ दोस्त की ख़ातिर से जो दमे वापसी तक अपनी मोहब्बत और इख़्लास का दम भरता रहा, एक मर्तबा अपने ऊपर और तकलीफ़ गवारा फ़र्माइये और भाई अमीरहसन के पास जाइये, उन्हें जिसतरह मुमकिन हो समझाने की कोशिश कीजिये मैंने बिल तहक़ीक़ सुना है कि गवर्मेंट में उनके हालात पहुँच गये हैं अगर यही हालत रही तो शायद उन्हें इस्तीफ़ा देना पड़े। या अल्लाह रहम कर और इस ख़ान्दान को ज़िल्लत और बदनामी से बचा।

फ़िदी नज़ीरहसन।

तहसीलदार — आप ने यह ख़त पढ़ा, फ़र्माइये क्या इर्शाद है?।

अमीरहसन — मैं किसी तरह नज़ीरहसन का एहसान लेना नहीं चाहता, और न मेरी हालत इतनी ख़राब है जैसा आप लोगों ने मशहूर कर रक्खा है, क़र्ज़ किस पर नहीं, बड़े २ बादशाह खुद हमारी ब्रटिश गवर्मेंन्ट क़र्ज़दार है। नोट क्या चीज़ है, जब गवर्मेंण्ट को रुपया दर्कार होता है और

खज़ाने में नहीं होता इश्तिहार के ज़रिये से प्रामेसरी नोट जारी करती है और क़र्ज़ लेती है। हुज़ूर प्रिंस आफ़ वेल्स भी मकरूज़ हैं; जनाब सच तो यह है कि मोअज़्ज़िज़ और नामवर आदमियों के लिये क़र्ज़ भी दाखिले फ़ैशन है, हां वह लोग जो महाजनी तौर से रुपया जमा करना चाहते हैं और इलावा तनख़ाह रिशवत भी लेते हैं वह शायद क़र्ज़दार न हों!।

तहसीलदार—मुझे आप की बातों पर हँसी आती है, आप रहते झोंपड़ी में हैं ख्वाब महलों का देखते हैं। कहां बादशाह आलीवक़ार और कहां आप के प्रिंस आफ़ वेल्स और कुजा प्रावेशनरी डिप्टीकलेक्टर!।

अमीरहसन — आप की निगाह में मैं ज़लील और ख्वार हूं लेकिन मेरे दोस्त मुझे ज़लील नहीं समझते। मैं एशियाटिक सुसाइटी, रायलफ़ेलो सुसाइटी, जुबलीक्लब और बहुत से मोअज़्ज़िज़ जलसों का मेम्बर हूं, सिर्फ़ चालीस रुपया माहवारी सुसाइटी और अख़बारात का चन्दा देता हूं, शायद आपको ख़बर नहीं रेलवे इन्स्टिट्यूट ने इमसाल मुझे मीरमजलिस मुन्तख़िब किया है।

तहसीलदार — हा हा हा क्यों हज़रत; भला इन चीज़ों से आपको क्या हासिल हुआ।

अमीरहसन — जब आप वाक़िफ़ ही नहीं तो फिर आपके सामने इन बातों का कहना फ़ज़ूल है।

तहसीलदार — अच्छा यह फ़र्माइये कि जिस काम के लिये मैं आया हूं उसके बारे में आप क्या कहते हैं?

अमीरहसन — कुछ नहीं, मुझे आप मुझी पर छोड़ दीजिये, मैं आप का या नज़ीरहसन का कोई एहसान लेना नहीं चाहता, यह याद रखिये कि खुदा ने मुझे इल्म और तहज़ीब की दौलत से इस क़दर मालामाल किया है कि मैं ज़रा भी रुपये की पर्वाह नहीं करता।

तहसीलदार — क़नायत बहुत उमदा चीज़ है मगर आपकी हालत के लिये मुनासिब नहीं, ख़ैर जो आप की मर्ज़ी हो, बतलाइये आप के भाई को क्या जवाब लिख दूं।

अमीरहसन — कुछ नहीं।

इतने में चपरासी ने इत्तला दी कि जेकसाहब टिकिट-कलेक्टर आये हैं।

अमीरहसन — साहब को गोल कमरे में बैठाओ, अच्छा तहसीलदार साहब रुखसत।

तहसीलदार — एक बात मुझे और कहनी है खुदा के वास्ते इन कमीने किरानियों की सोहबत तर्क कीजिये, इसमें भी कोई फ़साद उठने वाला है। मुझसे कई साहबलोगों ने शिकायत की कि आपकी सोहबत में ज़लील अङ्गरेज़ बहुत रहते हैं और इसी वजह से गाहे बगाहे जो आलीवकार साहब लोग जो आजाया करते थे उन्हों ने भी आना तर्क कर दिया।

अमीरहसन — मैं अपने दोस्तों को ज़लील नहीं समझता आप बे समझे इस तरह किसी की तौहीन न किया किजिये।

अलगर्ज़ तहसीलदार साहब रुखसत हुये और मिस्टर अमीरहसन अपने दोस्त से खुशगप में मशगूल।

छब्बीसवां बाब।

खज़ाने की कुञ्जियां।

मिस्टर मावेल कलेक्टर इटावा वाक़ई निहायत शरीफख्याल और शरीफ़-दोस्त अङ्गरेज़ थे, हिन्दुस्तानियों से उनको एक खास उलफ़त थी। अमीरहसन को जिस आव भगत से उन्हों ने लिया वह वज़ह अखीर तक क़ायम रक्खी, गो उनके कानों तक अमीरहसन की सदहा शिकायतें पहुँची, अमीरहसन ने सर्कारी काम पर कोई तवज्जह न की, थोड़े दिनों खज़ाना उनके सपुर्द था, एक दिन भी वक्त पर कचहरी न गये, फ़ौज के अफसर और डांकखाने के अफसर उनकी इस सुस्ती और देर में कचहरी आने के सख्त शाकी थे और कई मर्तबा कलेक्टर साहब को भी इस बारे में इत्तला पहुँची लेकिन उन्होंने ख्याल न किया। एक रोज़ महीने की पहली तारीख थी और क़वायद के मुताबिक़ साहब कलेक्टर को खज़ाना शुमार करना था और इत्तफ़ाक़ से कमिश्नर साहब भी आये हुये थे और वह भी खज़ाना देखनेवाले थे, कलेक्टर साहब ने एक दिन पहिले अमीरहसन को चिट्ठी लिख भेजी थी और ताकीद कर दी थी कि ठीक दस बजे खज़ाना खुल जाना चाहिये, अमीरहसन इस रोज़ रेलवे इन्स्टिट्यूट के जलसे में इस दर्जा मह्व हुये कि ग्यारह बजे तक कच-

हरी न गये। कमिश्नर और कलेक्टर दोनों वक्त पर कचहरी पहुँचे।

कलेक्टर — डिप्टी साहब आया?

बाबू — अभी नहीं आये, बारह बजे से पहिले कभी नहीं तशरीफ़ लाते।

कमिश्नर — मोहतमिम खज़ाना बारह बजे से पहिले नहीं आता! यह कैसी बात है?

कलेक्टर — मैंने इसकी शिकायत कभी नहीं सुनी।

बाबू — हुज़ूर जिस रोज़ से खज़ाना सैय्यद अमीरहसनसाहब को मिला है आज तक बारह बजे से पहिले कभी वह कचहरी नहीं आये, खज़ाने का काम बहुत पिछड़ गया है कई रोज़ से हिसाब भी नहीं जाँचा, मैं इस वास्ते सब हाल अर्ज़ करता हूं कि पीछे को मुझ पर कोई बदनामी न आये।

कलेक्टर — क्या बकते हो चुप रहो।

कमिश्नर — यह नौजवान किस तरह का आदमी है?।

कलेक्टर — मैं अमीरहसन को अच्छा समझता हूँ बेशक अभी काम से नावाकिफ़ है, तजरबा रफ्ता २ आयेगा।

कमिश्नर — (घड़ी देख कर) ग्यारह बज गये और अब तक मोहतमिम खज़ाना नदारद।

कलेक्टर — नाज़िर! इसी वक्त अभी एक चपरासी दौड़ाओ डिप्टी साहब को बुला लाये। चलिये जब तक हम आप मोहाफ़िज़ख़ाना देख लें।

कलेक्टर साहब ने कमिश्नर साहब के गुस्से को टालना चाहा।

कमिश्नर — श्रो नो जब तक मोहतमिम खज़ाना न आयेगा मैं कोई दूसरा काम न करूंगा।

कमिश्नरसाहब निहायत ज़ाब्ते के पाबन्द और मग़लूबुल्-गज़ब अफ़सर थे। अमीरहसन को अबतक उनसे मिलने का इत्तिफ़ाक न हुआ था थोड़ेही रोज़ से कमिश्नर साहब आगरे तबदील हो कर आये थे, कमिश्नर साहब यह भी नहीं जानते थे कि अमीरहसन किस वजह और किस किता के आदमी हैं।

बारह बज गया और अमीरहसन का कहीं पता नहीं, मिस्टर मार्शल सख्त रंजीदा और परेशान थे, कमि-

अर साहब अपनी तरफ गुस्से की हालत में होंठ चबा रहे थे।

कमिश्नर — माबेल ! यह क्या तमाशा है तुम्हारा मोहतमिम खज़ाना क्यों नहीं आया ?।

कलेक्टर — मैं समझता हूं कि कुछ बीमार हो गया, वर्ना कोई वजह ग़ैरहाज़री की न थी।

इतने में मिस्टर अमीरहसन दिखाई दिये। निहायत उमदा कलकत्ते का सिया हुआ सूट पहने हुये थे, अङ्गरेज़ी टोपी सिर पर रक्खे थे, अङ्गरेज़ी इत्र से इस दर्जा मुअत्तर थे कि उन के आतेही कुल कमरे में खुशबू फैल गई।

कमिश्नर — यह कौन जेण्टिलमैन है ?

कलेक्टर — यही मिस्टर अमीरहसन हैं।

कमिश्नर — अहा हा यह तो बहुत फैशनएबुल मालूम होते हैं।

अमीरहसन — गुडमार्निंग, मुझे अफसोस है कि आज थोड़ी देर हो गई।

कमिश्नर — थोड़ी नहीं पूरे दो घण्टे।

कलेक्टर — शायद कुछ आप बीमार हो गये थे।

मिस्टर माबेल ने अमीरहसन को यह इशारा दिया; अगर वह ज़रा भी समझदार होते तो उसी के मुताबिक जवाब देते लेकिन उन पर जेण्टिलमेनी की शामत इस दर्जा सवार थी कि वह खिलाफ़ वाका बात कहना भी अपनी तौहीन समझते थे।

अमीरहसन — जी नहीं आज रेलवे इंस्टिट्यूट में मिसेज़ टामी का कन्सर्ट था रेलवे की कुल लेडियां और जेण्टिलमेन शरीक थे, बड़े लुत्फ़ का जलसा था।

कमिश्नर — डेम योर कन्सर्ट, हम यह बातें नहीं सुना चाहता। आप खज़ाना खोलिये।

अमीरहसन आप खज़ाना खुलवाने को लपके जेब में हाथ डालते हैं तो कुञ्जी नदारद।

अमीरहसन — मुझे अफसोस है मैं कुञ्जी भूल आया, चपरासी अभी जाओ और कुञ्जी लाओ।

कमिश्नर — मैंने ऐसा खेल कभी नहीं देखा, सख्त बे पर्वाही की बात है, दो घंटे बाद आप आये और कुञ्जी

भी न खावे, मैं इसकी रिपोर्ट गवर्मेंट को करूँगा ।

कलेक्टर — माफ़ कीजिये ग़लती होई जाती है, जान बूझ कर बेपर्वाही नहीं हुई ।

कमिश्नर — मालूम होता है यह शख्स हमेशा खेल कूद में मसरूफ़ रह- ता है काम की तरफ़ इसे कुछ तवज्जह नहीं, कितने दिनों से यह डिप्टी कले- क्टर है ? इम्तिहान पास कर चुका ?

कलेक्टर — काम तो बहुत अच्छा करता है इम्तिहान अलबत्ता पास नहीं है दोही साल मुलाज़मत को गुज़रे हैं ।

कमिश्नर — मिस्टर अमीरहसन ! अगर इमसाल इम्तिहान न पास कर सकोगे और काम की यही हालत र- हेगी तो शायद नौकरी से इस्तीफ़ा देना हो, देखो साहब जिसतरह तुमने अंग- रेज़ी भेस बदला है वैसाही अंगरेज़ी काम भी करो सिर्फ़ रूप बदलने से कोई तुमको साहब लोग नहीं कहेगा ।

अमीरहसन — मैं आपसे इल्तिजा करता हूं कि मेरी थोड़ी ख़ता के लिये इस दर्जा ज़लील न कीजिये मैं भी जेण्टिलमैन हूं ।

कमिश्नर — क्या आप हमसे लड़- ना चाहता है ? ।

अमीरहसन— मैं लड़ना नहीं चा- हता लेकिन आप खुद मुझे मजबूर कर रहे हैं अगर मैंने कोई ख़ता की है मुझसे तहरीरी जवाब मांगिये और जो चाहे सज़ा दीजिये ज़बानी बात- चीत मुझे हर्गिज़ गवारा नहीं हो स- कती ।

कलेक्टर — अमीरहसन तुम्हें क्या हो गया है, चुप रहो, कमिश्नर साहब तुम्हारी भलाई के लिये नाराज़ हुये , अगर इसी तरह ख़ज़ाने की कुंजियां ग़फ़लत से रक्खोगे तो एक रोज़ किसी मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाओगे ।

मिस्टर मावेल ने निहायत दानिश- मन्दी से कमिश्नर को भी सम्हाला और अमीरहसन को भी रोका । थोड़ी देर में चपरासी ने वापस आकर रिपोर्ट दी कि बँगले पर भी कुंजी नहीं मिलती, उसी वक़्त आदमी दौड़ाये गये अमीर- हसन खुद भी निकले । उधर कमिश्नर- साहब को उजलत इधर कलेक्टर सा- हब को खुद तसदीकी रिपोर्ट भेजने की जल्दी और कुंजिया नदारद, वह वक़्त भी काबिल यादगार था, तमाम

अपने हँस रहे थे ।

एक — आज तो साहब बहादुर अच्छे फँसे ।

दूसरा — खुदा करे कुंजियां गुम जांय और शाम तक न मिलें ।

तीसरा—यह हम लोगों की आहों का असर है, देखिये परसों मैंने हुजूर नहीं कहा सिर्फ आप कहा था इसपर डेम फूल बना दिया; खुदा ने आज उसका बदला दिया ।

चौथा — कमिश्नरसाहब ने आज अभी डिप्टीसाहब को डेम फूल कहा ।

एक — अजी तुमने सुना नहीं हरामज़ादा सुअर का बच्चा भी कहा, कलेक्टर साहब न होते तो आज साहब बहादुर पिट गये थे ।

दूसरा — वाक़ई कलेक्टर साहब ने खूब बचाया मगर नौकरी की खैर नहीं ।

तीसरा — ज़मीन भी तो सिर पर उठा ली थी , डिप्टी भी देखे जन्ट भी देखे असिस्टेन्ट भी देखे मगर ऐसा ग़रूर इतनी बदज़बानी न देखी न सुनी ।

एक — क्यों जी कुंजियां कहां छोड़ आये ?

दूसरा — बात यह है कि हरवक़्त ग़रूर के नशे में चूर रहते हैं उनको अपने सिर पैरही की खबर नहीं कुंजियों की क्या खबर रखते ! ।

तीसरा — मैं तो दुआ कर रहा हूँ परमेश्वर करे कुंजिया ऐसी ग़ायब हों जैसे गधे के सिर से सींग ।

चौथा — आमीन् ।

कमिश्नर बैठे २ थक गये , उनका गुस्सा मिनिट २ पर बढ़ रहा था , मिस्टर मावेल भी परेशान हो रहे थे और कुंजियों का पता न था ।

कमिश्नर — आखिर यह कुंजियां क्या हुईं मिलेंगी या नहीं ? ।

नाज़िर — खुदावन्दन्यामत कोई जगह ऐसी न थी जहां तलाश न हुई हो, बांसों में कूआ और कुंओं में बांस दिलवाये गये कुंजियां न मिलनी थी न मिलीं ।

कलेक्टर—मालूम होताहै कि रास्ते में गिर गईं अगर इसका इतमीनान हो जाय कि कुंजियां नहीं मिल सकतीं तो दूसरा इन्तज़ाम किया जाय ।

कमिश्नर — मोहतमिम खज़ाना कहा है ? ।

कलेक्टर — वह भी कुञ्जियों की तलाश में गये हैं ।

कमिश्नर— मैंने ऐसा तमाशा उम्र भर नहीं देखा, चपरासी भेज कर अमीरहसन को बुलवाओ।

अमीरहसन बुलाये गये ।

कमिश्नर — वेल मिस्टर अमीरहसन अब आप को क्या उमेद है, कुंजियां मिलेंगी या नहीं ?

अमीरहसन — आप ख्याल फ़र्मा सकते हैं कि मुझे इस वाक़या का किस कदर अफ़सोस है लेकिन यह इत्तिफ़ाक़िया बात थी।

कमिश्नर — आप को याद है आपने कुंजियां कहां छोड़ीं।

अमीरहसन — मैं हमेशा निहायत एहतियात से अपनी जेब में कुंजियां रक्खा करता था मालूम नहीं कहां गिर गईं।

नाज़िर — हुज़ूर कल गये कहां कहां ?।

अमीरहसन—सिवा बँगले के और हम कहीं नहीं गये।

नाज़िर — सौदागरों की दूकान पर हुज़ूर ज़रूरही गये होंगे या रेल वाले साहब लोगों के बँगले पर।

अमीरहसन—तुम क्यों बीचमें बोलता है !।

कलेक्टर — चुपरहो नाज़िर जाओ तलाश करो।

नाज़िर— खुदावन्द जहां तक ताकत-बशरी थी कोई दक़ीक़ा तलाश का बाक़ी नहीं रहा अब उनका मिलना मुहाल है।

कुंजियों के खो जाने की ख़बर थोड़ी देर में ज़बानज़द ख़ास व आम होगई तमाम शहर में हर जगह इसी का तज़किरा था और आम तौर पर सब लोग इस लतीफ़े से खुश थे। तहसीलदार मुकरमहुसैन ने भी यह वाक़ा सुना उन्हें अपने दोस्त के ख्याल से अमीरहसन के साथ बावजूद उनकी बेएतनाइयों के दिली हमदर्दी थी।

तहसीलदार साहब यह खबर सुनतेही कचहरी से उठ खड़े हुये और खुद तलाश को निकले। पारसी सौदागरों की दूकान में रेलवे स्टेशन और मिस्टर जेक टिकिट कलेक्टर का बंगला ग़र्ज़ जहां २ अमीरहसन की आमद रफ्त थी तहसीलदारसाहब खुद गये और तलाश किया मगर कहीं पता न मिला— तहसीलदारसाहब सख्त गुस्से में थे कि लौंडे की ग़फ़लत ने आखिरकार यह दिन दिखलाया। उनको कमिश्न-

र साहब की बदमिज़ाजी का पूरा हाल मालूम था इससे और भी खौफ था थोड़ी दूर चले थे कि मिस्टर टामी के बँगले से एकलौंडा दौड़ता हुआआया।

लौंडा — तहसीलदार साहब मेमसाहब बुलाती हैं।

तहसीलदार — अबे कुछ कुंजियों का पता है ?

लौंडा — हां हजूर मिलगईं।

तहसीदार साहब दौड़ते हुये बँगले के अन्दर गये —

मिसेज़ टामी ने खुशी २ कुंजियां दीं और कहा कि कल क्रिकेट में मिस्टर अमीरहसन कुंजिया भूल गये थे मैं समझी थी कि जब तक मिस्टर अमीरहसन फिर न आयें कुंजियां न दूंगी। मगर अब मालूम हुआ कि उनके बग़ैर हर्ज है आप कुंजियां लेजाइये और यह चिट्ठी अमीरहसन को दे दीजिये।

चिट्ठी।

माई डियर अमीरहसन — कल लान टेनिस में आप कुंजियां भूल गये थे मैं सोचती थी कि जब तक आप से इस फ़रामोशकारी का कुछ जुर्माना न लूं कुंजियां वापस न दूंगी मगर अब मालूम हुआ कि उनके बग़ैर हर्ज हो रहा है इसवास्ते कुंजियां भेजती हूं मेहरबानी कर के रसीद भेज दीजिये और आज शाम को ज़रूर आइये —

आपकी सच्ची दोस्त।

मेरे टामी।

तहसीलदार साहब घोड़ा दौड़ाते कचहरी आये और वह चिट्ठी मै कुंजियों के अमीरहसन के हाथ में दे दी।

कमिश्नर — वेल तहसीलदार कुंजी कहां पाया ?।

तहसीलदार — हुज़ूर एक घण्टा से ख़राब व ख़स्ता था बारे खुदा का शुक्र है कुंजियां मिलगईं।

अमीरहसन — (मुस्किरा कर) मेरे दोस्त मिसेज़ टामी ने कुंजियां रख छोड़ी थीं यह देखिय उनकी चिट्ठी है।

कमिश्नर — (नाराज़ हो कर) हम इस चिट्ठी को नहीं पढ़ना चाहता हमको नहीं मालूम था कि तुम ऐसी ख़राब सोहबत में रहा करता है। अलगर्ज़ ख़ज़ाना खुला और उस रोज़ की मुसीबत का ख़ातमा हुआ; गो साहब कमिश्नर बहुत नाराज़ थे मगर कलेक्टर साहब की सिफ़ारिश से उस रोज़ मिस्टर अमीरहसन बच गये।

सत्ताईसवां बाब।

नेकबख्त बीबी।

मिस्टर माबेल कुंजियों के किस्से के बाद से अमीरहसन पर किसी कदर खफ़ा थे, यह खफ़गी अफ़सराना न थी बल्कि बुजुर्गाना; जो कुछ हालात अमीरहसन के मिस्टर माबेल सुना करते थे वह सब अब पायेसदाकत को पहुंच चले।

मिस्टर बालों ने अमरहसन की सोहबत में छोटे अङ्गरेजों के घुसे रहने की जो शिकायत की थी वह मिसेज़ टामी के खत से और भी साबित हो गई। उन्हों ने कमिश्नर साहब के जातेही अमीरहसन को बुलवा भेजा।

कलेक्टर — मिस्टर अमीरहसन मुझे अफ़सोस है कि तुम मुझको बदनाम करनेवाले हो।

अमीरहसन — मैंने आज तक कोई काम ऐसा नहीं किया जो मेरे या आप के बदनामी का बाइस हो।

कलेक्टर — तुम्हारी निसबत आम तौर पर मशहूर है कि तुम रेलवे गार्ड और एञ्जिनड्राबरों की सोहबत में रहा करते हो जब तुम ऐसे ज़लील दर्जे के अंगरेजों से राह व रस्म रक्खोगे तो कोई मोअज्ज़िज़ अंगरेज़ तुमको अपनी सोहबत में फिर नहीं आने देगा।

अमीरहसन — बेशक मैं चन्द रेलवे जेन्टिलमैनों से ज़रूर मिलता हूं लेकिन मैंभी इन्सान हूं दिल रखता हूं तनहा ज़िन्दगी बसर करना गैरमुमकिन है—आली दर्जे के सुसाइटीवाले सिवा आप के मुझे कोई पूछता नहीं, क्लब में मुझे कोई शरीक करता नहीं हिन्दुस्तानियों में कोई मेरे मिलने काबिल नहीं फिर मैं क्या करता ?।

कलेक्टर — यह भी आप की निसबत एक आम शिकायत है कि आप हिन्दुस्तानियों को ज़लील समझते हैं सबजज साहब और तहसीलदारसाहब और डिप्टी शरीफउल्ला हमसे कई मर्तबा इस बातकी शिकायत कर चुकेहैं।

अमीरहसन— बेशक मैं उन लोगों से नहीं मिलता, उनके तर्ज़ माशरत को मैं पसन्द नहीं करता इसकी शिकायत फ़जूल है।

कलेक्टर — मुझे निज के झगड़ों से कुछ मतलब नहीं आपसे सिर्फ इतना कहना है कि आप अपना काम अच्छा कीजिये और इमतिहान पास कर

ने की कोशिश कीजिये।

अमीरहसन — इम्तिहान का मामला इत्तफ़ाकी हुआ करता है स-दहा लायक आदमियों को देखा है कि इम्तिहान में फ़ेल हो जाते हैं।

कलेक्टर — मुझे आपकी ल्याकत में कोई कलाम नहीं लेकिन मालूम यह होता है कि आप कानून पढ़ने में जी नहीं लगाते। कमिश्नर साहब हम-से साफ़ २ कह गया है कि अगर इस मर्तबा अमीरहसन इम्तिहान न पास होंगे तो शायद नौकरी से अलहिदा हो जायें, मैं इसी वजह से आप को समझाता हूँ अगर आपके पास काम ज़्यादा हो तो मैं आपको हलका कर सकता हूँ।

अमीरहसन — जी नहीं मेरे पास काम ज़्यादा नहीं है इससे आप इत-मीनान रखिये मैं अब की इम्तिहान ज़रूर पास कर लूंगा।

कलेक्टर — देखिये आपके फ़ेल होने से किस कद्र बदनामी का बात है आपके साथी सब लोग इम्तिहान में पास हो गये और दो २ सौ रुपये तनख़्वाह पाने लगे।

अमीरहसन — आपको अब दो-बारा मुझसे ताकीद करने की एह-तियाज नहीं, मैं इम्तिहान के लिये पूरी कोशिश करूंगा।

कलेक्टर — मुझे एक बात आपसे और कहनी है माफ़ कीजिये, बहुतही बुरी किस्म की वह बात है लेकिन ब-हैसियत आप के अफ़सर और नीज़ ब-हैसियत आपके मुरब्बी होने के मुझपर फ़र्ज़ है कि आपको समझाऊँ, मैं सुन-ता हूँ कि आप ब कसरत मक़रूज़ हो गये हैं, यह बात भी बहुत ना मु-नासिब है!

अमीरहसन — मैं इस बारे में भी आप से ज़्यादा कहना नहीं चाहता हत्तलइम्कान कोशिश करूंगा कि क़र्ज़ भी अदा हो जाय मगर आप ख़्याल फ़र्माइये कि सौ रुपया मेरी बसर औकात के लिये हर्गिज़ काफ़ी नहीं, रिश्वत मैं लेता नहीं, भाई मुझे कुछ देते नहीं।

कलेक्टर — बेशक आपकी आम-दनी बहुत कम है मैंने आपको निसबत रिश्वतसितानी की शिकायत कभी नहीं सुनी और इसी बात से मैं बहुत ख़ुश हूँ आप कोई बन्दोबस्त अदाये-क़र्ज़ का ज़रूर कर दीजिये।

अमीरहसन — बहुत बेहतर।

मिस्टर अमीरहसन वापस आ कर आराम कुर्सी पर लेट गये, एक चुरुट खतम किया दूसरा खतम किया तीसरा खतम किया इसी तरह मुतवातिर पांच छः चुरुट पिये और गौर करते रहे कि क्यों कर कर्ज़ अदा हो सकता है। उन्हें यह भी नहीं मालूम था कि उन पर कितना कर्ज़ है। जब कोई तर्कीब ज़ेहन में न आई तब अपने मुसाहब हिदायतरसूल को तलब किया।

हिदायतरसूल — खुदावन्द नेयामत ने इस निमकख्वार को क्यों याद फर्माया ?।

अमीरहसन — भई हिदायतरसूल! मैं इस वक्त सख्त परेशान हूं मेरे दुश्मनों ने कलेक्टर साहब को भी मुझसे बरगश्ता कर दिया।

हिदायतरसूल — है! यह ग़ज़ब खुदा! हुजूर यह फिरंगी किसी के नहीं होते सच यह है कि तोताचश्म इन्हीं की कौम है मगर हुज़ूर का कलेक्टर साहब करही क्या सकते हैं, जिस तरह मलका मोअज़्ज़मा के वह नौकर वैसेही हुज़ूर नौकर।

अमीरहसन — अजी नौकरी का मामला ज़ेर बहस नहीं है, बात यह है कि साहब कलेक्टर चाहते हैं कि मेरा कुल कर्ज़ अदा हो जाय।

हिदायतरसूल — बस हुज़ूर को इसी बात के लिये इतना तरद्दुद था यह तो कोई बड़ी बात नहीं; खुदा नख्वास्ता हुजूर पर कोई दो चार करोड़ तो कर्ज़ है नहीं बीस पचीस हज़ार रुपया हथेली का मैल है।

अमीरहसन — मगर बीस पचीस हज़ार रुपया भी बहुत होता है मेरे पास तो बीस पचीस सौ भी नहीं।

हिदायतरसूल — हुज़ूर अगर इर्शाद फर्मावें तो आजही से हुन बरसने लगे, इसीवक्त सिरिश्तेदार को बुलाकर कह दूं, अगर फी मुकद्दमा सौ २ रुपया भी हुज़ूर लेना शुरू कर दें तो दो चार महीने में कुल तरद्दुद रफ़ा हो सकते हैं, सिरिश्तेदार आदमी माकूल है राज़ भी अफशां न होगा।

अमीरहसन — मगर मैं रिश्वत लेना नहीं चाहता, यह निहायत बुरी बात है।

हिदायतरसूल — खुदावन्द मेरी मोटी समझ तो कर्ज़ रिश्वत से बदरजहा बुरा! रिश्वत देने वाला कानून के

खौफ से इकरार नहीं कर सकता बल्कि जहां तक मुमकिन होगा पोशीदा करने की कोशिश करेगा। कर्ज़ख़ाह रुपया देने के बादही डङ्के की चोट अलीऊसउलअशहाद चिल्लाता फिरता है कि फलां साहब मेरे कृर्ज़दार हैं। महाजन का फ़ायदा इसी में है कि कर्ज़ बख़ूबी मैशहूर हो और हर शख्स उसका वाकिफ़कार रहे ताकी मुकद्दमे के वक्त गवाह ढूंढ़ने में दिक्कत न हो।

अमीरहसन — कृर्ज़ कोई जुर्म नहीं और रिश्वत जुर्म है।

हिदायतरसूल — हुज़ूर गवर्मेण्ट के सर्क्यूलर जदीद ने कर्ज़ को रिश्वत से भी बदतर कर दिया, रिश्वत में जब जुर्म साबित हो उस वक्त सज़ा हो सकती है और रिश्वत का साबित होना निहायत दुश्वार है। कर्ज़ जहां मालूम हुआ फौरन् गवर्मेण्ट बर्ख़ास्त कर देती है और कर्ज़ का साबित होना निहायत आसान है।

अमीरहसन — हिदायतरसूल! मैं किसी तरह अपने को इस कद्र ज़लील न करूंगा कि रिश्वत लेने पर आमादा होऊँ।

हिदायतरसूल — हुज़ूर रिश्वत लेने में उसी वक्त ख़तरा है जब हाकिम अपने से नाराज़ हो या मुफ़सिद और मुख़बिरपसन्द हो हमारे कलेक्टरसाहब ख़ुदा के फ़ज़ल से हुज़ूर पर निहायत मेहर्बान हैं और किसी तरह उनसे हुज़ूर को नुकसान नहीं पहुंच सकता।

अमीरहसन — मुझे रिश्वत की तर्कीब न दो कोई और तरीका बतलाओ जिससे कर्ज़ अदा हो जाय।

हिदायतरसूल — एक दूसरी तर्कीब भी अर्ज़ करता हूँ ख़ुदा के फज़ल से हुज़ूर की बेगमसाहबा के पास बहुत कीमती ज़ेवर हैं और बीबी निहायत नेकमिजाज और संजीदा हुज़ूर ने पाई है; अगर आप एक रोज़ के लिये घर चले जाइये और बीबी को सब्ज़ बाग दिखाकर कुल ज़ेवर माँग लाइये तो यह सब तकलीफें रफ़ा हो सकती हैं।

अमीरहसन — लेकिन वह तो मुझसे नाराज़ है मैंने बरसों से उसकी सूरत नहीं देखी, क्योंकर वह मुझे अपना ज़ेवर देने पर आमादा हो जायगी?।

हिदायतरसूल — औरतें नाकिसउल् अक्ल हुआ करती हैं उनका भांबे

में जाना क्या मुशकिल है, कल एतवार है आजही शब को हुज़ूर तशरीफ़ ले चलें मैंभी साथ छूंगा, कुल मामलात दुरुस्त हो जायँगे।

अमीरहसन — मगर मैं अपने भाई से न मिलूंगा।

हिदायतरसूल — खैर यह भी सही खुदा चाहेगा तो उनसे मिलने की ज़रूरत भी न पड़ेगी।

उसी वक्त अमीरहसन ने आगरे जाने की तैयारी करदी वह बार २ सोचते थे कि आगरे में जाकर मिसेज़ हील से न मिलना निहायत नामुनासिब है, मगर हिदायतरसूल की नसीहत ने इतना असर किया कि इस कस्द से बाज़ रहे।

मिस्टर अमीरहसन और हिदायतरसूल दोनों आगरे आये स्टेशन के वेटिंग रूम में अमीरहसन को छोड़ कर हिदायतरसूल शहर आया सैयदनज़ीरहसन साहब से मुलाकात की और अर्ज़ किया कि सैयद अमीरहसन साहब तशरीफ़ लाये हैं अपनी मां से और बेगमसाहबा से मिलना चाहते हैं।

नज़ीरहसन — क्यों भई किधर से चांद निकला?।

हिदायतरसूल — हुज़ूर ग़ालिबन् समझे होंगे कि अमीरहसन की तबाही व बर्बादी का हिदायतरसूल ही कम्बख्त बाइस हुआ लेकिन यह ख्याल महज़ ग़लत है, मैं हमेश: से हुज़ूर का निमकख्वार हूँ बड़ी मुश्किलों से इस बात पर राज़ी किया है कि आज मियां बीबी से मेल हो जाय, खुदा चाहेगा तो दोही चार रोज़ में सैयद अमीरहसन साहब हुज़ूर के और अपनी मां और बीबी के मुतीय फर्मा हो जायँगे।

नज़ीरहसन — भई यह बात सच है तो बड़ी खुशी का मौका है, अमीरहसन की बदनामी ऐन हमारी बदनामी है।

हिदायतरसूल — हुज़ूर घर में जाकर सब इन्तज़ाम कर दें मैं अभी जाकर अमीरहसन को बुला लाता हूँ।

नज़ीरहसन — क्या अमीरहसन मुझसे न मिलेंगे मैंने उनकी कोई खता नहीं की उनके दीदार के लिये मेरी आंखें तर्स रही हैं, दिल तड़प रहा है, वह भाई जो पेट में भी नौ महीने साथ रहा हो उसकी जुदाई क्योंकर गवारा हो सकती है।

हिदायतरसूल — हुज़ूर आज

ख़ामोश रहें घर में जाने दें जो पर्दा हिजाब है वह उठ जाय फिर हुज़ूर और वह एक हैं क्या कोई ग़ैर हैं।

नज़ीरहसन— ख़ैर अगर यही म र्ज़ी है वही सही।

नज़ीरहसन ने घर में जाकर अपनी मां से अमीरहसन की आमद की ख़ुश ख़बरी सुनाई बुड्ढी बेगम साहबा इस दर्जा ख़ुश हुईं कि उनकी खोई हुई ताक़त चन्द मिनिट के वास्ते वापस आ गई, घर भर में एक धूम मच गई।

औरतें लड़के लड़कियां सभी ख़ुशी और ख़ुर्रमी को गीत गाती थीं बक़ौल क़द्र।

दो साल के बाद मैं वतन में आ-या। टूटा हुआ फूल फिर चमन में आया॥ ढलका हुआ दुर यह फिर अदन में आया। निकला हुआ दांत फिर दहन में आया॥

नज़ीरहसन भी अपने भाई के दफ़तन वापसी पर बहुत शिगुफ़्ता और ख़ुश थे उनका ख्याल यह था कि शायद तहसीलदार इटावा के कोशिशों ने यह दिन दिखलाया। बहरहाल वह बजूहद मसरूर और ख़ुदा के शुक्रगु-ज़ार थे, थोड़ी देर में अमीरहसन आ-ये और आतेही मां के पास चले गये बड़ी बेगमसाहबा ने गले लगाया और बेअख़्तियार होकर रोने लगीं अमीर-हसन भी उस वक़्त आबदीदा और चश्मपुर्नम हो गये।

मां — बेटा तुमने हमें बहुत सताया अब इस बुढ़ापे में रंज न देना, सबजां-खानम देखो अल्ला पीर मना कर आज भैया आये है दस रुपये का ग़ल्ला अभी ख़ैरात करा दो।

अमीरहसन — अम्मां इन वाहि-यात बातों से क्या मतलब ?।

मां—बेटा तुम नहीं जानते ख़ुदा जाने कौन २ मिन्नतें मैंने मानीं, कहां कहां नाक रगड़ी जब ख़ालिक बेन्या-ज़ ने तुम्हारा दिल पसीजा।

इतने में नज़ीरहसन भी आगये —

अमीरहसन गो अपने भाई से मि-लना न चाहते थे मगर उस वक़्त ऐसे दब सेट में पड़े कि मिलते ही बना दो नों भाई ख़ुशजोश व ख़रोश से बग़लगीर हुये सिर्फ फ़र्क़ इतना था कि नज़ीरहस-नका जौक़ शौक़ असली था और हमारे मिस्टर अमीरहसन का मजबूरन, बहर हाल दोनों भाईयों ने थोड़ी देरकी लि-ये सुलह कर ली साथ खाना खाया।

नज़ीरहसन — क्यों अमीरहसन तुम्हारे लिये छुरी कांटा मँगवाऊ गो मुझे शौक नहीं मगर तुम्हारे लिये एक आध जोड़ मँगवा लिया है !

मां — नहीं बेटा छुरी कांटा क्या होगा, खुदाने हाथ किस लिये दिये हैं जो छुरी कांटे से आदमी खाना खाय ! यह तो फिरंगियोंके लिये ज़ेबा है, वह कभी नाखून नहीं कटवाते इसलिये उनके नाखून में ज़हर होता है हाथ से खाना खांय तो मर जांय ।

इसबात पर दोनों भाईयों ने खूब कहकहा लगाया । तमामशहर में अमीरहसन के आतेही मशहूर हो गया कि दोनों भाईयों में सुलह होगई । रंडिया भांड़ मिरासी सब तैयार बैठे थे कि सुबह को इनाम मांगने जायगे, नज़ीरहसन भी इस बात पर आमादा थे कि अपने भाई को वापसी का धूम धाम से जलसा करें, दस ग्यारह बजे रात तक दोनों भाई अपनी मा के पास बैठे रहे, नज़ीरहसन ने पुरानी बातों का कोई तज़किरा नहीं किया और न अमीरहसन ने कोई ज़िक्र छेड़ा । इस दर्मियान में नज़ीरहसन की बीबी ने अमीरहसन की बीबी को खूब ज़ेवरात से आरास्ता व पैरास्ता करके गोशमहल में भेजा और हमारे मिस्टर अमीरहसन भी सोने के लिये भेजे गये, यह सब बातें अमीरहसन को सख्त नागवार थीं मगर हिदायत रसूल ने ऐसी पट्टी पढ़ा दी थी कि अमीरहसन को सब कुछ करतेही बन पड़ा ।

अमीरहसन ने अपनी बीबी से बहुतही उल्फत और तपाक से बातें शुरू कीं ।

अमीरहसन — प्यारी तुम समझती होगी कि हम तुम न मिलेंगे ।

बीबी — हां कयामत के पहिले तो मुझे मिलने की उमेद बाक़ी नहीं रही थी ।

अमीरहसन — इन्सान को अपनी ज़िन्दगी में कभी न कभी ऐसे वाक़ात पेश आजातेहैं वाक़ई यह दिन बहुतही खराब थे मगर खुदा के फ़ज़ल से अब वह ज़माना गुज़र गया हम तुम अब एक हैं और खुदा चाहेगा तो कयामत तक जुदा न होंगे ।

बीबी — क्या तुमने नौकरी छोड़ दी, अब यहीं रहोगे ? ।

अमीरहसन— नहीं नौकरी बहुत